Daily
# THE PHOTON NEWS
सच के हक में...
द फोटोन न्यूज Published from Ranchi
Ranchi ● Thursday, 28 December 2023 ● Year : 01 ● Issue : 337 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : 3 ● www.thephotonnews.com
E-Paper : epaper.thephotonnews.com

## सुविचार

निरोगी रहना, किसी का कर्जदार न होना, अच्छे लोगों से मेल रखना, अपनी वृत्ति से जीविका चलाना और निर्भय होकर रहना- ये मनुष्य के सुख हैं।

सारा अली खान लंदन में मां-पापा के साथ...

**SHARE**

| | | |
|---|---|---|
| सेंसेक्स | : | 72,038.43 |
| निफ्टी | : | 21,654.75 |

**SARAFA**

| | | |
|---|---|---|
| सोना | : | 6,000 |
| चांदी | : | 80.07 |

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

**BRIEF NEWS**

### हाईकोर्ट के एक्टिंग सीजे होंगे जस्टिस एस चंद्रशेखर

**RANCHI :** झारखंड हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्रा के रिटायरमेंट के बाद हाईकोर्ट के सीनियर जस्टिस एस चंद्रशेखर को चीफ जस्टिस के कार्यालय का दायित्व सौंपा गया है। चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्रा 28 दिसंबर को रिटायर हो रहे हैं। जारी आदेश में कहा गया है कि राष्ट्रपति की ओर से झारखंड हाई कोर्ट के जस्टिस एस चंद्रशेखर को हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस कार्यालय की ड्यूटी के निर्वहन के लिए नियुक्त किया गया है, जो 29 दिसंबर से प्रभावी होगा। यह आदेश मिनिस्ट्री आफ लॉ एंड जस्टिस, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया के डिप्टी सेक्रेटरी नारायण प्रसाद की ओर से जारी किया गया है।

### रांची में ईंट-पत्थर से मारकर महिला की हत्या

**RANCHI :** रांची के डोरंडा थाना क्षेत्र अंतर्गत घाघरा में एक महिला की हत्या कर दी गई। घटना की सूचना मिलने के बाद बुधवार को डोरंडा थाना की पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए रिम्स भेज दिया। पुलिस के अनुसार मृत महिला का नाम सुकरो उरांइन है। थाना प्रभारी ने बताया कि प्रथम दृष्टया मामला हत्या का प्रतीत होता है। ईंट-पत्थर से मारकर महिला की हत्या की गई है। फिलहाल वारदात की जांच-पड़ताल की जा रही है।

### बिहार में गंगा नदी पर बनेगा 6 लेन केबल ब्रिज

**NEW DELHI :** केंद्र सरकार ने बुधवार को केंद्रीय कैबिनेट की बैठक में कई अहम फैसले लिए। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने बताया कि बिहार में दीघा से सोनपुर जिले के बीच गंगा नदी पर 6 लेन केबल ब्रिज बनाने का निर्णय लिया गया है। 4.56 किमी लंबा यह पुल 42 महीने में बनकर तैयार होगा। इसे बनाने में 3064 करोड़ रुपए खर्च होंगे। बड़ी बात ये है कि पुल के नीचे से बड़े जहाज भी आसानी से गुजर सकेंगे, जिससे देश में अंतर्देशीय जल परिवहन को मदद मिलेगी। इसके अलावा बैठक में सड़क और परिवहन मंत्रालय से जुड़े निर्णय लिए गए हैं, जो त्रिपुरा और असम के लिए अहम हैं।

### कोहरे की चादर में लिपटा उत्तर भारत

**NEW DELHI :** भीषण ठंड के साथ उत्तर भारत में कोहरे का कहर भी जारी है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली समेत कई राज्यों में सुबह से ही घना कोहरा छाने लगा है। बुधवार को भी यही हाल रहा। सड़कों पर विजिबिलिटी ना के बराबर दिखी। कोहरे की वजह से ट्रेन देरी से खुल रहे है, फ्लाइट टेक-ऑफ करने में देरी कर रही है। उत्तर प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश समेत कई राज्यों में घने कोहरे देखने को मिल रहे है।

## खड़ी हाईवा में दूसरी हाईवा ने मारी टक्कर, 3 की मौत

### जमशेदपुर में एनएच-18 फोरलेन पर हादसा

- हाईवे पर फंसे चालक को कड़ी मशक्कत के बाद निकाला गया बाहर
- उपचालक गंभीर रूप से घायल

**PHOTON NEWS JAMSHEDPUR :** जिले के घाटशिला थाना के मनोहर कॉलोनी के पास भीषण सड़क हादसा हुआ है। इस हादसे में तीन लोगों की मौत हो गयी है। घटना घाटशिला थाना क्षेत्र के हाइवे 18 पर अनुमंडल कार्यालय के पास घटी है। घटना देर रात करीब दो बजे की है। हाईवा का एक उपचालक गंभीर रूप से घायल है। बताया जाता है कि मनोहर कॉलोनी के पास एनएच-18 फोरलेन पर बहरागोड़ा की ओर से आ रहे बालू लदे हाईवा ने पीछे से एक स्थिर हाईवा को टक्कर मार दी, जिसमें तीन लोगों की मौत हो गई जबकि एक उपचालक गंभीर रूप से घायल हो गया। लोगों की मदद से मृतकों और एक घायल को अनुमंडलीय अस्पताल घाटशिला पहुंचाया। टक्कर के बाद दूसरे हाईवे पर फंसे चालक को कड़ी मशक्कत के बाद बाहर निकाला गया।

## हेमंत के खिलाफ दायर PIL खारिज

### झारखंड हाईकोर्ट ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले को बनाया आधार

**सीएम को बड़ी राहत : माइनिंग, जमीन आवंटन सहित कई मामलों को जोड़कर दायर थी याचिका**

- आरटीआई कार्यकर्ता सुनील महतो ने दायर की थी याचिका
- कहा था, खान विभाग के मंत्री रहते हुए हेमंत ने अनगड़ा में 88 डिसमिल जमीन पर माइनिंग लीज का कराया था आवंटन

**SPECIAL REPORTER RANCHI :** झारखंड हाईकोर्ट ने सीएम हेमंत सोरेन के खिलाफ दायर उस पीआईएल को बुधवार को खारिज कर दिया है, जिसमें यह कहा गया था कि खान मंत्री रहते हेमंत सोरेन ने अपनी पत्नी कल्पना सोरेन, उनकी बहन सरला मुर्मू के नाम औद्योगिक क्षेत्र में जमीन आवंटित थी और अनगड़ा में माइनिंग लीज आवंटित किया था। झारखंड हाईकोर्ट ने चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्रा की अध्यक्षता वाली पीठ ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए सुनवाई करते हुए याचिका को खारिज कर दिया। सरकार की ओर से महाधिवक्ता राजीव रंजन और अधिवक्ता पियूष चित्रेश ने पैरवी की। अधिवक्ता पियूष चित्रेश ने बताया कि जिस याचिका को अदालत ने खारिज किया है, उसके पीछे सुप्रीम कोर्ट का आदेश आधार बना है। शिवशंकर शर्मा बनाम राज्य सरकार मामले में सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाते हुए याचिका को खारिज किया था। इसी याचिका के आधार पर हाईकोर्ट ने अपना फैसला सुनाया।

## पीएम बोले- मोदी की गारंटी वाली गाड़ी जहां भी जा रही लोगों का विश्वास बढ़ा रही

विकसित भारत संकल्प यात्रा के लाभार्थियों से संवाद करते पीएम।

- विकसित भारत संकल्प यात्रा के लाभुकों को पीएम ने किया संबोधित
- बोले- एक करोड़ लोगों को दिए जा चुके हैं आयुष्मान कार्ड

**AGENCY NEW DELHI :** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को विकसित भारत संकल्प यात्रा के लाभुकों को वर्चुअली संबोधित किया। प्रधानमंत्री ने कहा- विकसित भारत संकल्प यात्रा के अद्भुत परिणाम आ रहे हैं। आज देश के करोड़ों लाभार्थी सरकारी योजनाओं को आगे बढ़ाने का माध्यम बन रहे हैं। 1 करोड़ लोगों को आयुष्मान कार्ड दिए जा चुके हैं। 11 करोड़ ग्रामीण परिवारों को नल से पानी का कनेक्शन उपलब्ध कराया गया है। उज्ज्वला गैस कनेक्शन के लिए 4.5 लाख नए लाभार्थियों ने आवेदन किया है। मोदी की गारंटी वाली गाड़ी जहां जा रही, लोगों का विश्वास बढ़ा रही है। कार्यक्रम में भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा समेत कई मंत्री भी शामिल हुए। पीएम ने कहा- ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने गांवों में महिलाओं को स्वरोजगार देने के लिए भारत सरकार बहुत बड़ा अभियान चला रही है। बीते वर्षों में देश में लगभग 10 करोड़ बहन-बेटियां और दीदियां स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हैं। लोगों को नई ताकत मिल रही है और वे अपने लिए बेहतर भविष्य बनाने के लिए मेहनत कर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में कहा है कि पिछले 4 सालों में 11 करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को नल से पानी का कनेक्शन उपलब्ध कराया गया है, लेकिन कहानी यहां खत्म नहीं होनी चाहिए।

### पहली बार देशव्यापी हेल्थ हो रहा चेकअप

प्रधानमंत्री ने कहा कि मोदी की गारंटी वाली गाड़ी जहां भी जा रही है, वहां लोगों का विश्वास बढ़ा रही है। विकसित भारत संकल्प यात्रा शुरू होने के बाद उज्ज्वला गैस कनेक्शन के लिए 4.5 लाख नए लाभार्थियों ने आवेदन किया है। मौके पर ही 1 करोड़ आयुष्मान कार्ड दिए जा चुके हैं। मोदी ने कहा- पहली बार देशव्यापी हेल्थ चेकअप हो रहा है। आयुष्मान भारत कार्ड के साथ-साथ आयुष्मान भारत हेल्थ अकाउंट (एबीएचए) कार्ड भी तेजी से बनाए जा रहे हैं। विकसित भारत संकल्प यात्रा को शुरू हुए अभी 50 दिन भी नहीं हुए। लेकिन ये यात्रा अबतक लाखों गांवों में पहुंच चुकी है।

### लोकल सामान खरीदें और प्रचार-प्रसार करें

पीएम ने कहा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान हमें वोकल फॉर लोकल का संदेश गांव-गांव, गली-गली तक पहुंचाना है। भारत के युवाओं, किसानों का श्रम और भारत की मिट्टी की महक जिसमें हो, ऐसे सामान को खरीदें और उसका प्रचार-प्रसार करें। प्रधानमंत्री ने कहा है कि विकसित भारत के संकल्प से जुड़ने और देशवासियों को जोड़ने का ये अभियान लगातार विस्तार ले रहा है। दूर-दूर के गांवों तक पहुंच रहा है। महिला, युवा या फिर गांव के वरिष्ठ नागरिक सब आज मोदी की गारंटी की गाड़ी का इंतजार करते हैं और इस गाड़ी के कार्यक्रम का इंतजाम भी करते हैं।

# भूमि को लेकर पूरे झारखंड में त्रुटियां, करेंगे समाधान : हेमंत

### बाले- दिल्ली से नहीं बल्कि गांव से चल रही है हमारी सरकार

**सरकार आपके द्वार**

लातेहार में आयोजित सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में लाभुकों के बीच परिसंपत्तियों का वितरण करते हेमंत सोरेन।

**PHOTON NEWS LATEHAR :** मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने बुधवार को लातेहार में कहा कि भूमि को लेकर त्रुटियां पूरे राज्य में हैं। आपकी सरकार ने वर्षों से संघर्ष कर रहे नेतरहाट के लोगों की भूमि वापस करायी है। नेतरहाट फील्ड फायरिंग रेंज की अधिसूचना रद्द की गयी। राज्य में कई किसानों की भूमि वापस हुई है। भूमि की त्रुटियों को सुधारना जरूरी है। विश्वास रखें आनेवाले समय में इसका समाधान होगा। मुख्यमंत्री बुधवार को लातेहार प्रखंड के कुंदरी गांव में आयोजित आपकी योजना, आपकी सरकार, आपके द्वार कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। सीएम हेमंत सोरेन ने कहा कि चुनाव के समय कुंदरी गांव में मैंने कहा था कि हमारी सरकार बनी, तो दिल्ली से नहीं, बल्कि गांव से चलेगी। ऐसा ही हो रहा है।

### 20 वर्षों में झारखंड पर गरीबी का लगा कलंक

सीएम ने कहा कि झारखंड राज्य जिस समय अलग हुआ था, उस समय गरीब नहीं था। लेकिन, इन 20 वर्षों में झारखंड पर गरीबी का कलंक लग गया है। जबकि, राज्य में खनिज संपदाओं की भरमार है। पूर्व की डबल इंजन की सरकार ने राज्य को लूटने का काम किया है। पूर्व की सरकार गांव तक नहीं पहुंची, जिसके कारण विकास नहीं हो पाया है। राज्य में 500 करोड़ रुपये की लागत से 550 किलो मीटर ग्रामीण सड़क बनाने की योजना पर कार्य किया जा रहा है। सीएम ने कहा कि देश में जाति और समाज को बांटने की साजिश की जा रही है। इससे लोगों को सावधान रहने की जरूरत है। 20 साल तक राज्य के विकास के साथ खिलवाड़ किया गया है, लेकिन हमें आनेवाले पीढ़ी को शिक्षित करना है, ताकि वे अपना अधिकार ले सकें। हेमंत सोरेन ने कहा उनकी सरकार प्रदेश के बच्चों को बेहतर शिक्षा देने का प्रयास कर रही है। बच्चियों को सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना से जोड़ा जा रहा है। बच्चों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी से लेकर विभिन्न कोर्सेस की पढ़ाई करने के लिए गुरुजी स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना का लाभ दिया जाएगा। इसके तहत उन्हें 15 लाख रुपए तक का शिक्षा ऋण मिलेगा। उन्हें कोई गारंटी भी नहीं देनी होगी। सरकार इसके लिए गारंटर बनेगी। झारखंड के 50 बच्चे विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इसके लिए उन्हें शत- प्रतिशत स्कॉलरशिप सरकार दे रही है।

### झारखंड का अनुकरण कर रहे कई राज्य

झारखंड सरकार की इस मुहिम से प्रभावित हो कर देश के कई अन्य राज्य भी अपने यहां शिविर का आयोजन कर रहे है। सीएम ने कहा कि लातेहार में कार्य कर रही खनन कंपनियां यहां के स्थानीय युवाओं को भारी वाहन और खनन कार्य में उपयोग की जानेवाली मशीनों के संचालन करने का प्रशिक्षण देंगी। इसके लिए जिला प्रशासन को खनन कंपनियों द्वारा प्रशिक्षण केंद्र शुरू कराने का निर्देश दिया गया है। झारखंड सरकार ने राज्य में कार्य करनेवाले उद्योगों में स्थानीय लोगों के नियोजन के लिए 75 प्रतिशत आरक्षण संबंधी कानून भी बनाया है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि आयोजित शिविर के माध्यम से लोगों की समस्याएं और तकलीफ सीधे मुझ तक आती है। सरकार ने हर वो योजना बनाई, जिससे राज्य मजबूत हो सके और यहां के गांव में निवास करने वाले लोग सशक्त हो सकें। हमारी सरकार हर वर्ग के लोगों को योजना का लाभ दे रही है, किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं। एक लंबी लकीर खींचने का प्रयास किया जा रहा है।

## राहुल मणिपुर से मुंबई तक निकालेंगे भारत न्याय यात्रा

**AGENCY NEW DELHI :** भारत जोड़ो यात्रा के बाद अब कांग्रेस 'भारत न्याय यात्रा' निकालने जा रही है। यात्रा कांग्रेस नेता राहुल गांधी के नेतृत्व में निकाली जाएगी। राहुल गांधी 14 जनवरी को मणिपुर से यह यात्रा शुरू करेंगे और 20 मार्च को मुंबई में यात्रा पूरी करेंगे। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश और पार्टी के वरिष्ठ नेता केसी वेणुगोपाल ने बुधवार को कांग्रेस मुख्यालय में एक संवाददाता सम्मेलन के दौरान यह जानकारी दी। रमेश ने कहा कि कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी के नेतृत्व में 14 जनवरी को मणिपुर से 6,200 किलोमीटर की भारत न्याय यात्रा शुरू की जाएगी। 14 राज्यों के 85 जिलों से होते हुए 20 मार्च को इस यात्रा का समापन मुंबई में होगा।

## सीआईएसएफ जवान ने खुद को मारी गोली

**RANCHI :** रांची के खलारी थाना क्षेत्र के एनके एरिया स्थित सीआईएसएफ कैंप में बुधवार को एक जवान ने सर्विस रिवाल्वर से खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली। घटना के बाद आनन-फानन में उसके साथी उसे नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र ले गये, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच-पड़ताल कर शव को पोस्टमार्टम के लिए रिम्स भेज दिया। थाना प्रभारी फरीद आलम ने बताया कि एक जवान ने गोली मारकर आत्महत्या कर ली है। जवान का नाम वीएन वर्मा है। वह उत्तर प्रदेश का रहने वाला था। मामले में जांच चल रही है। जवान ने किस वजह से खुद को गोली मारकर खुदकुशी की है। इसका कारण अभी स्पष्ट नहीं हो सका है।

## कांके में बंद घर से मिला युवक का गला कटा शव

### बिछावन पर पड़ी थी लाश, चाकू से रेता हुआ था गर्दन, दो माह से मायके में रह रही थी गर्भवती पत्नी

- मृतक की गवाही में बेड़ो पुलिस ने सोमा उरांव और राजू गोप को भेजा था जेल

**CRIME REPORTER RANCHI :** जिले के कांके थाना क्षेत्र के होचर संग्रामपुर रोड में श्रवण महतो के घर में किराए पर रहने वाले 30 वर्षीय युवक दिलीप महतो पिता रामेश्वर महतो निवासी मासू, बेड़ो का शव बंद घर के बिछावन पर मिला। मृतक का गर्दन चाकू से रेता हुआ था। घटना 25 दिसंबर को तब प्रकाश में आया जब पत्नी सुगंती देवी द्वारा बारबार फोन करने पर भी उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। दिलीप अपनी पत्नी सुगंती देवी के साथ कांके में रह रहा था। दिलीप की गर्भवती पत्नी मायके गई हुई थी। 24 दिसंबर को उसकी पत्नी से बात हुई थी तब उसने कहा था कि दो दोस्त मिलने आए हैं। वह खाना बना रहा है, बाद में बात करेंगे। लेकिन 25 दिसंबर को सुबह से दोपहर तक कई बार कॉल जाने पर भी उसने नहीं उठाया। इसके बाद सुगंती ने अपने एक संबंधी को घर जाकर देखने को कहा। संबंधी मनोज प्रजापति जब घर गए तो बाहर से ताला लगा हुआ पाया। इसके बाद पत्नी के कहने पर ताला तोड़ा गया तो दिलीप बिछावन पर मरा हुआ दिखा। पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि मृतक का गर्दन चाकू से रेता हुआ मिला। यह भी संदेह जताया गया कि इसके पहले संभवतः तकिया से उसका गला घोंटा गया था।

### दो लोगों पर हत्या करने का आरोप

पत्नी सुगंती ने पुलिस को बयान दिया कि वह गर्भवती होने के कारण अपने मायके में लगभग दो माह से रह रही थी। पति दिलीप की गवाही पर बेड़ो पुलिस ने एक केस में सोमा उरांव पिता फगुआ उरांव और राजू गोप पिता सोहराय गोप को जेल भेजा था। दोनों ने जेल से बाहर आने पर जान से मारने की धमकी भी दी थी। दोनों छह महीने पहले ही जेल से छूटे हैं। पत्नी ने उन दोनों पर ही हत्या की आशंका जताई है।

**24 घंटे में अकेले गुजरात में 36 मरीज मिले, देशभर में आज 529 पॉजिटिव मामले, 3 की मौत**

## आठ राज्यों में कोरोना जेएन.1 वैरिएंट के अब तक 109 केस

- डब्ल्यूएचओ के अनुसार 41 देशों में फैला जेएन.1 वैरिएंट
- देश में कुल एक्टिव केस की संख्या 4093

**AGENCY NEW DELHI :** कोरोना का नया वैरिएंट जेएन.1 देश के 8 राज्यों में फैल चुका है। अब तक देशभर में इसके कुल 109 केस मिले हैं। पिछले 24 घंटे में ही इस वैरिएंट के 40 मरीज मिले हैं। इनमें से सबसे ज्यादा 36 गुजरात में पाए गए। इधर, देशभर में कोरोना के रोजाना 400 से 600 केस आ रहे हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक, पिछले 24 घंटे में 529 लोगों की कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव आई, 603 मरीज ठीक हुए और 3 की मौत हुई है। इससे पहले सोमवार को 638, जबकि मंगलवार को 412 नए मरीज मिले थे। देश में कुल एक्टिव केस की संख्या 4093 हो गई है। यानी इन मरीजों का इलाज चल रहा है। इनमें से केरल में सबसे ज्यादा 353, कर्नाटक में 74 और महाराष्ट्र में 37 संक्रमित हैं। फरवरी 2020 में देश में पहला कोरोना पॉजिटिव पाया गया था। तब से अब तक देश में 4.50 करोड़ लोग इस वायरस से संक्रमित हो चुके हैं। 4.44 करोड़ ठीक हुए हैं। जबकि 5.33 लाख की मौत हुई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक ज्यादातर मरीज होम आइसोलेशन में हैं। नया वैरिएंट आने के बाद भी हॉस्पिटलाइजेशन रेट में बढ़ोतरी नहीं हुई है।

### राजस्थान-दिल्ली में भी नए वैरिएंट की एंट्री

राजस्थान में भी कोरोना के नए वैरिएंट जेएन.1 की एंट्री हो गई है। बुधवार 27 दिसंबर को जीनोम सीक्वेंसिंग में 4 मरीजों में नया सब वैरिएंट मिला है। अजमेर, दौसा, झुंझुनूं और भरतपुर के 1-1 मरीजों में यह वैरिएंट मिला है। दिल्ली में भी ओमीक्रॉन के सब-वैरिएंट जेएन.1 की एंट्री हो गई है। बुधवार को नये कोरोना वैरिएंट का पहला मामला सामने आया। दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज ने एएनआई से कहा, जीनोम सीक्वेंसिंग के लिए भेजे गए 3 नमूनों में से एक जेएन.1 और दो ओमीक्रॉन हैं।

### तिरुवनंतपुरम में जेएन.1 वैरिएंट का पहला केस आया था सामने

इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर) के महानिदेशक डॉ. राजीव बहल के मुताबिक 8 दिसंबर को केरल के तिरुवनंतपुरम में जेएन.1 वैरिएंट का पहला केस सामने आया था। 79 साल की एक महिला की रिपोर्ट पॉजिटिव आई थी। महिला में इन्फ्लुएंजा जैसी बीमारी के हल्के लक्षण थे। हालांकि बाद में वह ठीक हो गई। कोविड के सब-वैरिएंट जेएन.1 की पहचान पहली बार यूरोपीय देश लक्जमबर्ग में हुई। यहां से यह तमाम देशों में फैलना शुरू हो गया। यह सब-वैरिएंट पिरोला वैरिएंट (बीए.2.86) से जुड़ा हुआ है। इसे इंसानी शरीर की इम्यूनिटी के खिलाफ खतरनाक बताया जा रहा है। यही वजह है कि नए सब-वैरिएंट को लेकर अलर्ट जारी किया गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार कोरोना का नया जेएन.1 वैरिएंट अब तक 41 देशों में फैल चुका है।

### सरना धर्म कोड की मांग पर 30 को भारत बंद

**RANCHI :** सरना को धर्म की मान्यता देने की मांग पर आदिवासी सेंगेल अभियान (एएसए) ने 30 दिसंबर को भारत बंद का आह्वान किया है। सेंगेल प्रमुख सालखन मुर्मू ने एक दिन के सांकेतिक भारत बंद का आह्वान करते हुए कहा है कि सरना देश के 15 करोड़ आदिवासी (जनजातीय समुदायों) की पहचान है। आदिवासियों के धर्म को मान्यता नहीं देना उनके साथ अन्याय है। एक तरह से संवैधानिक अपराध भी है। सालखन मुर्मू ने बुधवार को एक बयान जारी कर कहा है कि किसी समुदाय पर दूसरे धर्मों का पालन करने के लिए दबाव बनाना, उन्हें धर्म की दासता स्वीकार करने के लिए बाध्य करने की तरह है। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) दोनों ने ही आदिवासियों को उनकी धार्मिक स्वतंत्रता से वंचित किया है।

## मुस्लिम लीग जम्मू-कश्मीर पर सरकार ने लगाया प्रतिबंध

### भारत विरोधी गतिविधियों में था शामिल

- शाह बोले- देश के खिलाफ काम करने वालों को बख्शा नहीं जाएगा

**AGENCY NEW DELHI :** केंद्र सरकार ने मुस्लिम लीग जम्मू-कश्मीर (मसर्रत आलम गुट) पर बैन लगा दिया है। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने सोशल मीडिया एक्स पर ट्वीट कर बताया कि देश विरोधी गतिविधियों के कारण इस संगठन पर यूएपीए के तहत बैन लगाया गया है। अपने ट्वीट में गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में मुस्लिम लीग जम्मू कश्मीर और इसके सदस्य राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में शामिल हैं। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने अपने कहा कि यह संगठन और इसके सदस्य जम्मू-कश्मीर में राष्ट्र-विरोधी और अलगाववादी गतिविधियों में शामिल हैं। आतंकवादी गतिविधियों का समर्थन करते हैं और लोगों को जम्मू-कश्मीर में इस्लामी शासन स्थापित करने के लिए उकसाते हैं। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार का स्पष्ट संदेश है कि हमारे राष्ट्र की एकता, संप्रभुता और अखंडता के खिलाफ काम करने वाले किसी भी व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा और उसे कानून के पूर्ण प्रकोप का सामना करना पड़ेगा।

BRIEF NEWS

## बोलेरो से 40 लाख रुपये बरामद, युवक हिरासत में

GIRIDIH : झारखंड के गिरिडीह जिले के धनवार के घोड़थंबा ओपी पुलिस क्षेत्र में बुधवार तड़के एक बोलरो से 40 लाख रुपये की नकदी बरामद हुई है। पुलिस ने बोलेरो को जब्त कर लिया है। साथ ही बोलेरो में मौजूद युवक को हिरासत में लिया गया है। इस संबंध में घोड़थंबा ओपी पुलिस ने कुछ भी बताने से इनकार कर दिया है। एसपी दीपक कुमार शर्मा का कहना है कि ऐसी सूचना मिली है। इसके बाद संबंधित थाने ने आयकर विभाग को सूचना दी है। पुलिस ने नोटों की गिनती पूरी कर ली है। सभी गड्डियों में पांच-पांच सौ रुपये के नोट हैं। युवक से पूछताछ की जा रही है।

## एनडीआरएफ ने शुरू की पलामू के रानीताल डैम में डूबे युवक की तलाश

PALAMU : जिला मुख्यालय मेदिनीनगर से सटे चैनपुर थाना क्षेत्र के रानी ताल डैम में डूबे युवक को खोजने के लिए रांची से एनडीआरएफ की टीम आ गई है। टीम के छह से अधिक सदस्य दो अलग-अलग वोटों पर सवार होकर युवक का शव ढूंढ रहे हैं। उल्लेखनीय है कि चैनपुर बाजार निवासी 40 वर्षीय धर्मेंद्र कमलापुरी सोमवार को रानी ताल डैम के किनारे पिकनिक मनाने गया था। डैम में नहाने के दौरान वह डूब कर लापता हो गया था। सोमवार और मंगलवार को स्थानीय गोताखोर की मदद से धर्मेंद्र को ढूंढने की कोशिश की गई लेकिन कोई सफलता हाथ नहीं लगी। मौके पर प्रशासनिक पदाधिकारी के अलावा आसपास के गांव के सैकड़ों की संख्या में लोगों की भीड़ मौजूद है।

## बोकारो में नक्सलियों ने पुलिस मुखबिरी के शक में की युवक की हत्या

BOKARO : झारखंड के बोकारो जिला में नक्सलियों ने मंगलवार रात पुलिस मुखबिरी के शक में एक युवक की हत्या कर दी। चतरोचटी थाना प्रभारी नीरज कुमार ने कहा है कि सुबह इस घटना की सूचना मिली। इस संबंध में वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराया गया है। उन्होंने बताया कि यह हत्याकांड चतरोचटी थाना क्षेत्र में चुटे पंचायत के अमन पहाड़ के तलहटी पर बसे दंडरा गांव में हुआ है। नक्सलियों ने सुखराम मांझी (45) की हत्या कर दी। दंडरा नक्सल प्रभावित क्षेत्र है। नक्सली उसके घर के पास शव फेंक गए हैं। सुखराम मांझी पूर्व वार्ड सदस्य था। वह गांव में मुर्गे की दुकान चलाता था। नक्सलियों ने मौके पर छोड़े गए पोस्टर में घटना का जिम्मेदारी ली है।

## जगरानी कुजूर की अध्यक्षता में प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ की बैठक संपन्न

RANCHI : प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ झारखंड, रांची की बैठक बुधवार को कांके प्रखंड के किसान उच्च विद्यालय पिठौरिया में किया गया। बैठक की अध्यक्षता जगरानी कुजूर ने की। मौके पर सामिति का पुनर्गठन भी किया गया साथ ही छात्रों को सरकारी सुविधा, एवं शिक्षक और कर्मचारियों को वेतनमान कैसे मिले इस पर भी विशेष चर्चा की गई। नई सामिति के प्रदेश अध्यक्ष जगरानी कुजूर, उपाध्यक्ष प्रकाश कुमार चौधरी, धनीलाल महतो, सुरेश महतो, मोहम्मद नौशाद, प्रधान सचिव प्रदुमन पांडे, महासचिव राजेंद्र प्रसाद महतो, दिनेश कुमार, संयुक्त सचिव रामेश्वर साहू, अमित महतो, उत्तम कुमार, विनय मांझी, हेमंत कुमार महतो को बनाया गया। प्रदेश कार्यकारिणी सामिति सदस्य के रूप में खेतेश कुमार महतो, अश्विनी कुमार, सुभाष चंद्र मुंडा, नरेश साहू, कोषाध्यक्ष मधुसूदन साहू, मीडिया प्रभारी मोहम्मद अफरोज आलम, पंकज कुमार रजक को बनाया गया। राँची जिला अध्यक्ष विनय कुमार मिश्रा, मालती कुमारी, कमलेश, जिला उपाध्यक्ष ममता कुमारी, हीरालाल महतो, देवानंद नायक को बनाया गया।

### जिला खनन टास्क फोर्स की बैठक में अवैध खनन और परिवहन पर चर्चा

# अवैध खनन स्थलों को चिह्नित कर कार्रवाई करें अधिकारी : उपायुक्त

PHOTON NEWS KHUNTI : उपायुक्त लोकेश मिश्रा की अध्यक्षता में बुधवार को जिला खनन टास्क फोर्स की बैठक आयोजित की गई। बैठक में पुलिस अधीक्षक अमन कुमार, उप विकास आयुक्त नीतीश कुमार सिंह, अनुमंडल पदाधिकारी अनिकेत सचान, एसडीपी.ओ अमित कुमार, पुलिस उपाधीक्षक, जिले के वरीय पदाधिकारी, सभी अंचल अधिकारी और थाना प्रभारी उपस्थित थे।

बैठक करते उपायुक्त लोकेश मिश्रा व अन्य अधिकारी। ● फोटोन न्यूज

मौके पर अवैध खनन की रोकथाम की दिशा में अधिकारियों द्वारा की गई कार्रवाई की समीक्षा की गई। समीक्षा के दौरान उपायुक्त ने पदाधिकारियों को जिले में अवैध खनन के स्थलों को चिह्नित कर कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया। उन्होंने जिला टॉस्क फोर्स को निर्देश दिया कि सुनियोजित रूप से अवैध तरीके से खनिज पदार्थों का खनन, परिवहन और पेड़ों की कटाई पर रोक लगाने की दिशा में आवश्यक पहल करें। बैठक में जिले में अवैध खनन, पेड़ कटाई, भंडराण और परिवहन को रोकने के लिए विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई। डीसी ने वन प्रमंडल पदाधिकारी, जिला खनन पदाधिकारी, अंचलाधिकरियों और थानेदारों को निर्देश दिया कि आपस में समन्वय स्थापित कर औचक छापेमारी करें, ताकि अवैध खनन करने वाले लोगों पर पूरी तरह से अंकुश लगाया जा सके।

जिला खनन पदाधिकारी ने बताया गया कि इस वित्तीय वर्ष में अब तक कुल 121 मामलों में कार्रवाई की गई है, जिनेमें 144 वाहनों को जब्त किया गया है। 92 वाहनों पर प्राथमिकी दर्ज की गई है, 45 वाहनों को राजसात केंलिए प्रेषित किया गया है और 44 वाहनों से नियमानुसार दण्ड की राशि वसूल की गई है। बताया गया कि इस वित्तीय वर्ष में अब तक बालू की 71 प्राथमिकी में 47 अभियुक्तों और 80 वाहनों पर प्राथमिकी दर्ज कराई गई है तथा 41 वाहनों को राजसात के लिए प्रेषित किया गया है। साथ ही 22 वाहनों से नियमानुसार दण्ड की राशि वसूल की गई है।

### डीसी ने जनता दरबार में सुनी लोगों की फरियाद

# त्वरित समाधान के लिए संबंधित पदाधिकारियों को दिए दिशा-निर्देश

PHOTON NEWS PALAMU : उपायुक्त शशि रंजन ने बुधवार को समाहरणालय स्थित अपने कार्यालय कक्ष में जनता दरबार का आयोजन कर जिले के विभिन्न स्थानों से आये फरियादियों की समस्याओं से अवगत हुए। कई मामलों में उन्होंने संबंधित पदाधिकारियों को त्वरित समाधान करने के निर्देश दिये। कुछ मामलों में उन्होंने कई बीडीओ-सीओ को फोन कर जनता दरबार में प्राप्त आवेदन पर अविलंब रूप से कार्रवाई करने की बात कही।

उपायुक्त शशि रंजन।

छत्तरपुर से आये सहायक अध्यापक ने उपायुक्त को बताया कि वो राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय अकाबासा में कार्यरत है लेकिन नंवबर 2022 से ही उनका मानदेय लंबित है। पांकी से नंदलाल पाठक ने बताया कि कई बार आवेदन करने के बावजूद उनकी जमीन का दाखिल-खारिज नहीं हो पाया है।

पोखराहा खुर्द के चमरू मिस्त्री ने उपायुक्त को बताया कि वो दिव्यांग है जिसके कारण चलने-फिरने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है उन्होंने उपायुक्त से ट्राईसाईकिल की मांग की। उपायुक्त ने ऑन स्पॉट बैशाखी सौंपते हुए निजी स्तर से आर्थिक मदद भी की। डीसी ने चांदनी देवी को प्रधानाध्यापक के विरुद्ध जांच कराने हेतु आश्वस्त किया।

# ग्रामीणों ने पलामू के सांसद और विधायक का किया घेराव, रोड नहीं तो वोट नहीं के लगे नारे

PHOTON NEWS PALAMU : सड़क की समस्या झेल रहे जिले के पाटन प्रखंड के ग्राम पंचायत सूठा के ग्रामीणों ने बुधवार को पलामू के सांसद वीडी राम एवं छतरपुर-पाटन की विधायक पुष्पा देवी का घेराव किया। साथ ही रोड नहीं तो वोट नहीं के नारे लगाए। सुठा पंचायत के ग्राम करर खुर्द, करर कला दुआरवा, नौकाड़ीह के ग्रामीणों ने जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। पाटन के सुठा पंचायत सचिवालय में विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम को में शामिल होने के लिए सांसद एवं विधायक पहुंचे हुए थे। ग्रामीणों ने सूठा से लोइंगा मुख्य सड़क पर बैठ कर दोनों जनप्रतिनिधियों का घेराव किया। बैनर पोस्टर के साथ धरना दिया। प्रदर्शन में महिला एवं पुरुष सैकड़ों की संख्या में शमिल थे।

विरोध-प्रदर्शन करती ग्रामीण महिलाएं। ● फोटोन न्यूज

ग्रामीणों ने बताया कि आजादी के समय से ही करर खुर्द, करर कला, दुआरवा में सड़क नहीं बनी है। आवागमन में भारी परेशानी होती है। सड़क पीडब्लूडी रोड से करर खुर्द, करर कला, दुआरवा से होते हुए आगरा को जोड़ती है जिसकी लंबाई लगभग 6 किलोमीटर है जिसमें 6000 लोगों की आबादी बस्ती है। रोड नहीं होने से विकास की मुख्यधारा से यह क्षेत्र कटा हुआ है। ग्रामीणों ने सांसद-विधायक से रोड बनाने की मांग की।

# खूंटी-रांची रोड में हुई दो अलग-अलग सड़क दुर्घटनाओं में दो लोगों की मौत

PHOTON NEWS KHUNTI : खूंटी-रांची रोड में बुधवार को हुई दो अलग-अलग सड़क दुर्घटनाओं में दो लोगों की मौत हो गई। पहली दुर्घटना बिरसा मृग विहार के समीप सुबह लगभग आठ बजे हुई। यहां किसी अज्ञात वाहन की चपेट में आने से लगभग 35 वर्षीय एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई। दुर्घटना की सूचना मिलने पर खूंटी थाना की पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेजा। समाचार भेजे जाने तक मृतक की पहचान नहीं हो सकी है। शव का पोस्टमार्टम कर उसे शीत गृह में सुरक्षित रख दिया गया है। पुलिस शव की पहचान कराने में जुटी है।

दूसरी दुर्घटना कालामाटी और मैनुगढ़ा के बीच पूर्वाह्न लगभग 11 बजे हुई, जिसमें होंडा ईऑन कार ने एक टीवीएस मोपेड को सामने से अपनी चपेट में ले लिया। इस दुर्घटना में टीवीएस मोपेड का चालक एक वृद्ध गंभीर रूप से घायल हो गया। दुर्घटना के बाद कार में सवार लोग घायल वृद्ध को उठाकर इलाज के लिए खूंटी सदर अस्पताल ले गए, जहां प्राथमिक उपचार के बाद उसे बेहतर इलाज के लिए रेफर कर दिया गया, लेकिन परिजन में घायल को केएस गंगा नामक निजी अस्पताल में ले गये, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। मृतक की पहचान धुर्वा जगन्नाथपुर निवासी डॉ रमाकांत मिश्रा (73) के रूप में हुई है।

बताया जाता है कि डॉ रमाकांत मिश्रा का हरदाग में एक क्लिनिक है। बुधवार सुबह क्लिनिक आने के बाद वे कालामाटी क्षेत्र के एक मरीज को देखने अपने मोपेड से कालामाटी की ओर आ रहे थे। उसी दौरान सामने से आ रही तेज रफ्तार कार की चपेट में आ गए। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराकर उसे स्वजनों को सौंप दिया। इस संबंध में खूंटी थाने में मामला दर्ज किया गया है।

## आदिवासी पड़हा भवन का मंत्री रामेश्वर उरांव ने किया उद्घाटन

LOHARDAGA : जिले के भंडरा प्रखंड के नवडीहा एवं कसपुर में विधायक मद से बने आदिवासी पड़हा भवन का स्थानीय विधायक सह मंत्री रामेश्वर उरांव ने उद्घाटन किया। मंत्री ने ग्रामीणों के साथ बैठक कर उनकी समस्याओं को भी जाना और उसे दूर करने का आश्वासन दिया। मंत्री ने कहा कि वर्तमान सरकार में विकास काफी तेजी के साथ हो रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य की पंचायतों और वार्डों में शिविर लगाकर जनता दरबार आयोजित किया जा रहा है। जनता के द्वार तक पहुंच कर विकास कार्यों से अंतिम व्यक्ति को जोड़ने का काम हो रहा है। पूरे राज्य में 20 लाख राशन कार्ड लाभुकों को हमारी सरकार ने उपलब्ध कराया है। अबुआ आवास योजना के तहत घर एवं तन ढकने के लिए धोती साड़ी योजना के तहत धोती साड़ी एवं पोषाहार भोजन के लिए चावल के साथ दाल भी उपलब्ध कराया जा रहा है। सर्वजन पेंशन योजना के तहत भी जरूरतमंदों को लाभ दिया जा रहा है। इस मौके पर जिप

# हमारा संकल्प विकसित भारत कार्यक्रम का हुआ आयोजन, मोदी के संदेश को किया गया प्रसारित

PHOTON NEWS LOHARDAGA : हमारा संकल्प विकसित भारत कार्यक्रम का आयोजन बुधवार को कुडू प्रखण्ड के चंदलासो एवं ककरगढ़ पंचायत में आयोजित किया गया। कार्यक्रम स्थल पर मोबाल आईईसी वैन की ओर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा दिये गये संदेश को प्रसारित किया गया। केंद्र सरकार की योजनाओं से लाभान्वित लाभुकों के वीडियो को भी एलईडी वैन के माध्यम से दिखलाया गया।

कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारी व ग्रामीण। ● फोटोन न्यूज

कार्यक्रम में संबंधित विभागों के कर्मियों ने केंद्र प्रायोजित योजनाओं की जानकारी दी और योजनाओं का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में सभी उपस्थित लोगों को भारतवर्ष को वर्ष 2047 तक आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र बनाने के सपने को साकार करने, देश की समृद्ध विरासत पर गर्व करने, भारत की एकता को सुदृढ करने, देश की रक्षा करने वालों का सम्मान करने और कर्तव्यनिष्ठ नागरिक होने का दायित्व निभाने की शपथ दिलायी गई।

कार्यक्रम में प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (आयुष्मान भारत), पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना, दीनदयाल अंत्योदय योजना, पीएम उज्ज्वला योजना, पीएम विश्वकर्मा योजना, पीएम किसान योजना, किसान क्रेडिट कार्ड, पीएम पोषण अभियान, हर घर जल-जल जीवन मिशन, जन धन योजना, जीवन ज्योति बीमा योजना, सुरक्षा बीमा योजना, अटल पेंशन योजना, पीएम प्रनाम, नैनो फर्टिलाईजर, सर्वे ऑफ विपेज एण्ड मैपिंग विद इंप्रोवाइज्ड टेक्नोलॉजी इन विलेज एरिया आदि योजनाओं की जानकारी दिखायी गई। उपस्थित जनसमूह में नववर्ष का कैलेंडर तथा केंद्र सरकार की योजनाओं से संबंधित बुकलेट का वितरण किया गया।

## प्रतिबिंब एप ने दिलायी सफलता, पुंदाग से साइबर ठग धराया

RANCHI : प्रतिबिंब एप के माध्यम से एक साइबर अपराधी गिरफ्तार हुआ है। साइबर अपराधी असलम अंसारी की गिरफ्तारी पुंदाग ओपी क्षेत्र के आलम हाता से हुई। जिस नंबर से असलम अंसारी के द्वारा साइबर ठगी की गई थी, पुलिस ने जब उसके बारे में पूछताछ की तो असलम अंसारी ने स्वीकार किया कि सभी सिम कार्ड उसके द्वारा लिया गया है। इसके अलावा पुलिस ने पुलिस ने असलम अंसारी से उससे संबंधित बैंक खातों में रुपये के ट्रांजैक्शन से संबंधित पूछताछ किया तो असलम अंसारी रुपया का सही स्रोत के बारे में जानकारी नहीं दे पाया। और असलम अंसारी ने पुलिस को बताया कि सभी सिम और बैंक खाता उनके साथी सतीश कुमार बिट्टू बादल सिंह अमित कुमार और गोलू के द्वारा साइबर ठगी करने के उपयोग में लाया जाता है। जिसके बाद उन्हें प्रति खाता पांच हजार रुपये कमीशन दिया जाता है।

# पांच लाख की नकली शराब के साथ संचालक गिरफ्तार

मीडिया को जानकारी देते सहायक उत्पादन आयुक्त संजय कुमार मेहता। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS DHANBAD : जिले में उत्पाद विभाग की टीम ने बुधवार को मैथन ओपी इलाके के पतलाबारी स्थित एक घर में छापेमारी कर करीब पांच लाख रुपये की कुल 60 पेटी अवैध नकली विदेशी शराब सहित शराब बनाने में प्रयुक्त होने वाले अन्य सामान को जब्त कर लिया। साथ ही इस अवैध धंधे के संचालक दशरथ मंडल उर्फ साव को भी गिरफ्तार किया है।

इस संबंध में सहायक उत्पादन आयुक्त संजय कुमार मेहता ने बताया कि इन नकली शराब को नए साल के मौके पर पिकनिक स्पॉट पर आने वाले पर्यटकों के बीच खपाने की योजना थी। पकड़े गए शख्स के द्वारा बताया गया है कि बोकारो के जेडी साव नामक शख्स के द्वारा इसकी सप्लाई की गई थी। उत्पाद विभाग लगातार अवैध शराब के खिलाफ कार्रवाई करता रहेगा ताकि राजस्व की क्षति पहुंचाने वालों पर अंकुश लगाया जा सके।

### अयोध्या में जुटेंगे प्रभु राम के भक्त, बंट रहा अक्षत से आमंत्रण

# दीपोत्सव के साथ करें प्रभु का स्वागत : डॉ आलोक

PHOTON NEWS RAMGARH : अयोध्या में प्रभु श्री राम की प्रतिमा की स्थापना 22 जनवरी को होनी है। इस भव्य कार्यक्रम में पूरे देश से राम भक्तों को आमंत्रित किया जा रहा है। प्रभु श्री राम के स्वागत के लिए लोगों को अक्षत के साथ आमंत्रण बांटा जा रहा है। रामगढ़ में विश्व हिंदू परिषद के जिलाध्यक्ष डॉ आलोक रतन चौधरी एवं कोषाध्यक्ष अवधेश कुमार ने बुधवार को रामगढ़ कॉलेज स्थित पंचवटी सोसायटी के अध्यक्ष अनिल गोयल को अयोध्या से भेजी गई पूजित अक्षत एवं पत्रक के साथ श्री राम जी की चित्र भेंट कर आमंत्रित किया गया।

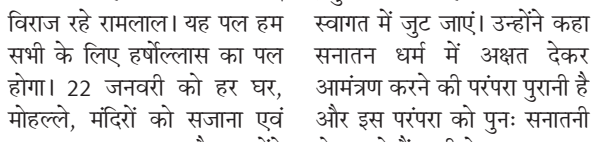

अक्षत व प्रभु श्री राम का चित्र देकर आमंत्रित करे लोग। ● फोटोन न्यूज

मौके पर डॉ आलोक रतन चौधरी ने कहा 500 वर्षों के बाद विराज रहे रामलाल। यह पल हम सभी के लिए हर्षोल्लास का पल होगा। 22 जनवरी को हर घर, मोहल्ले, मंदिरों को सजाना एवं पूजन उत्सव मनाना है। उन्होंने कहा कि दीपोत्सव के साथ प्रभु श्री राम का स्वागत करना है। इसके लिए हर घर दीपोत्सव मना कर प्रभु श्री राम सहित सपरिवार के स्वागत में जुट जाएं। उन्होंने कहा सनातन धर्म में अक्षत देकर आमंत्रण करने की परंपरा पुरानी है और इस परंपरा को पुनः सनातनी दोहरा रहे हैं। इसी के तहत हर घर अक्षत के साथ आमंत्रित किए जा रहे हैं।

## ऑटो चालक संघ ने नगर परिषद कार्यालय पर किया प्रदर्शन

KODERMA : ऑटो चालकों एवं नागरिकों को सुविधा देने की मांग पर झारखंड राज्य परिवहन मजदूर यूनियन एवं सीटू से संबद्ध ऑटो चालक संघ, झुमरीतिलैया इकाई ने बुधवार को नगर परिषद कार्यालय पर धरना प्रदर्शन किया। इससे पूर्व सुभाष चौक से झंडा बैनर के साथ ओवरब्रिज, झंडा चौक, स्टेशन रोड व अडी बंगला रोड होते हुए नगर पर्षद कार्यालय तक पैदल जुलूस निकाला गया। इसका नेतृत्व सीटू नेता और निर्माण कामगार यूनियन के अध्यक्ष प्रेम प्रकाश ने किया। जुलूस में मनमानी टैक्स वसूली बंद करो, ऑटो स्टैंड की व्यवस्था करो, ऑटो चालकों के साथ दुर्व्यवहार बंद करो आदि नारे लगाए जा रहे थे।

# संपूर्ण भारत क्रांति पार्टी के संगठन को बनाया जाएगा सशक्त व मजबूत : विजय शंकर नायक

PHOTON NEWS RANCHI : संपूर्ण भारत क्रांति पार्टी के संगठन को सशक्त एवं मजबूत बनाया जाएगा ताकि लोकसभा और विधानसभा चुनाव में पार्टी मजबूती के साथ चुनाव लड़ सके। उपरोक्त बातें आज संपूर्ण भारत क्रांति पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव सह झारखंड, छत्तीसगढ़ प्रभारी विजय शंकर नायक ने कही। इन्होने इस संदर्भ मे आज संपूर्ण भारत क्रांति पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष नील जस्टीन बेक को निर्देश दिया है और उनसे कहा है कि वे एक माह के अंदर झारखंड प्रदेश कमेटी का विस्तार एंव 24 जिलों में जिला

विजय शंकर नायक।

अध्यक्षों का मनोनयन कर अनुमोदन प्राप्त कर ले ताकि पार्टी के संगठन को मजबूत किया जा सके और आने वाले लोकसभा एंव विधान सभा के चुनाव में मजबूती के साथ पार्टी चुनाव लड़ सके। श्री नायक ने आगे कहा है कि आने वाले लोकसभा और विधानसभा चुनाव में समान विचारधारा के पार्टियों से गठबंधन किया जाएगा और इंडिया गठबंधन के तर्ज पर छोटे-छोटे पार्टियों को एक जगह के तहत गठबंधन बनाया जाएगा और साझा संघर्ष को आगे बढ़ाकर झारखंड की राजनीति में तीसरी शक्ति के रूप में उभरने का काम किया जाएगा ताकि राज्य निर्माण के समय देखे गए सभी सपने एवं झारखंडी समाज के भावनाओं के अनुरूप झारखंड के नवनिर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान देगा।

### ग्रामीणों ने विधायक संग देखा विकसित भारत सकंल्प यात्रा का सीधा प्रसारण, कोचे मुंडा ने कहा-

# मोदी को फिर से पीएम के रूप में देखना चाहती है जनता

PHOTON NEWS KHUNTI : विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम का बुधवार को भाजपा गोविंदपुर मंडल के तीन जगहों पर सीधा प्रसारण एलईडी के माध्यम से किया गया। कार्यक्रम का आयोजन गोविंदपुर मंडल अध्यक्ष रामध्यान सिंह ने की। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण गोविंदपुर, जलंगा चौक और बाला मोड़ में किया गया। मौके पर मुख्य अतिथि के तौर पर तोरपा के विधायक कोचे उपस्थित थे।

कार्यक्रम में उपस्थित विधायक व ग्रामीण। ● फोटोन न्यूज

विधायक के साथ ग्रामीणों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यक्रम का सीधा प्रसारण देखा और इससे ग्रामीण काफी प्रभावित नजर आये। मौके पर विधायक कोचे मुंडा ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश हर दिन विकास के नया आयाम कायम कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री का सबसे बड़ा लक्ष्य गरीबों, महिलाओं और युवाओं का विकास करना है।

उन्होंने कहा कि गांवों के विकास के लिए केंद्र सरकार ने कई योजनाएं शुरू की हैं और इसका परिणाम भी धरातल पर नजर आ रहा है। उन्होंने कहा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा का उद्देश्य है कि हम अधिक से अधिक लोगों तक केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं को पहुंचाएं और लाभार्थियों तक विकसित भारत संकल्प के संदेश को पहुचाएं। कोचे मुंडा ने कहा कि नरेंद्र मोदी के कार्यों को देखकर पूरे क्षेत्र की जनता तीसरी बार उन्हें प्रधानमंत्री के रूप में देखना चाहती है। विधायक ने लोगों से अपील की कि वे किसी के बहकावे में न आयें और आनेवाले आम चुनाव में फिर से भाजपा को विजयी बनायें।

## कृषि, पशुपालन च सहकारिता विभाग के दस दिवसीय प्रशिक्षण की शुरूआत

PHOTON NEWS KHUNTI : कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग के तत्वावधान में खूंटी प्रखंड के गुटजोरा पंचायत सचिवालय में बुधवार को एग्री स्मार्ट विलेज गुरजोरा के किसानों का 10 दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ। कृषि, पशुपालन, उद्यान, भूमि संरक्षण, मत्स्य से संबंधित प्रशिक्षण गुटजोरा गांव के 125 किसानों को 10 दोनों में खेती, पशुपालन, मत्स्य आदि की जानकारी दी जाएगी।

कृषि विभाग के प्रशिक्षकों द्वारा कृषि से जुड़ी विभिन्न समस्याओं और अन्य बिंदुओं की जानकारी दी गई। सीमित संसाधन और कम पानी और कम लागत में अधिक उत्पादन वाली सब्जियां और अन्य फसलों की जानकारी किसानों को दी गई। साथ ही अन्य विभागों के प्रशिक्षकों द्वारा मुर्गी पालन, मत्स्य, गाय पालन आदि का प्रशिक्षण दिया गया। जिला उद्यान पदाधिकारी द्वारा किसानों में बीज का वितरण किया गया।

BRIEF NEWS

## डीएसपीएमयू के असिस्टेंट प्रो. डॉ. अशोक सस्पेंड, घूस लेकर क्लास देने का आरोप

**RANCHI :** डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय (डीएसपीएमयू) के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ अशोक नाग को सस्पेंड कर दिया गया है। मिली जानकारी के अनुसार, राजभवन के आदेश के बाद उन्हें सस्पेंड किया गया है। एक सप्ताह पहले आशोक नाग को यूके मैनेजमेंट डिपार्टमेंट के डायरेक्टर पद से हटाया गया था। डॉ अशोक नाग पर चार शिक्षकों ने घूस लेकर क्लास देने का आरोप लगाया था। उन्होंने उच्च शिक्षा विभाग (राजभवन) से भी इसकी शिकायत की थी। जिसके बाद डीएसपीएमयू ने एक जांच कमेटी का गठन किया था। लेकिन उस कमेटी ने जांच करने से इनकार कर दिया। इसके बाद फिर से एक कमेटी गठित की गयी। जिसने जांच के बाद रिपोर्ट जमा कर दी है। इधर अशोक नाग पर आरोप लगाने वाले शिक्षकों को भी अब झारखंड के किसी भी विश्वविद्यालय में पढ़ाने नहीं दिया जायेगा। मालूम हो कि अशोक नाग दो बार कांके विधानसभा से चुनाव भी लड़ चुके हैं। वहीं हाल के दिनों में वह आजसू पार्टी में भी शामिल हुए हैं।

## मैथिली पंचांग का विमोचन सात जनवरी को

**RANCHI :** मिथिला पंचांग सह कैलेंडर 2024 का विमोचन सात जनवरी को किया जायेगा। इस संबंध में विद्यापति स्मारक समिति के लेखानंद झा ने बुधवार को बताया कि पंचांग विमोचन के बाद समिति के जरिये वनभोज का भी आयोजन किया जायेगा। साथ ही मैथिल कलाकारों की ओर से रंगारंग प्रस्तुति दी जायेगी।

## 39 आईपीएस केंद्र में एडीजी रैंक में हुए इम्पैनल

**RANCHI :** झारखंड कैडर के संजय लाठकर समेत 39 आईपीएस केंद्र में एडीजी या एडीजी समकक्ष रैंक में इम्पैनल हुए। 39 आईपीएस अधिकारियों में से चार 1994 बैच के और एक-एक 1991 और 1993 बैच के हैं। इस सूची में 1995 बैच के तैंतीस अधिकारी शामिल हैं। केंद्र सरकार ने इम्पैनलमेंट को मंजूरी दे दी है।

## राज्य प्रशासनिक सेवा के दो अफसर नपे

**RANCHI :** राज्य प्रशासनिक सेवा के दो अफसरों पर गाज गिरी है। नीमडीह के तत्कालीन डेविड बलिहार पर मनरेगा में मानव दिवस जन की धीमी प्रगति, खर्च के प्रतिशत में कमी के साथ एमआइएस एंट्री व जॉब कार्डधारियों को रोजगार उपलब्ध कराने में भी कमी का आरोप है। इन आरोपों के कारण डेविड बलिहार को निंदन की सजा दी गई। जांच में यह बात सामने आयी कि लक्ष्य के विरुद्ध सिर्फ 31.31 प्रतिशत योजनाओं को पूर्ण किया गया है। वहीं गोला के तत्कालीन बीडीओ पवन कुमार महतो पर सोलर लाइट, एलइडी स्ट्रीट लाइट व पानी टैंकर की खरीदारी में अनियमितता बरतने का आरोप है। इस पर रामगढ़ डीसी ने कार्यवाही की अनुशंसा की थी। इसके बाद सरकार ने पवन कुमार महतो के खिलाफ विभागीय कार्यवाही चलाने का निर्णय लिया है।

## इंस्पेक्टर राजेश सिन्हा का तबादला

**RANCHI :** डीजीपी गोपनीय कार्यालय से इंस्पेक्टर राजेश सिन्हा का तबादला कर दिया गया है। राजेश सिन्हा पीटीसी पदमा में पदस्थापित थे और वर्तमान में डीजीपी गोपनीय कार्यालय में प्रतिनियुक्त थे। स्पेशल ब्रांच में पदस्थापित इंस्पेक्टर मणिभूषण को डीजीपी गोपनीय कार्यालय में प्रतिनियुक्त किया गया है।

## विभागीय सचिवों को 30 तक मुख्यालय ना छोड़ने का आदेश

**RANCHI :** राज्य के मुख्य सचिव एल खयांग्ते ने बुधवार को सभी विभागों के सचिवों को 30 दिसंबर तक मुख्यालय नहीं छोड़ने का आदेश दिया है। क्योंकि, 29 दिसंबर को झारखंड सरकार का स्थापना दिवस है। इसके मद्देनजर मुख्य सचिव ने यह आदेश दिया है।

atom美
ATOMY
INDIA
RANCHI TEAM
WARRIOR CENTRE
4th Floor, Shop No. 22, 23, 24
Roshpa Roshpa Tower,
Main Road, Ranchi - 834001
Mob. 9334495776

# अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के लिए बिरसा मुंडा एयरपोर्ट तैयार

## कुहासे में भी रात में लैंडिंग और टेकऑफ की नहीं होगी परेशानी

**PHOTON NEWS RANCHI :** रांची का भगवान बिरसा मुंडा एयरपोर्ट अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के लिए तैयार है। वर्तमान में पांच विमानन कंपनियां अपनी सेवाएं दे रही हैं। इसके अलावा हज के लिए यहां पिछले दस सालों से जेद्दा के लिए सीधी विमन सेवा उपलब्ध करवाई जा रही है। रांची एयरपोर्ट पर इंस्ट्रूमेंट लैंडिंग सिस्टम (आईएलएस) लगाया जा चुका है, जिसकी मदद से कुहासे के बावजूद रात में भी विमानों की लैंडिंग और टेकऑफ में परेशानी नहीं होगी। रांची एयरपोर्ट पर अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस नया टर्मिनल बिल्डिंग और एटीसी टावर संचालित हो रहा है। एयर ट्रैफिक कंट्रोल अंतरराष्ट्रीय स्तर का है। केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्रालय और भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण भी बिरसा मुंडा एयरपोर्ट के डेवल्पमेंट और संचालन से संतुष्ट है। अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट को लेकर विचार-विमर्श भी चल रहा है लेकिन एयरपोर्ट के आसपास के 72 ऊंचे इमारत अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट प्लानिंग में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं। बिरसा मुंडा एयरपोर्ट के आसपास 55 ऊंची इमारतों को रेड जोन में रखा गया है। ऊंचे भवन अंतरराष्ट्रीय उड़ान में हर्डल्स (बाधा) का काम कर रहे हैं। इन भवनों का निर्माण नक्शा स्वीकृत कराए बिना निर्धारित ऊंचाई से अधिक ऊंचा बनाया गया है। चिन्हित जिन भवनों के पास नक्शा नहीं है, ऐसे भवनों पर अवैध निर्माण का केस दर्ज करते हुए तोड़ने का आदेश दिया जा चुका है। अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट को लेकर प्राधिकरण ने एयरपोर्ट के आसपास सर्वे कराया था, जिसमें पाया था कि 35 ऊंचे भवनों की वजह से उड़ान भरने और विमान के उतरने के दौरान दुर्घटना का खतरा हो सकता है। प्राधिकरण ने राज्य सरकार से कार्रवाई का आग्रह किया है।

- वर्तमान में पांच विमानन कंपनियां दे रही हैं सेवाएं
- पिछले दस सालों से जेद्दा के लिए सीधी विमन सेवा करवाई जा उपलब्ध
- नया टर्मिनल बिल्डिंग और एटीसी टावर हो रहा संचालित

### आईएसओ ईएमएस का मिल चुका है प्रमाण पत्र

प्राधिकरण द्वारा चिन्हित ऊंचे भवनों को तोड़ा नहीं गया, तो बिरसा मुंडा एयरपोर्ट को अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट का दर्जा मिलने के बाद भी उड़ान शुरू करने में परेशानी होगी। प्राधिकरण ने रांची एयरपोर्ट से अंतरराष्ट्रीय उड़ान को लेकर प्रपोजल भेजा था। उस प्रपोजल पर मंत्रालय ने विचार करने के बाद रांची एयरपोर्ट में कई बदलाव करने का निर्देश दिया है, जिसके बाद से पार्किंग, टर्मिनल बिल्डिंग, बोर्डिंग एरिया, इंटरनेशनल टर्मिनल बिल्डिंग आदि में बदलाव किए जा रहे हैं। बिरसा मुंडा एयरपोर्ट को आईएसओ ईएमएस (एनवायर्नमेंट क्लीयरेंस सिस्टम) का प्रमाण पत्र मिल चुका है। भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण ने पर्यावरण प्रबंधन के लिए प्रमाण पत्र दिया था। इस प्रमाण पत्र के बाद ही रांची एयरपोर्ट से अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के लिए प्रयास शुरू हुआ। रांची एयरपोर्ट को सुरक्षित और स्मूथ एयर ट्रैफिक सुविधा वाला बताया गया।

### सप्ताह में 370 घरेलू उड़ाने भर रही उड़ान

रांची एयरपोर्ट से सप्ताह में 370 घरेलू उड़ाने संचालित हैं। हर महीने करीब 2 लाख 20 हजार यात्री उड़ान भर रहे हैं। यह पिछले साल की तुलना में करीब 45 हजार से अधिक है। रांची से वर्तमान में अहमदाबाद, बेंगलुरू, भुवनेश्वर, चेन्नई, दिल्ली, हैदराबाद, कोलकाता, लखनऊ, मुंबई, पटना और पुणे के लिए विमान सेवा उपलब्ध है। जल्द ही जेट एयरवेज की भी उड़न शुरू हो सकती है। प्रक्रिया अंतिम चरण में है। रांची से दरभंगा, बनारस, जयपुर, भोपाल, गोवा, देवघर और पूर्वोत्तर राज्यों के लिए सीधी विमान सेवा के लिए डिमांड बढ़ रहे हैं।

## मेकॉन संस्थान को मिला प्रतिष्ठित आईईआई इंडस्ट्री एक्सिलेंस अवार्ड

### एमपी में इंजीनियरिंग उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित

जबलपुर में पुरस्कार ग्रहण करते मेकॉन के शीर्ष पदाधिकारी।

**PHOTON NEWS RANCHI :** झारखंड की राजधानी रांची स्थित प्रतिष्ठित संस्थान मेकॉन को मध्यप्रदेश के जबलपुर में प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन बुधवार को आयोजित हुआ। री-इमेजिनिंग टूमारो : शेपिंग द फ्यूचर थ्रू डिसरप्टिव एंड इंटरडिसिप्लिनरी टेक्नोलॉजीज विषय पर आयोजित 38वीं भारतीय कांग्रेस में प्रतिष्ठित आईईआई इंडस्ट्री एक्सिलेंस अवार्ड से सम्मानित किया गया। 38वीं भारतीय कांग्रेस की मेजबानी इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), जबलपुर चैप्टर की ओर से हो रहा है। आयोजन भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के सहयोग से हुआ है। तीन दिवसीय समारोह 27 से 29 दिसंबर 2023 चलेगा। मेकॉन को पुरस्कृत किए जाने के दौरान मध्यप्रदेश के उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ला, भारत सरकार के पूर्व सचिव यूपी सिंह भी मौजूद थे। मेकॉन के सीएमडी अजित कुमार सक्सेना और निदेशक (वाणिज्य) संजय कुमार वर्मा ने पुरस्कार प्राप्त किया।

### मेकॉन के सीएमडी ने सभी कर्मचारियों को दी बधाई

मेकॉन के देवाशीष वर्मा ने यह जानकारी दी है। उन्होंने कहा कि यह पुरस्कार मेकॉन के कई दशकों की उत्कृष्ट इंजीनियरिंग क्षमताओं और समृद्ध एवं विविध उद्योगों में उसकी निपुणता का प्रतीक है। यह पुरस्कार आत्मनिर्भर भारत पर विशेष ध्यान केंद्रित करने के साथ-साथ देश को औद्योगिक रूप से विकसित राष्ट्र बनाने के लिए भारतीय उद्योगों के त्वरित विकास में सहयोग हेतु मेकॉन की प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है। इस उपलब्धि के लिए सीएमडी अजित कुमार सक्सेना और निदेशक (वाणिज्य) संजय कुमार वर्मा ने मेकॉन के सभी कर्मचारियों को बधाई दी है।

## बाबूलाल ने सरकारी स्कूलों में पोशाक खरीद में जतायी घोटाले की आशंका

### मुख्य सचिव को लिखा पत्र, शीतकालीन सत्र में मनीष जायसवाल ने भी उठाया था मामला

**PHOTON NEWS RANCHI :** भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवम पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने हजारीबाग में सरकारी स्कूली बच्चों के पोशाक खरीद में घोटाले की आशंका जाहिर की है। साथ ही इसकी जांच कराने एवं दोषी पदाधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित करने को राज्य के मुख्य सचिव को लेटर लिखा है। इसमें उन्होंने कहा है कि हजारीबाग विधायक मनीष जायसवाल ने जिले के सरकारी स्कूलों में घटिया पोशाक वितरण में गड़बड़ी का मसला विधानसभा के शीतकालीन सत्र में उठाया था। राज्य परियोजना निदेशक, झारखंड (शिक्षा विभाग) ने बच्चों के पोशाक वितरण से संबंधित दिशा निर्देश सभी जिलों के संबंधित अधिकारियों को 8 अगस्त को जारी किया था। तय मापदंड के बाहर जाकर हजारीबाग के जिला शिक्षा अधीक्षक ने बगैर टेंडर और इसे स्थानीय समाचार पत्रों में प्रकाशित किए बिना दूसरे जिले के एनजीओ को पोशाक आपूर्ति का आदेश दे दिया। यह नियम विरूद्ध है। साथ ही, इसकी इसकी क्वालिटी इतनी खराब निकली कि सप्ताह भर में ही स्वेटर और पोशाक फटना शुरू हो गया।

### निदेशों का उल्लंघन

बाबूलाल ने लिखा है कि राज्य परियोजना निदेशक की ओर से जारी दिशा निर्देश में कहा था कि यदि जिले में संचालित एसएचजी स्वेटर, पोशाक के कार्य को निर्धारित समय में कर सकते हैं तो उनके माध्यम से इस कार्य को कराना है। अन्यथा डीबीटी के जरिये बच्चों को उनके बैंक खाते में राशि उपलब्ध करायी जानी है। पर कमीशनखोरी के लिए हजारीबाग डीएसई द्वारा नियम कानून को किनारे कर दिया गया।

### पूजा सिंघल की भूमिका की जांच मामले में प्रार्थी और उसके अधिवक्ता को हटाया गया

## हाईकोर्ट ने सक्षम बेंच को स्वतः संज्ञान लेकर एमिकस क्यूरी नियुक्त करने का दिया निर्देश

**SPECIAL REPORTER RANCHI :** झारखंड हाइकोर्ट ने मनरेगा घोटाले में खूंटी की तत्कालीन डीसी पूजा सिंघल की भूमिका की जांच को लेकर दायर अरुण कुमार दुबे की जनहित याचिका पर बुधवार को झारखंड हाईकोर्ट में वर्चुअली सुनवाई हुई। चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्रा की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने मामले में प्रार्थी अरुण कुमार दुबे एवं उसके अधिवक्ता राजीव कुमार के क्रेडेंशियल को सही नहीं मानते हुए दोनों को मामले से हटाने का आदेश दिया। इसके साथ ही कोर्ट ने मामले में स्वतः संज्ञान लेते हुए एमिकस क्यूरी की नियुक्ति करने का निर्देश देते हुए मामले को किसी सक्षम बेंच में भेजने का निर्देश दिया। कोर्ट ने मामले में सुनवाई जारी रखने का निर्देश दिया। बता दें कि पूर्व में सुप्रीम कोर्ट के वरीय अधिवक्ता कपिल सिब्बल एवं महाधिवक्ता राजीव रंजन ने राज्य सरकार की ओर से हाईकोर्ट में पक्ष रखते हुए रूल्स के खिलाफ याचिका दाखिल किए जाने के आधार पर इसे खारिज करने की मांग की थी। पूर्व में कोर्ट ने सरकार का पक्ष जानने के बाद मेंटीबिलिटी (याचिका सुनवाई योग्य है या नहीं) के बिंदु पर फैसला सुरक्षित रखा था।

### क्या बताया था प्रार्थी ने

पूर्व की सुनवाई में प्रार्थी के अधिवक्ता की ओर से अदालत को बताया गया था कि खूंटी में मनरेगा योजनाओं में अभी 200 करोड़ रुपए से अधिक की वित्तीय गड़बड़ी मिली है। उस दौरान पूजा सिंघल खूंटी के डीसी थी । इस मामले में खूंटी जिला के विभिन्न पुलिस थानों में 16 प्राथमिकी दर्ज की गयी थी। बाद में खूंटी पुलिस से जांच लेकर एसीबी को सौंपा गया। एसीबी से पूरे मामले की जांच करायी गयी, लेकिन उसमें तत्कालीन उपायुक्त पूजा सिंघल की भूमिका की जांच नहीं की गयी। उपायुक्त के द्वारा ही चेक पर हस्ताक्षर किया जाता था। उनकी भूमिका की इडी से जांच कराने का आग्रह किया गया। उल्लेखनीय है कि प्रार्थी ने जनहित याचिका दायर की है। उन्होंने खूंटी की तत्कालीन उपायुक्त पूजा सिंघल की भूमिका की जांच कराने की मांग की है।

## राज्य सरकार ने ग्राम पंचायतों के चयन के लिए सांसदों को लिखा पत्र

**RANCHI :** राज्य सरकार ने सांसद आदर्श ग्राम योजना अंतर्गत सांसदों से ग्राम पंचायतों का चयन करने की अपील की है। इस संबंध में मंगलवार को ग्रामीण विकास विभाग ने सभी सांसदों को पत्र लिखकर इस संबंध में अनुरोध किया है। सांसद आदर्श ग्राम से अभी अधिकांश जिलों में ग्राम पंचायतों का चयन नहीं हो सका है। विभाग ने पाकुड़ व जामताड़ा जिला को छोड़कर अन्य जिलों के उपायुक्तों को भी पत्र लिखा है और सांसदों से समन्वय करते हुए ग्राम पंचायत का चयन कराने का अनुरोध किया है। साथ ही जल्द से जल्द लंबित कार्य को पूरा करने को कहा गया है। ग्रामीण विकास विभाग ने 31 दिसंबर तक आदर्श ग्राम योजना अंतर्गत सभी योजनाओं के डीपीआर से संबंधित बैठक का आयोजन किए जाने के लिए सभी उपविकास आयुक्तों को अलग से निर्देशित किया है।

## खुशखबरी : जल्द पीडीएस दुकानों में मिलेगा चना दाल

### गोदाम से दुकानों तक पहुंचाया जा रहा है दाल

**PHOTON NEWS RANCHI :** झारखंड के पीडीएस लाभुकों के लिए खुशखबरी है। अब उन्हें राशन दुकान से चना दाल भी मिलेगा। गोदाम से चना दाल दुकानों में पहुंचाया जा रहा है। जल्द। ही यह लोगों को मिलने लगेगा। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम और झारखंड राज्य खाद्य सुरक्षा योजना में शामिल परिवारों को झारखंड सरकार प्रति माह एक किलो चना दाल देगी। इसका लाभ राज्य के करीब 65 लाख से अधिक राशन कार्डधारी परिवारों को मिलेगा। राशन कार्डधारियों को दाल देने के लिए राज्य सरकार ने बजट में करीब 500 करोड़ का प्रावधान चालू वित्त वर्ष में किया है। लाभुकों को एक रुपये में एक किलो चना दाल दिया जायेगा। दिसंबर महीने में जो दाल मिलेगा, वह सितंबर माह का होगा। लाभुक को अपने-अपने पीडीएस दुकान से दाल प्राप्त कर सकते है। खाद्य आपूर्ति विभाग ने नेशनल एग्रीकल्चर को-ऑपरेटिव मार्केटिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया (नेफेड) से 55 रुपये किलो की दर से चना की खरीद की है। इस पर नेफेड ने 15 रुपये प्रति किलो प्रोसेसिंग की राशि सब्सिडी के तौर पर छूट दी है।

## 6 जनवरी को पतरातू में केंद्रीय समिति की बैठक

**RANCHI :** आजसू पार्टी सुप्रीमो सुदेश कुमार महतो की अध्यक्षता में 6 जनवरी को पतरातू (रामगढ़) में केंद्रीय समिति की बैठक होगी। साथ ही शपथ ग्रहण समारोह भी आयोजित होगा। बैठक में पार्टी के केंद्रीय पदाधिकारी, केंद्रीय सदस्य, विधानसभा प्रभारी, जिला प्रभारी, जिलाध्यक्ष एवं सचिव, जिला परिषद अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं सदस्य, प्रमुख एवं उपप्रमुख, महानगर अध्यक्ष एवं सचिव भाग लेंगे। इसके अलावा साथ ही सभी अनुषंगी इकाई (अखिल झारखण्ड महिला संघ, अखिल झारखण्ड छात्र संघ, आजसू बुद्धिजीवी मंच, अखिल झारखण्ड श्रमिक संघ, अखिल झारखण्ड किसान संघ, अखिल झारखण्ड अधिवक्ता संघ, अखिल झारखण्ड उद्योग एवं व्यापार संघ, अखिल झारखण्ड पिछड़ा वर्ग महासभा, अखिल झारखण्ड अल्पसंख्यक महासभा, अखिल झारखण्ड अनुसूचित जनजाति महासभा, अखिल झारखण्ड अनुसूचित जाति महासभा एवं आजसू पार्टी कला-संस्कृति प्रकोष्ठ) के केंद्रीय अध्यक्ष एवं महासचिव भी उपस्थित रहेंगे।

### प्रधान सचिव ने राज्यस्तरीय कार्यक्रम की तैयारियों का लिया जायजा

## कार्यक्रम के भव्य आयोजन की जिम्मेदारी संबंधित अधिकारियों की : विनय कुमार चौबे

मोहराबादी मैदान में तैयारियों का जायजा लेते मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव।

**PHOTON NEWS RANCHI :** मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव विनय कुमार चौबे ने बुधवार को मोहराबादी मैदान में 29 दिसंबर को आयोजित होने वाले राज्यस्तरीय कार्यक्रम की तमाम तैयारियों का जायजा लिया। उन्होंने अब तक गयी तमाम तैयारियों की जानकारी लेते हुए सभी संबंधित पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। चौबे ने अधिकारियों से विशेष रूप से कहा कि यह आयोजन भव्य तरीके से बिना किसी परेशानी से संपन्न हो। इसको लेकर हर एक तैयारी का बारीकी से निरीक्षण करें ताकि यह कार्यक्रम भव्य तरीके से सम्पादित हो सकें। प्रधान सचिव ने कहा कि यह कार्यक्रम राज्य के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। कार्यक्रम में भारी भीड़ होगी, जिसके लिए तमाम व्यवस्था चाक-चौबंद रखने की आवश्यकता है। लोग इस कार्यक्रम के साक्षी बनेंगें। उन्हें कार्यक्रम देखने में कोई असुविधा ना हो। इस अवसर पर उपायुक्त राहुल कुमार सिन्हा, अपर जिला दंडाधिकारी (विधी-व्यवस्था) राजेश्वर नाथ आलोक, जिला नजारत उप समाहर्ता केवल कृष्ण अग्रवाल, जिला जन संपर्क पदाधिकारी डॉ. प्रभात शंकर और इस आयोजन से जुड़े तमाम अधिकारी उपस्थित थे।

### सर्टिफिकेट मिलने के साथ ही बन जाएगा पहला सरकारी अस्पताल, बेहतर चिकित्सीय सुविधा होगी उपलब्ध

## नए वर्ष में सदर अस्पताल को मिल जाएगा एनक्यूएएस का दर्जा

**PHOTON NEWS RANCHI :** सदर अस्पताल पहला सरकारी अस्पताल होगा जिसे अब नेशनल क्वालिटी एश्योरेंस स्टैंडर्ड (एनक्यूएएस) का सर्टिफिकेट मिलेगा। साथ ही रैंकिंग के अंक भी जारी की जाएगी। इस दर्जा को पाने के बाद अस्पताल में कई विभागों के साथ विशेषज्ञ होंगे, जिनसे मरीजों को बेहतर इलाज की सुविधा मिल सकेगी। उम्मीद जतायी जा रही है कि एनक्यूएएस का दर्जा जनवरी माह से अस्पताल को मिल जाएगा। अगर सदर अस्पताल को एनक्यूएएस का दर्जा मिल जाता है तो अस्पताल को केंद्र से स्पेशल फंड मिलेगा, जो 500 बेड के लिए 50 लाख रुपये तक का होगा। जिसका इस्तेमाल मरीजों को उच्च स्तरीय सेवाएं उपलब्ध करवाने व अस्पताल के विकास में होगा। सिविल सर्जन डा. प्रभात कुमार बताते हैं कि एनक्यूएएस की केंद्रीय टीम सदर अस्पताल के पूरी व्यवस्था का जायजा ले रही है। जिसके बाद रैंकिंग जारी किया जाएगी। अस्पताल में जिस तरह की व्यवस्था दुरुस्त की गई है उससे इस बार एनक्यूएएस का दर्जा मिल सकेगा। मालूम हो कि इस दर्जा को को पाने के लिए करीब 200 मापदंडों को पूरा किया जाता है। जिसमें अस्पताल की स्वच्छता और गुणवत्ता मानकों को देखा जाता है। इस बीच अस्पताल को और भी बेहतर बनाने के लिए मरीजों का डिजिटल रिकार्ड बनाया जा रहा है। यह पिछले 20 वर्षों का रिकार्ड होगा, जिसमें इलाज से लेकर मरीज के डिसचार्ज होने तक की बात होगी। प्रबंधन डिजिटल रिकार्ड के साथ-साथ हार्ड कापी भी रख रहा है। यह रिकार्ड किसी भी अस्पताल के लिए जरूरी है और अभी तक डिजिटल रिकार्ड नहीं बन पाया था।

### मरीजों की मौत का किया गया ऑडिट

एनक्यूएएस का दर्जा पाने के लिए मरीजों की मौत का ऑडिट शुरू कर दिया गया है। जिसमें देखा जा रहा है कि मरीज की मौत की वजह से लेकर उसके उपचार की जानकारी देखा जा रहा है। इस आडिट में जो गलतियां सामने आएगी उसे कैसे ठीक किया जाए इसकी जानकारी दी जाएगी। साथ ही मरीजों के इलाज की व्यवस्था से लेकर अस्पताल की साफ-सफाई को भी दुरुस्त करने का काम शुरू किया जा रहा है। लगातार स्टाफ नर्स, स्वास्थ्य कर्मियों से लेकर डाक्टरों को क्वालिटी मैनेजमेंट की ट्रेनिंग दी जा रही है। ताकि एनक्यूएएस का सर्टिफिकेट मिलने में समस्या ना आए। सदर अस्पताल में अभी दवाओं की काफी कमी है, जिसे भी पूरा किया जा रहा है। इसे लेकर सिविल सर्जन बताते हैं कि जरूरी दवाओं की आपूर्ति कर ली गई है। सदर अस्पताल के डाक्टरों द्वारा लिखे जा रहे प्रिस्क्रिप्शन का आडिट शुरू कर दिया गया है। जिसमें जो गलतियां है उसे सुधारने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

## पुलिस ने ब्राउन शुगर के साथ एक आरोपी को दबोचा

**CRIME REPORTER RANCHI :** गोंदा थाना पुलिस ने ब्राउन शुगर के साथ युवक को गिरफ्तार किया है। युवक की गिरफ्तारी सीसीएल गांधी नगर स्थित जूनियर डीएवी स्कूल के पास से हुई। युवक का नाम प्रशांत है। वह मूल रूप से बिहार के औरंगाबाद का रहने वाला है, और वर्तमान में ब्लैक डायमंड अपार्टमेंट गांधी नगर क्वार्टर नंबर-जी-1 में रहता हैं। प्रशांत सिंह के पहने हुए कपड़े की तलाशी ली गई तो पैंट के दोनों पॉकेट से कुल 130 एल्युमिनियम फाइल कोटेट छोटा पुड़िया मिला जिसे खोलकर देखा गया तो ब्राउन शुगर जैसा भूरा रंग का पाउडर मिला। जिसे विधिवत सूची तैयार कर जब्त किया गया। जब्त ब्राउन शुगर के संबंध में पूछताछ करने पर उसने संतोषजनक जवाब नहीं दिया और कागजात प्रस्तुत नहीं किये।

BRIEF NEWS

## सिटी एसपी ने किया बिष्टुपुर थाना का निरीक्षण दिए कई दिशा-निर्देश

**JAMSHEDPUR :** गुरुवार को सिटी एसपी मुकेश कुमार लुणायत ने बिष्टुपुर थाना का निरीक्षण किया। निरीक्षण के क्रम में उन्होंने थाना अभिलेखों की गहनता से जांच की। इसके साथ ही लंबित कांडों, वारंट, इश्तेहार, कुर्की आदि के त्वरित निष्पादन करने के आदेश दिए। उन्होंने वारंटियों, फिरारियों की गिरफ्तारी हेतु छापामारी अभियान चलाने, बैंक व एटीएम पर विशेष निगरानी रखने के साथ-साथ क्षेत्र में अड्डाबाजी, आपराधिक गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए सघन गश्ती करने का निर्देश दिया। नए साल को में पर्यटन स्थल और पिकनिक स्पॉट की निगरानी करने आदि के संबंध में उपस्थित पुलिस पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इससे पूर्व सिटी एसपी को थाना परिसर में गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। बता दें कि सिटी एसपी लगातार विभिन्न थानों का निरीक्षण कर पुलिस पदाधिकारियों को जरूरी दिशा-निर्देश दे रहे है।

## पद्मश्री छुटनी महतो ने भोलाडीह में बांटे कंबल

**JAMSHEDPUR :** अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत स्वर्ण जयंती वर्ष आयोजन समिति के द्वारा आज पद्मश्री छुटनी महतो के गांव भोलाडीह में ग्रामीणों के बीच कंबल भेंट का कार्यक्रम आयोजित किया गया। आयोजन समिति की अध्यक्ष पद्मश्री छुटनी महतो ने उन महिलाओं के बीच कंबल भेंट किया जिन को डायन के संदेह में रखकर प्रताड़ित किया जा रहा है और जो अपने जीवन में संघर्षरत हैं। अपने संबोधन में छुटनी ने कहा कि व्यक्ति का सशक्तिकरण उसके जागरूकता और वैचारिक सबलता पर निर्भर करता है।

## निजी सिक्योरिटी गार्ड को न्यूनतम वेतन दिलाने के लिए डीएलसी को सौंपा ज्ञापन

**JAMSHEDPUR :** अधिकारियों की एक टीम बनाकर निजी सिक्योरिटी गार्ड को मिलने वाले वेतन की सघन जांच करके न्यूनतम मजदूरी बैंक खाते के माध्यम से मिलना सुनिश्चित किए जाने एवं निजी सिक्योरिटी गार्ड को न्यूनतम मजदूरी से कम वेतन देने वाले एजेंसी तथा नियोक्ता पर श्रम विभाग के नियमानुसार कार्रवाई किए जाने की मांग को लेकर आज पुरेंद्र ने श्रमायुक्त जमशेदपुर को ज्ञापन सौंपा है। उनके साथ आदित्यपुर-गम्हरिया विकास समिति का एक प्रतिनिधिमंडल भी शामिल था। जो आदित्यपुर नगर परिषद के पूर्व उपाध्यक्ष एवं प्रदेश महासचिव राजद सह प्रभारी पूर्वी सिंहभूम पुरेंद्र नारायण सिंह के नेतृत्व में उप श्रमायुक्त कोल्हान राकेश प्रसाद से मिले। पुरेंद्र नारायण सिंह ने उप श्रमायुक्त को बताया कि औद्योगिक इकाइयों, वाणिज्यिक संस्थानों एवं अन्य स्थानों पर कार्यरत निजी सिक्योरिटी एजेंसी का शोषण चरम सीमा पर है। इसके लिए एक तरफ जहां एजेंसी जिम्मेवार है, वही नियोक्ता भी कम जिम्मेवार नहीं है।

## मानगो में बंद घर से दस लाख के आभूषण की चोरी

**JAMSHEDPUR :** मानगो थाना अंतर्गत पोस्ट ऑफिस रोड आदर्श नगर निवासी जितेंद्र पांडे के घर से चोरों ने लगभग दस लाख रुपए के सोने के आभूषणों की चोरी कर ली। जितेंद्र पांडे ने बताया कि दो दिन पूर्व वे अपने भाई के घर बमार्माइस ईस्टप्लांट बस्ती गए हुए थे। बुधवार की शाम जब वे अपने घर लौटे तो घर का मुख्य दरवाजा बंद था, जबकि बालकोनी का दरवाजा खुला हुआ था। चोर कहां से प्रवेश किये खुद उन्हें यह समझ में नहीं आया। लेकिन जब कमरे में गए तो अलमीरा और उसका लॉकर खुला हुआ पाया। उसमें रखे लगभग दस लाख रुपए के आभूषण डब्बे सहित गायब थे।

# धोखाधड़ी, रंगदारी व हरिजन एक्ट के आरोप में कारोबारी गिरफ्तार

## आरोपी विनोद देबुका को पुलिस ने भेजा जेल, दो अन्य फरार

**PHOTON NEWS JAMSHEDPUR :** चांडिल थाना की पुलिस ने धोखाधड़ी, रंगदारी मांगने व हरिजन एक्ट के तहत दर्ज मामले में एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर जेल भेजा है। चांडिल थाना प्रभारी दिनेश ठाकुर ने बताया कि इस मामले में चांडिल थाना में आसनबनी निवासी दुमका सिंह के बयान पर 23 जुलाई को चितरमल धूत, विनोद कुमार देबुका और निशांत धूत पर मामला दर्ज कराया था। चितरमल धूत जुगसलाई पुरानी बस्ती रोड में रहते है। मामले में उनके बेटे निशांत धूत भी आरोपी है। जबकि एक आरोपी विनोद कुमार देबुका कदमा रामनगर में रहते हैं और उनका साकची मिल एंड गोडाउन एरिया में प्लाइबोर्ड की दुकान है।

आरोपी विनोद कुमार देबुका।

**जान मारने की भी दी थी धमकी**

मिली जानकारी के अनुसार चांडिल के आसनबनी निवासी दुमका सिंह के पिता दुर्गाचरण भूमिज के नाम से खतियानी जमीन पर इन व्यापारियों द्वारा कब्जा कर गलत तरीके से जमीन रजिस्ट्री करवाकर निर्माण कार्य करवाया जा रहा था। इस मामले में चांडिल थाना की पुलिस ने एक आरोपी विनोद कुमार देबुका को बुधवार को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। उनके खिलाफ पुलिस ने कोर्ट से वारंट लिया था। दुमका सिंह ने पुलिस को बताया कि उनके पिता दुर्गा चरण भूमिज उर्फ दुर्गा सिंह के नाम से एक खतियानी जमीन है। उनका भाई गणेश सिंह अनपढ़ है। तीनों आरोपियों ने उसके भाई गणेश सिंह को झांसे में लेकर जमीन की रजिस्ट्री करवा ली और उसपर निर्माण कार्य शुरू कर दिया। घटना 15 मार्च 2021 की है। विरोध करने पर विनोद कुमार देबुका एवं चितरमल धुत ने गाली गलौज करते हुए मारपीट की। बाद में भाई गणेश सिंह से दो करोड़ की जमीन 21 लाख रुपये में रजिस्ट्री करा ली। एडवांस के रूप में भाई को को 50 हजार रुपये दिए। आरोपियों ने फोन कर जान से मारने की धमकी भी दी। उनलोगों ने 26 मई को जबरन बाउंड्री वाल का काम शुरू किया था।

## मोबाइल लूट का एक आरोपी धराया, छह मोबाइल बरामद

**JAMSHEDPUR :** गोलमुरी पुलिस ने मोबाइल लूट के एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। इसके पास से छह मोबाइल बरामद हुआ है, जिसमें लूटा गया मोबाइल भी शामिल है। गिरफ्तार आरोपी 21 वर्षीय शिवा सोना उर्फ शिवा लोहार सीतारामडेरा के भुइयां बस्ती का रहने वाला है। पुलिस ने आरोपी को पूछताछ के बाद गुरुवार को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। इस मामले में गोलमुरी गाढ़ाबासा के मथुरा बगान निवासी सुनील कुमार साहनी ने थाना में 25 दिसंबर को एक प्राथमिकी दर्ज करवाई थी। अपनी शिकायत में सुनील कुमार ने मोबाइल लूटने और चोट पहुंचाने का आरोप लगाया था। मामला दर्ज होने के बाद पुलिस ने त्वरित कारवाई करते हुए छापामारी कर 48 घंटे के भीतर कांड का उद्भेदन कर दिया और आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। छापामारी दल में गोलमुरी थाना प्रभारी राजीव रंजन, एसआई निलेश कुमार और हवालदार अरुण पासवान शामिल थे।

गिरफ्तार आरोपी शिवा लोहार।

## ताइक्वांडो के एसजीएफआई नेशनल स्कूल गेम्स में तीन खिलाड़ी चयनित

**CHAIBASA :** मध्य प्रदेश में आगामी 1 से 4 जनवरी तक होने वाले ताइक्वांडो के एसजीएफआई नेशनल स्कूल गेम्स में कार्मेल स्कूल चक्रधरपुर के तीन खिलाड़ी स्वाती गोप, याना सोय, सावन मुखी तथा आदर्श विद्यालय देवगांव की खुशी प्रधान झारखंड का प्रतिनिधित्व करेंगे। खिलाड़ियों का चयन राज्य स्तर पर रांची में आयोजित ताइक्वांडो प्रतियोगिता के दौरान किया गया है। जिसमें इन सभी खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन दिखाते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया है। खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करने और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए जिला शिक्षा पदाधिकारी अभय कुमार शील तथा जिला खेल पदाधिकारी रुपा रानी तिर्की ने खिलाड़ियों से बात की। कहा आप इतनी आगे जीत कर आये हैं इसके लिए बहुत बहुत बधाई एवं राष्ट्रीय स्तर पर भी आपको बेहतर प्रदर्शन करना है और पदक प्राप्त कर लौटना है। साथ ही खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दी और विजय होकर लौटने की कामना की। मौके पर पश्चिमी सिंहभूम जिला ताइक्वांडो संघ के सचिव अनुराग शर्मा, कोच संतानू महतो उपस्थित थे।

## रोगी कल्याण समिति की बैठक, 24 बिंदुओं पर हुई चर्चा, प्रस्ताव पारित

बैठक में शामिल रोगी कल्याण समिति के सदस्य। ● फोटोन न्यूज

**PHOTON NEWS CHAIBASA :** चक्रधरपुर के अनुमंडल अस्पताल में बुधवार को रोगी कल्याण समिति की बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष सह विधायक सुखराम उरांव ने किया। जहां प्रखंड प्रमुख ज्योति सिजुई, सीओ गिरजानंद किस्कू, कार्यपालक पदाधिकारी राहुल यादव, प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ अंशुमन शर्मा समेत एनजीओ और समाजसेवी मौजूद थे। बैठक में 24 बिंदुओं पर चर्चा करते हुए प्रस्ताव पारित किया गया। जिसमें अस्पताल के पुराने भवन की मरम्मत करने, अस्पताल के लिए बैटरी की खरीदारी करने, अस्पताल में आवश्यक अनुसार प्लास्टिक टेबल चेयर, बड़ा दरी की खरीदारी करने, कंप्यूटर ऑपरेटर की मानदेय बढ़ाने का प्रस्ताव पारित किया गया। इसके अलावा उप स्वास्थ्य केंद्र हाथिया में आयुष्मान मित्र का पदस्थापन करने, चादर व मच्छरदानी की खरीदारी करने, पुराना अस्पताल के विभिन्न मुख्य यूनिट में सीसीटीवी कैमरा लगाने, डाटा ऑपरेटर का 5 प्रतिशत मानदेय वृद्धि करने, गर्भवती माता को आयुष्मान भारत के मध्य से दवा मेडिकल उपकरण की व्यवस्था करने, एक्स-रे मशीन के साथ-साथ टेक्नीशियन की व्यवस्था करने, अस्पताल के अंदर नाली का निर्माण करने जैसे कई बिंदुओं पर प्रस्ताव पारित किया गया। इस मौके पर समाजसेवी केशव मिश्रा, अस्पताल के प्रधान लिपिक पवन कुमार, अकाउंटेंट रवि भूषण सिंह, एकजुट संस्था के पदाधिकारी समेत अन्य मौजूद थे।

# आदिवासी हो समाज युवा महासभा ने ग्रामीणों संग की बैठक, पिछड़ेपन के कारणों पर की चर्चा

**PHOTON NEWS CHAIBASA :** आदिवासी हो समाज युवा महासभा की टीम एवं सेरेंगसिया ग्राम के ग्रामीणों ने एक बैठक कर सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक पिछड़ापन के कारणों के संबंध में चर्चा की। इसमें ग्रामीण क्षेत्र में बढ़ रही जनसंख्या और सामाजिक भटकाव के कई बिंदुओं को चर्चा में शामिल किया गया। शिक्षा तथा जागरूकता के अभाव में सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक रूप से शोषण एवं अपेक्षा होने की विभिन्न पहल्लुओं को समझने का प्रयास हुआ। आदिवासी हो समाज के लोग मूल संस्कृति में न रहकर हिंदुत्व और ईसाईयत की ओर अपने समाज से अलग हो रहे हैं। इस तरह के बाहरी आक्रमण और मंदिर-चर्च के प्रलोभन से आदिवासी समाज के भोले-भाले लोगों को भटकाए जाने से सामाजिक नुकसानों पर चिंता जाहिर किया गया।

बैठक में शामिल आदिवासी हो समाज के लोग। ● फोटोन न्यूज

आदिवासी हो समाज युवा महासभा के राष्ट्रीय महासचिव गब्बर सिंह हेंब्रम ने समाज के लोगों को आदिवासी हो समाज महासभा से सांगठनिक जुड़ाव, सामाजिक कार्यक्रम, अधिवेशन, महोत्सव, सम्मेलन सहित अन्य-अन्य कार्यक्रम में भाग लेने के लिए अपील की। आदिवासी हो समाज युवा महासभा के तत्वधान में नेशनल आदिवासी रिवाईबल एसोशिएशन, सिंगी एंड सिंगी सोसायटी जैसे स्वयं सेवी टीम द्वारा डायन-प्रथा-कुरीति, अंधविश्वास सामाजिक बुराईयां आदि के खिलाफ चल रहे कार्यक्रम के बारे में जानकारी देते हुए सामाजिक विकास हेतु सहयोग करने का सुझाव दिया।

हेम्ब्रम ने कहा कि बाईक रैली के माध्यम से हो समाज का ऐतिहासिक घटना 1 जनवरी को खरसावां और 2 जनवरी को सेरेंगसिया-जगन्नाथपुर में बलिदान देनेवालों को श्रद्धांजलि दिया जाए। यह भी बताया गया है कि सेरेंगसिया घाटी के लड़ाई की वास्तविक तिथि 2 जनवरी को है। तो उनके बलिदानी का तिथि में ही सच्ची श्रद्धांजलि दिया जाए। ऐसे ऐतिहासिक घटनाओं को सिर्फ मनोरंजन के उद्देश्य से न जोड़े।

## ठंड से बचाव के लिए विधायक दीपक बिरुवा ने जरूरतमंदों व बुजुर्गों के बीच बांटे कंबल

**PHOTON NEWS CHAIBASA :** बढ़ते ठंड को देखते हुए विधायक दीपक बिरुवा ने अपने स्तर से बुधवार को टोंटो प्रखंड के पुरनापानी में समाज के निर्धन असहाय जरूरतमंदों के बीच कंबल वितरण किया। ठंड में कंबल मिलते ही गरीबों के चेहरे खिल गए। धीरे-धीरे बढ़ रही कड़ाके की ठंड एवं सर्दी के मौसम को देखते हुए गरीब एवं जरूरतमंद व्यक्तियों को ठंड से बचाव के लिए पुरनापानी के बुजुर्गों के बीच कंबलों का वितरण किया। विधायक जी ने कहा कि अत्याधिक ठंड व शीतलहर से उत्पन्न होने वाली समस्याओं को देखते हुए निराश्रित एवं असहाय तथा कमजोर वर्ग के असुरक्षित व्यक्तियों को राहत पहुंचाने के उद्देश्य से कंबलों का वितरण किया जा रहा है। ताकि ठंड से कोई भी जन हानि नहीं हो। ठंड के बीच कंबल पाकर लोगों के चेहरे में खुशी झलक आई। वही कंबल मिलने के बाद लोगों ने विधायक के प्रति आभार व्यक्त किया। इस दौरान विधायक जी ने लोगों की समस्याएं सुनी और समस्याओं के समाधान का भरोसा दिया। मौके पर ग्रामीण मुंडा बिपिन सुंडी, टोंटो प्रखंड 20 सूत्री क्रियान्वयन समिति अध्यक्ष मुन्ना सुंडी, जिला परिषद् सद्स्य राज नारायण तुबिद, दिनेश कुमार तुम्बलिया, सिकुर सुंडी, सुरेश सुंडी, बालवीर लुगुन, सुनील गोप, कितामोहन सुंडी, मनोज दास, राजेंद्र सुंडी, बुधन सिंह, दिनेश देवगम, चंबरा सुंडी समेत अन्य उपस्थित थे।

कंबलों का वितरण करते विधायक दीपक बिरुवा। ● फोटोन न्यूज

### अंतर जिला ताइक्वांडो में बिरसा मुंडा एकेडमी के खिलाड़ियों का शानदार प्रदर्शन

# 20 मेडल के साथ बेस्ट एक्टिव टीम ने जीता अवार्ड, किये गये सम्मानित

**PHOTON NEWS CHAIBASA :** दो दिवसीय कोल्हान अंतर जिला ताइक्वांडो जमशेदपुर के कदमा के मंगल सिंह क्लब में चाईबासा के बिरसा मुंडा ताइक्वांडो अकेडमी के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए कुल 20 मेडल के साथ बेस्ट एक्टिव टीम का अवार्ड अपने नाम कर शहर और अपने क्लब का नाम और रोशन किया। विदित हो कि 30वां कोल्हान इंटर जिला स्कूल/क्लब सब जूनियर प्रतियोगिता 25 दिसंबर से 26 दिसंबर तक चला।

। ● फोटोन न्यूज

इस प्रतियोगिता में तीनों जिले से 633 खिलाड़ियों ने अपना प्रदर्शन किया। जिसमें मुख्य रूप से रेगुलर खिरोगी वर्ग, पुमसे वर्ग के साथ प्रेशर खिरोगी वर्ग का जबरदस्त प्रदर्शन हुआ। बुधवार को बिरसा मुंडा ताइक्वांडो अकादमी के उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को बिरसा मुंडा इंडोर स्टेडियम के परिसर में विशिष्ट अतिथि के रूप में आए युवा खिलाड़ियों के प्रेरक बने निशांत रंजन के साथ क्लब के सलाहकार मास्टर इरशाद एवं क्लब के निर्देशक सह मुख्य कोच विजय प्रताप ने मेडल पहनकर एवं मिष्ठान खिलाकर खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया।

मौके पर निशांत रंजन ने कहा कि आप लोग जिस उम्र में इस तरह का कार्य कर रहे हैं, सचमुच आप लोग एक प्रेरक के रूप में है, एक प्रेरणास्त्रोत के रूप में है। आप लोग जिस तरह से मेडल जीत कर लाए हैं, यह साबित करता है कि आप लोग इसके लिए कितना मेहनत किए होंगे। मेरा बस आप लोगों से यही आज के इस मौके पर निवेदन रहेगा कि आप अपनी मेहनत को जारी रखें, क्योंकि मेहनत कभी बेकार नहीं जाती है, और एक दिन आप लोग देश के साथ अपने परिवार का नाम भी रोशन करेंगे।

क्लब के निर्देशक सह मुख्य कोच विजय प्रताप ने कहा कि सचमुच हमारा क्लब ने जो वहां अपना प्रतिभा दिखाई है, और पूरे कोल्हान के तीनों जिलों से आए खिलाड़ियों के बीच अनुशासन का पाठ पढ़ाया है, सचमुच हम सबों के लिए बहुत ही गर्व की बात है। इसीलिए तो हमारे क्लब को ₹बेस्ट एक्टिव टीम₹ का प्रस्तुति पत्र के साथ नगद पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है।

# सेरसा को आठ विकेट से पराजित कर यंग झारखंड लगातार तीसरी बार बना चैंपियन

### सत्यम ने 13 रन देकर चार विकेट व आयुष ने 9 रन देकर तीन विकेट झटके

**PHOTON NEWS CHAIBASA :** आयुष पाल और सत्यम यादव की घातक गेंदबाजी और कप्तान हर्ष कुमार की शानदार बल्लेबाजी की बदौलत यंग झारखंड क्रिकेट क्लब चाईबासा ने सेरसा चक्रधरपुर को एकतरफा मुकाबले में आठ विकेट से पराजित कर लगातार तीसरी बार विजेता होने का गौरव प्राप्त किया।

यंग झारखंड की टीम व आयोजन समिति के सदस्य। ● फोटोन न्यूज

चाईबासा के बिरसा मुंडा क्रिकेट स्टेडियम मैदान पर खेले गए फाईनल मैच में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए सेरसा चक्रधरपुर की पूरी टीम 26.4 ओवर में मात्र 99 रन पर सिमट गई। कमल गोप ने 25, सुदीत ठाकुर ने 23 तथा डेविड सांगा ने 16 रन बनाए। यंग झारखण्ड क्रिकेट क्लब की ओर से सत्यम यादव ने 13 रन देकर चार विकेट तथा आयुष पाल ने 9 रन देकर तीन विकेट हासिल किए। अनिकेत सिंह को दो तथा सन्नी मिश्रा को एक विकेट प्राप्त हुआ।

जीत के लिए निर्धारित लक्ष्य को यंग झारखण्ड क्रिकेट क्लब की टीम ने 17.1 ओवर में मात्र दो विकेट खोकर प्राप्त कर लिया। टीम के कप्तान हर्ष कुमार ने सात चौकों एवं दो छक्कों की मदद से नाबाद 54 रन बनाए। अन्य बल्लेबाजों में आशीष चौधरी ने चार चौकों की मदद से 24 रन तथा प्रज्जवल झा ने तीन चौकों एवं एक छक्का की मदद से 22 रन बनाए।

जीत के बाद आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में विजेता टीम यंग झारखण्ड क्रिकेट क्लब चाईबासा को पश्चिमी सिंहभूम के उप विकास आयुक्त संदीप कुमार मीणा ने तथा उपविजेता टीम सेरसा चक्रधरपुर को अपर उपायुक्त संतोष कुमार सिन्हा ने एसआर रुंगटा ट्राफी के साथ साथ व्यक्तिगत पुरस्कार देकर सम्मानित किया। प्रतियोगिता में मैच ऑफिसियल एवं ग्राउंड्समैन को सदर अनुमण्डल पदाधिकारी अनिमेष रंजन ने पुरस्कृत किया।

बी-डिविजन लीग के लिए सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाजी एवं मैन आफ द सीरीज का पुरस्कार मेघाहातुबुरू क्रिकेट क्लब के विकेटकीपर बल्लेबाज कार्तिक कृष्णा को तथा सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज का पुरस्कार नेशनल क्रिकेट क्लब बड़ा जामदा के सूरज कुमार को सदर अनुमण्डल पदाधिकारी ने व्यक्तिगत पुरस्कार देकर सम्मानित किया। ए-डिवीजन लीग के फाईनल मैच का मैन आफ द मैच का पुरस्कार यंग झारखंड क्रिकेट क्लब केआयुष पाल को, सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज का पुरस्कार यंग झारखंड क्रिकेट क्लब के कप्तान हर्ष कुमार को, सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज एवं मैन आफ द सीरीज का पुरस्कार भी यंग झारखण्ड क्रिकेट क्लब के सत्यम यादव को दिया गया।

पुरस्कार वितरण समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि ने शानदार आयोजन के लिए जिला क्रिकेट संघ के तमाम पदाधिकारियों विशेष रूप से एस आर रुंगटा ग्रुप की सराहना की।

### शहीदी सप्ताह पर सोदर पाठ, कविता, कथा, सबद-कीर्तन का लगा दरबार

# सदस्यों ने स्वयं निभायी शाम के दीवान की प्रक्रिया

**PHOTON NEWS JAMSHEDPUR :** सेंट्रल गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (सीजीपीसी) के इतिहास में पहली बार इनके सदस्यों ने चार साहिबजादों की शहीदी को समर्पित शाम के दीवान की पूरी प्रक्रिया स्वयं निभा कर एक उदाहरण पेश किया। गुरुद्वारा सिंह सभा, मानगो में मंगलवार को देरशाम तक चले दीवान में प्रधान सरदार भगवान सिंह रहरास साहिब का पाठ पढ़ शहीदों को नमन किया। शाम छह बजे से रहरास साहिब के पाठ से शाम के दीवान की शुरूआत की गयी। सीजीपीसी के प्रधान सरदार भगवान सिंह ने स्वयं पाठ करने की इच्छा जतायी और काफी शालीन और गुरमत अनुसार पाठ पूरा किया। सदस्यों द्वारा सोदर का भी पाठ किया गया।

शहीदी को समर्पित शाम के दीवान में शामिल श्रद्धालु। ● फोटोन न्यूज

## प्रेरित करने करने वाला वाकया : भगवान सिंह

इस दौरान धार्मिक कविता और कथा का भी आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य रूप से महासचिव गुरचरण सिंह बिल्ला, उपाध्यक्ष चंचल सिंह, सुखविंदर सिंह राजू, गुरमीत सिंह और हरचरण सिंह ने कथा वाचन किया। जबकि सह सचिव परमजीत सिंह काले ने ह्लसंगते नि मेरा नां गुजरी, मैं गोबिंद दी मां गुजरी, मैं गुजर-गुजर के गुजरी हां, संगते नि मेरा नां गुजरीह्व तथा ह्लमेरे बाजां वाले वरगा कोई होर न सानी ए, दूजा कौण जहान अंदर पुत्रां दा दानी एह्व कविता पाठ कर संगत की आंखें नम कर दीं। इसके आलावा हुकमनामा भी सीजीपीसी सदस्यों द्वारा ही लिया गया। शब्द कीर्तन की सेवा बच्चियों द्वारा की गयी। अंत में समाप्ति की अरदास सीजीपीसी के महासचिव अमरजीत सिंह ने की। सीजीपीसी के सदस्यों द्वारा शाम के दीवान की प्रक्रिया पूरी किये जाने पर हर्ष जताते हुए सरदार भगवान सिंह ने कहा कि यह प्रेरित करने करने वाला वाकया है। उन्होंने कहा, जमशेदपुर में सीजीपीसी के इतिहास में यह पहली बार हुआ है जब सीजीपीसी के सदस्यों ने स्वयं शाम के दीवान की प्रक्रिया पूरी की हो।

### मानगो वसुंधरा एस्टेट में शिव कथा का दूसरा दिन, वृजनंदन शास्त्री ने कहा-

# काशी में साक्षात वास करते हैं महादेव

**PHOTON NEWS JAMSHEDPUR :** मानगो वसुन्धरा एस्टेट (नियर इरीगेशन कॉलोनी) में श्री शिव महापुराण कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ के दूसरे दिन बुधवार को वृन्दावन से पधारे स्वामी वृजनंदन शास्त्री महाराज ने व्यास पीठ से काशी महात्म एवं रूद्राक्ष महिमा का वर्णन का सुंदर व्याख्यान किया। कथा के दौरान प्रसंग के आधार पर कलाकारों ने जीवंत झांकी भी प्रस्तुत की। महाराज श्री ने कहा कि काशी नगरी पतित पावनी गंगा के तट पर बसी हैं। यह भगवान शिव को समर्पित है तथा स्वर्ण मंदिर के रूप में भी जाना जाता है। भगवान शिव का काशी से विशेष महात्य है। इन्हें काशी के नाथ देवता भी कहा जाता है कि जिस बिंदु पर पहले ज्योतिर्लिंग, जो दिव्या प्रकाश में स्थित शिव का प्रकाश है। काशी में घाट और उत्तरवाहिनी गंगा एवं मंदिर में स्थापित शिवलिंग वाराणसी को धर्म, अध्यात्म, भक्ति एवं ध्यान का महत्वपूर्ण केंद्र की ख्याती प्रदान करता है, क्योंकि शिव की नगरी काशी में महादेव साक्षात वास करते हैं। यहां बाबा विश्वनाथ के दो मंदिर बेहद खास हैं। पहला विश्वनाथ मंदिर जो 12 ज्योतिर्लिंगों में नौवां स्थान स्थान रखता हैं।

## रुद्राक्ष का अर्थ है रुद्र का अक्ष

कथावाचक ने आगे रूद्राक्ष की महिमा का वर्णन करते हुए बताया कि रुद्राक्ष का अर्थ है रुद्र का अक्ष। यानी भगवान रुद्र की आंखें। माना जाता है कि रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के अश्रुओं से हुई है। उन्होंने कठोर तप के बाद जब आंखें खोली तो उनके आंखों से जो आंसू भूमि पर गिरे उसी से रुद्राक्ष की उत्पत्ति हुई। शिवपुराण में रुद्राक्ष की महिमा का वर्णन करते हुए भगवान शिव कहते हैं कि रुद्राक्ष मालाधारी मनुष्य को देखकर मैं शिव, भगवान विष्णु, देवी दुर्गा, गणेश, सूर्य तथा अन्य देवता भी प्रसन्न हो जाते है। रुद्राक्ष धारण करना अत्यंत शुभ एवं मंगलकारी है। रुद्राक्ष धारण करने वाले व्यक्ति को सात्विक होना चाहिए।

# छात्रा को ट्रेन से फेंकने वाले गिरफ्तार

## 1500 रुपए में डीलः परीक्षा देने जा रही सलोनी के कटे हाथ-पैर, 5 दिन बाद हुई थी मौत

**मौतमोतिहारी ।** 1500 रुपए के लिए बदमाशों ने 26 साल की सलोनी को चलती ट्रेन से फेंका था। मोबाइल छीनने के लिए एक बदमाश की दूसरे के साथ डील हुई थी। एडवांस में उसे पांच सौ रुपए मिले थे। बाकि के पैसे मोबाइल बेचने के बाद देने की बात हुई थी। सलोनी 17 दिसंबर को एसआई की परीक्षा देने जा रही थी। मोबाइल छीनने के दौरान उसे बदमाशों ने चलती ट्रेन धक्का दे दिया था। इसमें उसके हाथ-पैर कट गए थे। 5 दिन तक पटना में इलाज के बाद उसने दम तोड़ दिया था। सलोनी कुमारी की मौत के मामले का पुलिस ने खुलासा कर दिया है। पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान पश्चिमी चंपारण जिले के मझौलिया थाना क्षेत्र के परसा पूरबरिया टोला निवासी रंजीत कुमार गिरी (19) के रूप में हुई है। रंजीत की निशानदेही पर पुलिस ने दो और लोगों को गिरफ्तार किया है। पूछताछ में रंजीत ने पुलिस को बताया कि सुगौली के शौकत अली उर्फ झून्ना के कहने पर सलोनी से मोबाइल छीना था।रेल एसपी डॉ. कुमार आशीष ने बताया कि 17 दिसंबर को गाडी नंबर 05288 रक्सौल-मुजफ्फरपुर मेमू स्पेशल ट्रेन में सलोनी यात्रा कर रही थी। इस दौरान सुगौली रेलवे स्टेशन पर अज्ञात अपराधियों ने मोबाइल छीनने के दौरान उसे धक्का दे दिया था। जिससे ट्रेन की चपेट में आने से युवती का हाथ-पैर कट गए थे। मोबाइल छीनने के बाद अपराधी ट्रेन से कूदकर भाग गए थे। पीड़िता की पहचान पलनवा थाना क्षेत्र के उच्चीडीह निवासी प्रमोद पाण्डेय की पुत्री सलोनी कुमारी (26) के रूप में हुई थी।पीड़िता को गंभीर हालत में जीआरपी थाने के एसआई ने इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया, जहां गंभीर स्थिति को देखते हुए भर्ती कराया गया था। घटना के पांच दिन बाद 22 दिसंबर को सलोनी की मौत हो गई थी।घटना के अगले दिन ही रेल एसपी ने बेतिया रेंज के ऋढ उमेश कुमार के नेतृत्व में रक्ळ का गठन कर मामले का जांच करने का निर्देश दिया। इसके अलावा केस की गंभीरता को देखते हुए एसपी ने अतनु दत्ता, रेल पुलिस उपाधीक्षक मुख्यालय-01 को जांच के लिया सुगौली भेजा था। इसके बाद वैज्ञानिक अनुसंधान से अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी शुरू की।

## पत्नी के साथ मुख्यमंत्री आवास पहुंचे आनंद मोहन

**पटना ।** पूर्व सांसद आनंद मोहन और पत्नी लवली आनंद सीएम नीतीश कुमार के आवास पहुंचे। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ दोनों की मुलाकात हुई। आनंद मोहन से मुख्यमंत्री की यह मुलाकात को बहुत ही अहम माना जा रहा है। सीएम नीतीश कुमार से मिलने के लिए पांच एमएलसी भी पहुंचे हैं। जेडीयू की विधान पार्षद ने बताया कि सभी एमएलसी सीएम को धन्यावाद ज्ञापित करने के लिए गए थे।

नियोजित शिक्षकों को सरकारी कर्मी का दर्जा देने की मांग विधान पार्षद लंबे समय से कर रहे थे।सरकार की तरफ से उन्हें स्वीकृति मिल गई। यही वजह है कि सीएम से मिलने आए थे। शिक्षकों की तरफ से सम्मिलित रूप से धन्यवाद ज्ञापित करने के लिए एमएलसी संजय सिंह, संजीव सिंह, रेखा सिंह, रीना यादव और कुमुद वर्मा पहुंचे थे। राष्ट्रीय अध्यक्ष ललन सिंह के बदले जाने की चर्चा को उन्होंने खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय अध्यक्ष खुद मना कर चुके हैं। साथ ही कहा कि चुनाव को लेकर कोई चर्चा नहीं हुई है।शिक्षकों के ही अन्य मुद्दे ऐच्छिक स्थानांतरण और अतिथि शिक्षक के मुद्दे पर ही बातचीत हुई है। नए शिक्षक आने तक अतिथि शिक्षकों को भी रहने दिया जाए। इन्हीं बिन्दुओं पर बातचीत हुई।

## चलती बाइक से मारी 2 गोली

**मुजफ्फरपुर।** मुजफ्फरपुर में बुधवार सुबह अपराधियों ने मीट दुकानदार की गोली मारकर हत्या कर दी। 27 साल का मोहम्मद अफरोज घर से दुकान के लिए निकला था। तभी घर से थोड़ी दूर पर बाइक सवार दो बदमाश आए। बदमाशों ने 2 गोलियां मारीं और मौके से भाग निकले। हत्या की पूरी वारदात पास के सीसीटीवी कैमरे में कैद हुई है। इसमें अफरोज पैदल दुकान पर जाता दिख रहा है। थोड़ी देर में बाइक पर 2 लोग आते हैं। चलती बाइक पर ही एकदम से उसे दो गोलियां मारकर भाग जाते हैं।

मामला जिले के मिठनपुरा थाना क्षेत्र का है। हत्या के बाद परिवार और आसपास के लोगों में गुस्सा है। लोगों ने सड़क जाम कर आगजनी भी की है।घटना के बाद अफरोज के परिजन काफी आक्रोशित हो गए। परिजन और स्थानीय लोगों ने नकूलवा चौक को जाम कर दिया। साथ ही आगजनी कर प्रशासन के विरोध जमकर नारेबाजी किया। पुलिस ने काफी मशक्कत के बाद आक्रोशित परिजनों को समझा बुझा कर जाम को समाप्त करवाया। वारदात के बाद मौके पर स्थानीय लोगों की भीड़ जुट गई।

मामले की जानकारी मिठनपुरा थाना की पुलिस को दी गई। सूचना के आलोक पर एएसपी टाउन अवधेश दीक्षित, थाना अध्यक्ष राकेश कुमार दल बल के साथ आनन फानन में मौके पर पहुंचे। शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम में भेज दिया गया। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। पुलिस जब अफरोज के परिवार से मिलने पहुंची तो उसकी मां पुलिस वालों से लिपटकर रो पड़ी।

## दुष्कर्म का आरोपी गिरफ्तार

**किशनगंज ।** किशनगंज से सटे बंगाल सीमा क्षेत्र में नाबालिग के साथ दुष्कर्म का मामला सामने आया है। पुलिस ने हैदराबाद से आरोपी युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी का नाम मोहम्मद अजीत है। वह सालबाड़ी का निवासी है। नाबालिग का आरोप है कि जुलाई में एक दिन वह बाजार से घर लौट रही थी। इस दौरान मोहम्मद अजीत नामक एक युवक ने उसे रोककर उसका फोन नंबर लिया। इसके बाद फोन पर बातचीत कर युवक ने नाबालिग से दोस्ती की। आरोप है कि उक्त युवक ने नाबालिग को एक सुनसान जगह पर बुलाकर उसके साथ दुष्कर्म किया। साथ उसने इस घटना का जिक्र न करने की धमकी भी दी। वारदात के पांच महीने बाद नाबालिग की तबीयत बिगड़ने लगी तो परिजनों ने डॉक्टर से उसकी जांच कराई। जांच के बाद नाबालिग 5 माह की गर्भवती निकली। इसके बाद नाबालिग ने अपने परिवार वालों को पूरी घटना के बारे में बताया। वहीं, पीड़ित के परिवार वालों ने इस संबंध में 3 दिसंबर को प्रधान नगर थाने में एक लिखित शिकायत दर्ज करवाई। शिकायत दर्ज होते ही आरोपी युवक फरार हो गया।

पुलिस ने उसकी तलाश शुरू की।इस दौरान प्रधान नगर थाना की पुलिस को पता चला कि आरोपी युवक हैदराबाद में छिपा हुआ है। इसके बाद पुलिस हैदराबाद जाकर वहां से आरोपी को गिरफ्तार कर ट्रांजिट रिमांड पर लेकर बंगाल के सिलीगुड़ी ले आई है।

## छात्रा के कपड़े उतारे, दौड़ा-दौड़ाकर पीटा

**पटना ।** पटना के मनेर में स्कूल में क्लास रूम में हुए झगड़े के बाद एक छात्रा के साथ मारपीट हुई है। उसके साथ पढ़ने वाली सहेलियों ने ही उसे दौड़ा-दौड़ाकर पीटा है। लड़की का कहना है कि दोनों हमेशा कहती थीं कि तुम नीची जाति की हो। स्कूल में भी मुझसे जलती थीं। मैं अब स्कूल नहीं जाऊंगी।

छात्रा मंगलवार को लोदीपुर बाजार से प्रैक्टिकल कॉपी लेने निकली थी। तभी उसकी दो सहेलियों ने उसे घेर लिया। पीटना शुरू कर दिया। अपने घर ले जाने लगीं। उसने मना किया तो उसके कपड़े उतार दिए। जींस खोल दी। घर में ले जाकर

अपने परिवार के सामने भी मारपीट की। बताया जा रहा है कि सभी लड़कियां 10वीं क्लास में पढ़ती हैं। सहेलियों के घर से भागकर छात्रा ने परिवार को पूरी कहानी बताई। छात्रा की मां ने सहेलियों के खिलाफ मनेर थाने में लिखित आवेदन दिया है। इस दौरान दोनों सहेलियों ने छात्रा को कई जगह दांत से काटकर जख्मी कर दिया। इसके बाद किसी तरह छात्रा उन दोनों के चंगुल से छूटकर अपने घर पहुंची।पीड़ित छात्रा ने बताया कि मंगलवार को मैं प्रैक्टिकल की कॉपी लेने जा रही थी। मेरी दो सहेलियां मुझे पकड़कर अपने घर के अंदर ले गई। सारे कपड़े उतारे और मारने लगी। उसके माता-पिता ने भी मेरे साथ मारपीट की। वो बोलती थीं, तुम नीची जाति की हो। उसके पापा भी मुझे खींचकर अंदर ले जाने लगे। स्कूल में भी वो मुझसे जलती थीं। मैं अब स्कूल नहीं जाऊंगी।पीड़ित छात्रा की मां ने बताया कि मेरी बेटी लोदीपुर बाजार प्रैक्टिकल की कॉपी लाने जा रही थी। इसी दौरान उसकी दो सहेली उसको हाथ से खींचकर घर के अंदर ले जा रही थीं।

## शराब के साथ पकड़े गए तीन युवक

**गोपालगंज ।** कटेया थाना क्षेत्र के गंगुवा मोड़ के पास उत्पाद विभाग की टीम ने गुप्त सूचना के आधार पर वाहन जांच के दौरान एक बाइक पर सवार तीन युवकों की तलाशी ली तो तीनो के शरीर में टेप से चिपका हुआ भारी मात्रा में देसी शराब का टेट्रा पैक बरामद हुआ। शराब के साथ बाइक को जब्त कर तीनो को गिरफ्तार कर लिया और पूछताक्ष के बाद न्यायिक हिरासत में भेजने की प्रकिया में जुट गई है।

गिरफ्तार तस्करों की पहचान कटेया थाना क्षेत्र के छितौना गांव निवासी राजमंगल चौहान का बेटा पिंटू कुमार चौहान, महंथवा गांव निवासी जोगिंदर राम का बेटा अजय कुमार राम के अलावा कुशीनगर जिले के तरेया सुजान थाना क्षेत्र के सलेमगढ़ निवासी बुधु चौहान का बेटा मनु कुमार चौहान शामिल है।उत्पाद विभाग को गुप्त सूचना मिली की बाइक सवार कुछ लोग शराब के साथ यूपी से गोपालगंज आ रहे। प्राप्त सूचना के आधार पर उत्पाद विभाग की टीम ने वाहन जांच के दौरान कटेया थाना क्षेत्र के गंगुवा मोड़ के पास वाहन जांच लगा दी। तभी बाइक सवार युवक यूपी से बिहार में प्रवेश कर रहे थे। तभी उत्पाद विभाग की टीम ने तीनों को रोक कर जब उसकी तलाशी ली तो 165 पीस देसी शराब मिली। उत्पाद अधीक्षक राकेश कुमार ने बताया कि वाहन जांच के दौरान तीन शराब तस्करों को पकड़ा गया है।

## संक्षिप्त डायरी

### पुल के नीचे से मिली लड़की की अधजली लाश

**नालंदा।** नालंदा में बुधवार को एक अधजली लाश मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई। मामला नगरनौसा थाना क्षेत्र अंतर्गत लोदीपुर के मिल्की खंधा स्थित एक पुल के पास का है। फिलहाल शव की पहचान नहीं हो सकी है। शव किसी लड़की की है। लड़की की उम्र 15 से 20 साल बताई जा रही है। ग्रामीण जब खेतों में अपने-अपने काम को लेकर जा रहे थे। तब उन्हें पुल के नीचे से दुर्गंध आई। जब पुल के नीचे झांक कर देखा गया तो एक अधजली लाश पर नजर पड़ी। खबर गांव में फैलते ही लोगों की भीड़ जुट गई।नालंदा में बुधवार को एक अधजली लाश मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई। मामला नगरनौसा थाना क्षेत्र अंतर्गत लोदीपुर के मिल्की खंधा स्थित एक पुल के पास का है। फिलहाल शव की पहचान नहीं हो सकी है। शव किसी लड़की की है। लड़की की उम्र 15 से 20 साल बताई जा रही है।ग्रामीण जब खेतों में अपने-अपने काम को लेकर जा रहे थे। तब उन्हें पुल के नीचे से दुर्गंध आई। जब पुल के नीचे झांक कर देखा गया तो एक अधजली लाश पर नजर पड़ी। खबर गांव में फैलते ही लोगों की भीड़ जुट गई।शव के आसपास पुआल है जिससे यह अंदेशा जताया जा रहा है कि पुआल से ही शव को जलाने का प्रयास किया गया है।

### खेसारी का साग खाने से 11 लोग बीमार

**जहानाबाद ।** जहानाबाद में फूड प्वाइजनिंग के कारण 11 लोग बीमार हो गए। सभी को इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना घोसी थाना क्षेत्र के सोनवा गांव की है। पंचायत समिति सदस्य सतीश कुमार ने कहा कि नोआवा गांव से रामगिरी शर्मा के घर खेसारी का साग आया था। साग तीन घरों में बांटा गया। रात में सभी ने साग का सेवन किया था। साग खाने से शिवानी कुमार (12), शुभम कुमार (4), रूबी देवी (37), स्वीटी कुमार (9), मंजू कुमारी (60), शकुंतला देवी (75), देवेंद्र कुमार (50), रामगिरी सिंह (70), चांदनी कुमार (16), पम्मी कुमारी (32) और सूर्यमणि देवी (50) फूड प्वाइजन के शिकार हुए हैं। सूचना गांव वालों को दी गई। गांव वालों ने सभी को इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया है। तीन की हालत गंभीर बताई जा रही है। बाकी लोगों की हालत स्थिर है। डॉक्टर एके नंदा का कहना है कि सभी का इलाज किया जा रहा है। जांच की जा रही है। फूड प्वाइजनिंग किस कारण हुई है।

### आंख में राख लगाकर लाठी-डंडे से पिटाई

**कैमूर ।** कैमूर के रामगढ़ थाना क्षेत्र के महुआरी गांव में लकड़ी के विवाद को लेकर एक पक्ष से 9 असामाजिक तत्वों ने दूसरे पक्ष के एक व्यक्ति को आंख में राख लगाकर लाठी डंडे से पीट-पीटकर मार डाला। सूचना पर पहुंची रामगढ़ पुलिस घायल को रेफर अस्पताल रामगढ़ लेकर गई। जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। जिसके बाद पुलिस ने पोस्टमॉर्टम के लिए शव को सादर अस्पताल भभुआ भेजा। परिजनों ने गांव के ही नौ लोगों के खिलाफ लकड़ी के विवाद में पीट-पीटकर हत्या का आरोप लगाते हुए प्राथमिकी दर्ज करने के लिए रामगढ़ थाना में आवेदन दिया है। मृतक की पहचान रामगढ़ थाना क्षेत्र के महुअर गांव निवासी शिवमंगल राम के पुत्र मुनीब राम के रूप में हुई है। पुलिस ने चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है।मृतक के पुत्र आकाश कुमार ने कहा कि 2 दिन पहले गांव में ही लकड़ी को लेकर विवाद हुआ था। इसके बाद इसके बाद मेरे पिता जी स्टेडियम के पास स्थित झोपड़ी में सोने गए। बुधवार सुबह दो-तीन बजे के लगभग 9 की संख्या में लाठी डंडा लेकर लोग आए और उनके आंख में राख डालकर पिटाई कर दी। उसकी हत्या कर दी। पुलिस को सूचना देते हुए इनको उपचार के लिए रेफरल अस्पताल रामगढ़ लाए। जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया।

## नकली नमक गुजरात से भेजी गई थी बिहार

**हाजीपुर ।** हाजीपुर में पुलिस ने नमक की बड़ी खेप को जब्त किया है। गुजरात से बिहार पहुंची नकली टाटा नमक की बड़ी खेप को सराय में पुलिस ने जब्त किया है। पुलिस ने 8 धंधेबाजों को गिरफ्तार किया है।

दरअसल पुलिस को खबर मिली की ब्रांडेड कंपनी के नकली रैपर में भारी मात्रा में नमक की खेप को बिहार में खपाने का खेल चल रहा है। रेलवे के बड़े रैक प्वाइंट सराय में पुलिस ने पड़ताल की तो नमक नकली मिला और ब्रांडेड कंपनी के रैपर में पैक किया हुआ था। पड़ताल में पता चला की नामी कंपनी के ब्रांड के नाम के रैपर में पैक कर नमक की खेप को बिहार भेजा गया था। कंपनी के अधिकारियों ने पुलिस को खबर दी, जिसके बाद पुलिस ने ट्रकों में लदे नमक की पड़ताल की। इसमें पता चला कि नमक की पूरी खेप ही नकली थी।

# इंजीनियर के घर 50 लाख की डकैती

**बेगूसराय ।** बेगूसराय में गुरुवार रात एक रिटायर इंजीनियर के घर 50 लाख की डकैती हुई है। हथियार के बल पर 6 बदमाशों ने पूरे परिवार को बंधक बनाया और घर में लूटपाट की। 2 घंटे तक डकैत घर में लूटपाट करते रहे। डकैतों ने पहले घर की लाइट काटी इसके बाद वो दरवाजा खटखटाया। रिटायर इंजीनियर की पत्नी ने दरवाजा खोला। दरवाजा खोलते ही एक-एक कर सभी अंदर घुस गए। सभी के हाथ में लोहे की रॉड थी। वारदात के वक्त घर में रिटायर इंजीनियर और उनकी पत्नी ही मौजूद थे।

अपराधियों ने दोनों के हाथ-पैर बांधे और गोदरेज का ताला तोड़कर ज्वेलरी लेकर भाग निकले। घटना मंसूरचक थाना क्षेत्र के बीरगंज गांव की है। घर में सीसीटीवी भी लगा था, लेकिन आरोपी उसका डीवीआर भी साथ ले गए। मंसूरचक पुलिस पूरे मामले की जांच में जुटी है।रिटायर इंजीनियर राम पुकार घर में सोए हुए थे। करीब छह की संख्या में हथियार बंद डकैतों ने घर में घुसे। रिटायर इंजीनियर राम पुकार महतो और उनकी पत्नी को हथियार के बल पर बंधक बना लिया।

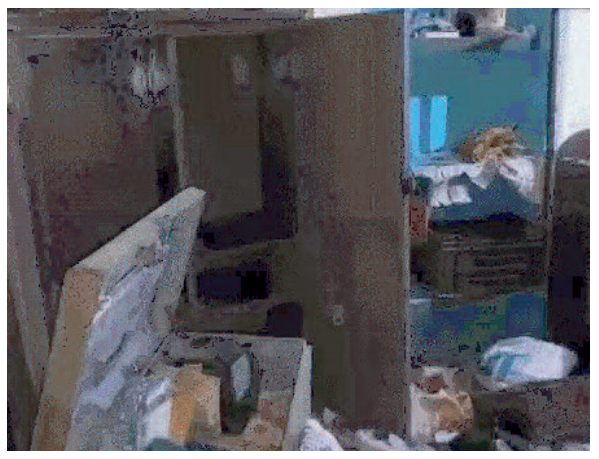

घर में ही दोनों को हाथ पैर बांधकर डकैती की भीषण घटना को अंजाम दिया।डकैतों घर में लगे सीसीटीवी हार्ड डिस्क भी तोड़कर अपने साथ ले गए। रिटायर ओवरसीयर राम पुकार महतो की पत्नी ने लूट का विरोध किया तो अपराधियों ने उन्हें जान से मारने की धमकी दी। इसके बाद वो चुपचाप बैठी रहीं। मौके पर मंसूरचक थाने के पुलिस पहुंचकर पूरे मामले की तहकीकात में जुटी हुई है। इस संबंध में तेघरा डीएसपी रविंद्र मोहन प्रसाद ने बताया है कि एक रिटायर ओवरसीयर के घर में चोरी की सूचना मिली है। पुलिस मौके पर पहुंचकर पूरे मामले की तहकीकात में जुटी हुई है। एसपी योगेन्द्र कुमार ने बताया कि बीती रात मंसूरचक थाना क्षेत्र के बीरगंज क्षेत्र में एक घर में हथियार के बल पर 4 लोगों ने लूट की गई है। सूचना मिलते ही थाना प्रभारी पुलिस बल के साथ घटना स्थल पर पहुंच कर छानबीन कर रहे हैं। कोई हताहत नहीं हुआ है। बदमाश घर में रखे करीब आठ लाख के आभूषण और कैश ले गए हैं। बदमाश सीसीटीवी का डीवीआर भी लेकर चले गए हैं। तेघड़ा डीएसपी डॉ. रविन्द्र मोहन प्रसाद घटनास्थल पर जांच कर रहे हैं। घटनास्थल समस्तीपुर बॉर्डर से करीब एक किलोमीटर है। इसमें समस्तीपुर जिले के गैंग के शामिल होने की आशंका है।

समस्तीपुर जिले के नजदीकी थाने विभूतिपुर से भी मामले में मदद ली जा रही है।

# एक और अवसर

भारतीय कुश्ती को जो प्रकरण तकरीबन एक साल से सता रहा है, रविवार को उसमें एक और मोड़ आया। केंद्रीय खेल मंत्रालय ने नवनिर्वाचित भारतीय कुश्ती संघ (डब्ल्यूएफआई) को भंग कर दिया। जनवरी 2023 में, ओलंपिक पदक-विजेता साक्षी मलिक व बजरंग पुनिया, और विश्व चैंपियनशिप पदक-विजेता विनेश फोगाट ने तत्कालीन डब्ल्यूएफआई अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह और फेडरेशन के प्रशिक्षकों पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया था। बाद में भारतीय जनता पार्टी के इस सांसद को नियंत्रण छोड़ने पर मजबूर किया गया। दिल्ली पुलिस ने उन पर पीछा करने (स्टाकिंग) और उत्पीड़न का मामला दर्ज किया। लेकिन बीते गुरुवार को, उनके पुराने वफादार संजय सिंह को नया अध्यक्ष नियुक्त किया गया। सिंह और बृजभूषण-के-विश्वासपात्रों में शुमार उनके बाकी साथियों ने न सिर्फ 15 में से 13 सीटों पर कामयाबी हासिल की, बल्कि एक भी महिला को नहीं चुना गया। बृजभूषण सिंह के आवास (जो डब्ल्यूएफआई के दफ्तर का भी काम कर रहा था) के बाहर मालाओं से लदे बृजभूषण के बगल में संजय सिंह का खड़ा दिखना और दोनों का विजय चिन्ह दिखाना, यह बताने के लिए काफी था कि नियंत्रण किसके पास है। यह पहलवानों के लिए इतना निराशाजनक था कि रुआंसी साक्षी ने अपने संन्यास का एलान कर दिया, जबकि विनेश ने चेताया कि मौजूदा व्यवस्था में कोई भी महिला कुश्ती को महफूज नहीं समझेगी। शुक्रवार को, बजरंग ने विरोध में पद्मश्री पुरस्कार लौटाने का फैसला किया। शायद, शर्मसार करने वाले इस पूरे घटनाक्रम ने सरकार को आखिरकार कार्रवाई करने पर मजबूर किया। खेल मंत्रालय ने सिंह की ओर से जल्दबाजी में और मनमाने ढंग से किये गये उस निर्णय का भी हवाला दिया, जिसमें उन्होंने डब्ल्यूएफआई के संविधान की बाध्यता के अनुरूप महासचिव (प्रेमचंद लोचब) को विश्वास में लिये बगैर टूर्नामेंटों की बहाली का एलान किया। लोचब डब्ल्यूएफआई के उन दो पदाधिकारियों में से एक हैं जो बृजभूषण के करीबी नहीं माने जाते। अन्य वजहों में संघ के कामकाज को ह्यपूर्व पदाधिकारियों द्वारा नियंत्रित परिसरों, साथ ही जहां कथित तौर पर खिलाड़ियों का यौन उत्पीड़न हुआ उन कथित परिसरोंह्न से संचालित किया जाना शामिल है। संक्षेप में कहें तो, इस पूरी गंद ने वह सबकुछ उजागर कर दिया है जिससे भारत में खेलों का प्रशासन पीड़ित है। भले ही देश खेलों में अपनी श्रेष्ठता साबित करने के मामले में विविधता ला रहा है, मगर जो नौकरशाही खेलों को संचालित करती है वह संरक्षण-की-राजनीति की अवांछित विरासत ढो रही है। प्रमुख खिलाड़ियों के शक्तिशाली पदों पर बैठने का भी कोई फायदा नहीं है, क्योंकि वे ज्यादातर मामलों में अपने उन राजनीतिक आकाओं के आगे नतमस्तक हैं जिन्होंने उन्हें पद तक पहुंचने में मदद की। पहलवानों के मामले में, मशहूर खिलाड़ी पी.टी. ऊषा की अगुवाई वाले भारतीय ओलंपिक संघ ने अपनी शुरूआती प्रतिक्रिया में हिचक दिखायी और जाने-माने खिलाड़ियों से बना एथलीट कमीशन भी चुप्पी साधे रहा।

# मुनासिब ठहराव

भारतीय विज्ञान कांग्रेस (आईएससी) एक ऐसा सालाना जलसा है, जहां देश भर के वैज्ञानिक समुदाय का एक हिस्सा शोध को सामने रखने व उसपर चर्चा करने और विज्ञान का प्रसार करने के लिए इकट्ठा होता है। प्रधानमंत्री द्वारा इसके हरेक संस्करण का उद्घाटन किए जाने और इसमें अक्सर एक या दो नोबेल पुरस्कार विजेताओं की मौजूदगी के चलते इसका एक रूतबा रहा है। लेकिन पिछले कुछ सालों में, आईएससी की प्रतिष्ठा धूमिल हुई है क्योंकि इसने खुद को वैज्ञानिक समुदाय के कुछ सदस्यों द्वारा छद्म वैज्ञानिक दावों, खासतौर से वैसे दावे जो अन्य क्षेत्रों में चल रहे अति-राष्ट्रवादी नजरिए से मेल खाते हैं, को आगे बढ़ाने के एक मंच के रूप में पेश किया है। अब, आईएससी का 109वां संस्करण, जो मूल रूप से 2024 में लखनऊ विश्वविद्यालय में आयोजित किया जाना था, संदेह के घेरे में आ गया है। दरअसल लखनऊ विश्वविद्यालय ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) और आईएससी एसोसिएशन के बीच चल रहे विवाद का हवाला देते हुए इस आयोजन से अपना हाथ खींच लिया है। डीएसटी जहां इस आयोजन के लिए धन मुहैया कराने वाला का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, वहीं आईएससी एसोसिएशन इस जलसे को आयोजित करने वाला डीएसटी के तहत एक स्वायत्त निकाय है। इसके बाद एसोसिएशन ने इस जलसे की मेजबानी के लिए जालंधर में लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी को चुना। लेकिन इस फैसले पर डीएसटी को नाराजगी हुई, जिसमें एसोसिएशन की ओर से की जाने वाली ह्वित्तीय अनियमितताओंह्न का एक अस्पष्ट आरोप भी शामिल था। फिर लवली यूनिवर्सिटी ने भी हाथ खींच लिया। उधर, एसोसिएशन सरकारी हस्तक्षेप का हवाला देते हुए डीएसटी के खिलाफ अदालत में चला गया। एसोसिएशन ने 2024 के आयोजन की मेजबानी के लिए अन्य विश्वविद्यालयों की रुचि जानने के लिए एक नोटिस भी प्रकाशित किया है और नए आयोजन स्थल की खोज के लिए एक समिति का गठन किया है। आईएससी के आयोजन में आया यह ठहराव आईएससी की प्रासंगिकता पर गौर करने का एक मौका है। बेशक कुछ नामचीन वैज्ञानिकों ने 2014 के बाद के आयोजन को भारत में विज्ञान के हित के लिहाज से घातक सर्कस करार दिया है, लिहाजा यह अनिश्चितता उन्हें भले ही परेशान नहीं करे लेकिन आईएससी हर साल हजारों स्कूल और कॉलेज के विद्यार्थियों के साथ-साथ विभिन्न शोधकताओं के व्याख्यानों की भी मेजबानी करता है, जोकि सीखने और जागरूकता बढ़ाने में योगदान करते हैं।

# फिर बढ़ रही कोरोना की तेज रफ्तार

ANALYSIS

ऋतुपर्ण दवे

**देश हो या प्रदेश, जिले हों या नगर या गांव हों या पंचायतें लोग इतनी जल्दी उस दर्दनाक मंजर को भूल भी गए जो हफ्ते, महीने दिन नहीं पूरे दो साल तक दुनिया में तबाही मचाता रहा! वो वाकये भी याद नहीं रहे जो जिन्दगी भर का दर्द दे गए? शायद इसी गलती, चूक या लापरवाही का नतीजा है, जो कोरोना की डरावनी रफ्तार फिर उसी अंदाज में बेखौफ बढ़ती जा रही है।कोविड-19 द्वारा लोगों की जान को लीलना कभी थमा नहीं था। हां, कम या बीच में कुछ वक्त ब्रेक लगने का भ्रम जरूर था। अब दिसंबर आखिरी हफ्ते में आई तेजी ने जनवरी 2020 की याद दिला दी। अभी गंभीर संक्रमण या अस्पताल में भर्ती होने के मामले ज्यादा नहीं होने के कारण लोग हल्के से ले रहे हैं। लेकिन सच्चाई यही है कि नया वैरिएंट जेएन.1 धीरे-धीरे हावी होता जा रहा है जो अधिक संक्रमणीय होकर बहुत तेजी से फैल रहा है। इसके मुख्य लक्षण मुख्य रूप से बुखार के साथ लगातार या रुक-रुक कर हल्की-तेज खांसी, सांस लेने में तकलीफ या सांस नली में दिक्कत, थकान, मांसपेशियों और शरीर में दर्द के साथ ही सिरदर्द, गले में खराश, नाक बहना या बंद रहना है। ये लक्षण इतने आम होते हैं कि लोग जल्द समझ ही नहीं पाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए 60 वर्ष या उससे अधिक उम्र के लोगों को खुद को संक्रमित होने से बचना-बचाना होगा। विशेषज्ञों ने भी वरिष्ठ नागरिकों को खास एहतियात बरतने की सलाह दी है।इस संक्रमण के ताजे रिसर्च ने सबको हैरान कर दिया है। नया वैरिएंट गले को बुरी तरह से प्रभावित करता है जिससे आवाज तक जा सकती है। यह बात भी सामने आई है कि इससे मौतों के बढ़ने के मामले और अस्पतालों में भर्ती होने की संख्या में वैसी बढ़ोतरी नहीं हुई, जैसी कि डेल्टा वैरिएंट के वक्त थी। लेकिन अब इस संक्रमण से स्वाद और गंध के साथ आवाज जाने की संभावना चिकित्सक बता रहे हैं। 15 साल की एक बच्ची ने इस वायरस के चलते अपनी आवाज गंवा दी, जिसके बाद चिकित्सक काफी गंभीर हैं। इस सच्चाई को स्वीकारना ही होगा कि बीते एक पखवाड़े में इससे भले ही चंद मौतें हुईं लेकिन ये चिंताजनक हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, भारत में 24 दिसंबर की सुबह तक 656 केस नए मामले मिले जबकि 23 दिसबंर को 752 मिले थे यह 21 मई, 2023 के बाद अब तक मिले सबसे अधिक हैं। इन मामलों के बाद देश में इस समय कोरोना के सक्रिय मामले 4 हजार के लगभग हो गए हैं। हालांकि पिछले 24 घंटों में केवल एक ही मौत हुई। इधर आंकड़े बताते हैं कि 20 नवंबर से 17 दिसंबर यानी 28 दिनों में विश्व में कोविड के 8.50 लाख से अधिक नए मामले सामने आए और इसी अवधि में इस संक्रमण से 3,000 से अधिक मरीजों की मौतें हुईं। वहीं 17 दिसंबर तक दुनिया भर में कोविड के 77 करोड़ 20 लाख से अधिक मामलों की पुष्टि हो चुकी थी। वहीं लगभग 70 लाख मौतें भी दर्ज हो चुकी हैं। ताजे आंकड़े बताते हैं कि दुनिया में 13 नवंबर से 10 दिसंबर के दौरान 1 लाख 18 हजार से अधिक ऐसे मामले सामने आए जिन्हें अस्पतालों में भर्ती कराना पड़ा तो 1,600 से अधिक को आईसीयू में दाखिल करना पड़ा। इस तरह जो आंकड़े सामने आ रहे हैं वो चिन्ताजनक हैं। जाहिर है यह गंभीर या लगातार खांसी, फ्लू या फेफड़ों से संबंधित ज्यादा पीड़ितों के आंकड़े हैं। वास्तविक आंकड़े इससे कई गुना अधिक होंगे जो इस मुगालते में होंगे कि उनको सर्दी, खांसी या फ्लू जैसी साधारण तकलीफ है। पहले भी यही साधारण बीमारियां असाधारण बन गईं थीं। दिसंबर के दूसरे पखवाड़े में एकाएक 5 मरीजों की मौतों से सभी घबरा गए हैं। हालांकि शनिवार को हुई एक मृत्यु के बाद देश में कोरोना से हुई मौतों की संख्या 5,33,333 पहुंच गई इस तरह मामले की मृत्यु दर 1.19 प्रतिशत दर्ज की गई है जबकि ठीक होने वालों की संख्या 4,44,71,212 हो गई जिससे राष्ट्रीय रिकवरी दर 98.81 प्रतिशत है। आंकड़े और जानकार बताते हैं कि पिछले तीन साल में सर्दियों के दौरान कोरोना बहुत तेज फैला। ठंड बढ़ी नहीं कि फिर कोरोना की शह दिखने लगी। कमोबेश वही ट्रेंड अभी भी बना हुआ है। इस बार भारत में पहला सब वैरिएंट सिंगापुर से आया तिरुचिरापल्ली निवासी था।

25 अक्टूबर को सिंगापुर से लौटा था। उसके संपर्क में कितने लोग आए होंगे और सिंगापुर से कितने कहां-कहां आए-गए होंगे किसे पता? निश्चित रूप से सब जानते हैं कि कोविड टेस्ट तो दूर एयरपोर्ट पर साधारण जांच तक नहीं हुई। अंतरराष्ट्रीय उड़ानों से आने वाले लोग बेखौफ भारत आते-जाते रहे। अब यही बड़ा खतरा है। भारत की सबसे पहली कोरोना मरीज वुहान से आई मेडिकल छात्रा थी जो कोरोना फैलते ही घबरा कर लौटी। 21 जनवरी 2020 को वुहान से कोलकता होते हुए कोच्चि पहुंची। उसमें दोनों एयरपोर्ट पर थर्मल स्क्रीनिंग में वायरस के लक्षण नहीं दिखे। लेकिन 27 जनवरी 2020 को तबियत बिगड़ते ही समझते देर नहीं लगी कि माजरा क्या है? टेस्ट पॉजिटिव निकला। उधर 28 जनवरी तक देश में करीब 450 लोग चपेट में आए जिसमें ज्यादातर केरल से ही थे। फिर तो कोरोना ने कैसे पैर पसारा, हालात किस तरह बेकाबू हुए एक बुरे सपने जैसा था। निश्चित रूप से कोरोना का नया सबवैरिएंट जेएन-1की पूरी प्रकृति नहीं मालूम है। यह बेहद खतरनाक व डराने वाली स्थिति है। सिंगापुर, अमेरिका चीन के बाद यह एसएआरएस-कोव-2 जीनोमिक्स कंसोर्टियम (सार्स कोव-2) यानी आईएनएसएसीओजी की निगरानी से भारत में पकड़ आया जो केरल की एक 79 वर्षीय महिला में मिला। यही कोविड-19 का नया वैरिएंट है जिसे जेएन-1 कहते हैं। अब स्वास्थ्य एजेंसियों की खानापूर्ति कहें या सुस्ती या फिर शासन-प्रशासन की खामोशी या सरकार की व्यस्तता से कहीं वैसे हालात तो फिर नहीं बन जाएंगे? हालांकि यह प्रश्न अभी भविष्य के गर्त में है और वहीं रहा भी आए वही बेहतर है। फिलहाल भारत सरकार ने गाइडलाइन जारी कर दी है और 20 दिसंबर को सभी राज्यों के स्वास्थ्य मंत्रियों की दिल्ली में बैठक के बाद और भी सतर्कता बढ़ाने के सभी राज्यों को निर्देश हुए हैं। हालांकि कागज, ई-मेल और सोशल मीडिया पर दौड़ते आदेश वैसे प्रभावी हो पाएंगे जितने होने चाहिए? जरूरत है पहले जैसी सतर्कता, जनजागरण और स्थानीय पुलिस व पालिका-पंचायत और स्वास्थ्य महकमें के संयुक्त अभियान की जो चेतावनी व कड़ाई दोनों दिखाएं। इधर विश्व स्वास्थ्य संगठन ने नए जेएन-1 कोविड स्ट्रेन को चिंताजनक माना है। इसके देश में22 मामले ही सामने आए हैं। इस वैरिएंट से निपटने खातिर पुणे स्थित सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया जल्द ही महामारी के एक और उछाल को रोकने के लिए टीके बनाने और बेचने की तैयारी में है जिसके नए वेरिएंट के खिलाफ वैक्सीन खातिर लाइसेंस के आवेदन की चर्चा है। इसी ने 2020 में महामारी के दौरान एस्ट्राजेनेका और ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के साथ साझेदारी में कोविशील्ड टीकों का उत्पादन कर लोगों की जान बचाने में मदद की थी। सच है कि पहले भी दुनिया जहान में कोई भी देश कोविड से अछूता नहीं था। सुरक्षा एहतियातों से ही अधिकतर जानें बचीं। लेकिन सभी ने किसी अपने या जान-पहचान वाले को खोने का दर्द झेला है। हैरानी की बात है कि हम साल, सवा साल या कहें चंद महीनों में ही सब भूल गए? बेफिक्री के आलम में ऐसे मशगूल हुए कि याद तक नहीं रखा कि कभी कोरोना था? कोविड-19 के सच को सबने देखा और शायद ही कोई भूल पाया हो। अब मानना ही होगा कि कोरोना अभी जिंदा है जिससे निपटने में मास्क संग दो गज की दूरी और हाथ धोना जरूरी है।

**लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।**

# क्या हमारा समाज हिंसक होता जा रहा है

आप गौर से देखें, तो पायेंगे कि बच्चों व युवाओं में आक्रामकता बढ़ी है। विभिन्न घटनाओं में इसका प्रकटीकरण भी हो रहा है। झारखंड के एक शहर में एक बच्चे की बर्थडे पार्टी में उसके साथियों ने ही उसका गला रेत दिया। खबर आयी कि लोगों को आदर्श जीवन व सफलता का मंत्र देने वाले एक मोटिवेशनल स्पीकर के खिलाफ अपनी पत्नी के साथ मारपीट करने का मामला दर्ज हुआ है। सोशल मीडिया पर इनके फॉलोअर्स की संख्या करोड़ों में है। टीवी की बहस हो या संसद की चर्चा, शाब्दिक हिंसा का चलन बढ़ा है। समाज में इसकी स्वीकार्यता भी बढ़ी है। जैसे हल्के शब्दों ने अब अपना प्रभाव खो दिया है, भारी भरकम शब्द ही अब प्रभावी होते नजर आ रहे हैं। यह भी सच है कि हिंसा का निशाना कमजोर तबके के लोग ज्यादा बनते हैं। मध्यम वर्ग, जो सबसे शांत व संभ्रांत माना जाता था, उसकी हिंसा के अनेक मामले सामने आये हैं। पिछले कुछ समय में अपार्टमेंट में तैनात सुरक्षा गार्डों और अन्य कामगारों के साथ मारपीट की कई घटनाएं हुई हैं। दिल्ली में एक युवा ने एक गार्ड को इसलिए बुरी तरह पीट दिया था, क्योंकि गार्ड ने उसे कार को सही स्थान पर पार्क करने को कहा था। दिल्ली से सटे नोएडा की सोसाइटियां तो बदसलूकी के मामले में बदनाम हैं। एक वीडियो वायरल हुआ, जिसमें एक गार्ड आराम कर रहा था कि अचानक उसके पास दो लोग आते हैं और मारपीट करने लगते हैं। बाद में पता चला कि सोसाइटी में एक महिला किसी गलत जगह पर कार पार्क करना चाहती थी। गार्ड ने इस पर आपत्ति की थी। तब तो महिलाएं चली गयीं, लेकिन बाद में उसने अपने साथियों को बुला कर गार्ड की पिटाई करवा दी। दिल्ली में ही एक महिला पायलट और उसके पति ने एक 10 वर्षीय नाबालिग कामगार लड़की को पीट-पीट कर घायल कर दिया। इसकी भनक पड़ोसियों को लगी, भीड़ आक्रोशित हो गयी और उसने पति-पत्नी की पिटाई कर दी। रोजाना देश के हर हिस्से में ऐसी घटनाएं घटित हो रही हैं। ये घटनाएं बताती हैं कि हम कितने हिंसक होते जा रहे हैं। आप देखें, तो पायेंगे कि युवाओं में अल्फा मेल के प्रति जुनून बढ़ा है। हिंसा पर विमर्श ह्यएनिमलह्न फिल्म की चर्चा के बगैर अधूरा है। इस फिल्म को युवा बहुत पसंद कर रहे हैं, वहीं बुजुर्ग इसकी कड़ी आलोचना कर रहे हैं। रणबीर कपूर इसमें अल्फा मेल की भूमिका में हैं। यह एक ऐसे हिंसक पुरुष का किरदार है, जो अपने दुश्मनों को बेरहमी से खत्म कर देता है। युवा इसे पसंद कर रहे हैं। यही वजह है कि फिल्म सुपरहिट है। इस फिल्म में अल्फा मेल वाला किरदार अपने बदले के लिए अपने दुश्मनों को कभी कुल्हाड़ी से काट रहा है, तो कभी मशीन गन से भून रहा है, तो किसी का गला बड़े ही बेदर्दी से रेत रहा है। इस किरदार की हिंसा को जायज ठहराने के अनेक तर्क दिये गये हैं। टीवी को देखें, तो वहां हर सीरियल में एक महिला विलेन है, जो हर तीसरा वाक्य ह्यय्यू शट अपह्न कहती है। परिवार है, लेकिन खंडित है। साजिश और हिंसा से सीरियल भरे हुए हैं। यह गंभीर चिंता का विषय है। भारतीय सिनेमा का यह मॉडल नहीं रहा है। उसकी समस्या केवल एक रही है-शादी। एक लड़का और एक लड़की हैं, कभी अमीर, तो कभी गरीब हैं, तो कभी देशी और विदेशी, कभी अलग-अलग भाषा व संस्कृति से, तो कभी भारतीय और पाकिस्तानी और उनमें प्रेम हो जाता है। रास्ते का रोड़ा एक अदद विलेन है, जिसकी साजिशें विफल हो जाती हैं और अंत सुखद होता है, जिसमें लड़के-लड़की का मिलन हो जाता है। यह भी है कि युवाओं में वे ही ऑनलाइन गेम लोकप्रिय हैं, जिनमें हिंसा है, मारधाड़ है। ऐसे गेम युवाओं में आक्रामकता को जन्म दे रहे हैं और समाज में इसका प्रकटीकरण भी हो रहा है, लेकिन हम इस सबसे अनजान है। इस पर कोई विमर्श नहीं हो रहा है। समस्या जब विकराल रूप ले लेगी, तब हम जागेंगे। भारतीय दृष्टिकोण से देखें, तो चीन किसी भी क्षेत्र में हमारा आदर्श नहीं है, लेकिन हाल में उसने जो कदम उठाया है, हम उससे जरूर कुछ सीख सकते हैं। चीन दुनिया के सबसे बड़े ऑनलाइन गेमिंग बाजारों में से एक है। पर ऐसे गेम के दुष्प्रभावों के मद्देनजर वहां एक कानून लागू किया है। अब चीन में 16 साल से कम उम्र के बच्चे दिन में डेढ़ घंटे से ज्यादा ऑनलाइन वीडियो गेम नहीं खेल सकते हैं। यह 90 मिनट इस्तेमाल करने का समय भी सुबह आठ से रात दस बजे तक है। शेष समय ऑनलाइन वीडियो गेम खेलने पर पूरी तरह प्रतिबंध रहेगा। गेमिंग पर खर्च की भी सीमा तय की गयी है। बच्चे हर माह लगभग दो हजार रुपये तक ही गेमिंग पर खर्च कर सकते हैं, जबकि 16 से 18 आयु वर्ग के किशोरों के लिए यह राशि हर महीने लगभग चार हजार रुपये है। नये कानून के मुताबिक बच्चों को चीनी सोशल मीडिया वीचैट पर अपने अकाउंट, फोन नंबर और पहचान पत्र की पूरी जानकारी दर्ज करनी होगी। सरकार ने गेमिंग कंपनियों को भी अपने कंटेंट और नियमों में सुधार करने के निर्देश जारी किये हैं। चीनी अधिकारियों का दावा है कि ऑनलाइन गेमिंग की लत बच्चों के स्वास्थ्य व व्यवहार पर सीधा असर डाल रही है। ऑनलाइन गेमिंग की बढ़ती लत और हिंसा हमारे देश में भी चिंता का विषय है। युवाओं के बीच पबजी बहुत लोकप्रिय है। हालांकि इस पर प्रतिबंध है, लेकिन इंटरनेट की दुनिया में प्रतिबंध बहुत प्रभावी नहीं हो पाते हैं। यदि आप पबजी से नावाकिफ हों, तो बता दूं कि यह ऑनलाइन गेम है। इसमें हिस्सा लेने वाले खिलाड़ी को खुद को जीवित रखने और गेम जीतने के लिए दूसरों को मारना पड़ता है। यह गेम आपको एक ऐसी आभासी दुनिया में ले जाता है, जहां गोलियों की बौछार के बीच आपको अपने खिलाड़ी को जिंदा रखना होता है।

# Social Media Corner

सच के हक में...

अपनी देखभाल करके ही आप दूसरों की देखभाल करने में सक्षम बने रहेंगे। यह जरूरी है कि सभी चुनौतियों के बावजूद आप सब शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ और सजग बने रहें।

**(राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का 'एक्स' पर पोस्ट)**

अदम्य साहस और वीरता के प्रतीक, झारखण्ड की माटी के वीर सपूत, परमवीर चक्र विजेता अमर वीर शहीद अल्बर्ट एक्का जी की जयंती पर शत-शत नमन।

**(सीएम हेमंत सोरेन का 'एक्स' पर पोस्ट)**

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन जी, आपको धोखे में रखा जा रहा। अफसरों का तबका नहीं चाहता कि सच आपतक पहुंचे। योजनाओं को जमीन पर उतारने के बदले सिर्फ लीपापोती हो रही है। खबर यह आई है कि इस वीडियो के जरिए सच्चाई को सामने लाने के कारण संबंधित पत्रकार पर एफआईआर दर्ज करने का आदेश चतरा डीसी ने अपने मातहत सीओ को दिया है। पत्रकार या संस्थान के खिलाफ केस हुआ तो इस तानाशाही का जोरदार विरोध होगा। डीसी चतरा मनमानी से बचें।

**(पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी का 'एक्स' पर पोस्ट)**

# इमरोज के लिए प्रेम सर्वोच्च था

इमरोज उन बहुत थोड़े लोगों में हैं, जिनके होने, न होने को भिन्न ढंग से दर्ज किया जायेगा। भिन्न ढंग से इसलिए कि कई लोगों के लिए उनके निधन पर यह रस्मी तौर पर कहा जाता है कि उनके न रहने से कला या साहित्य की अपूरणीय क्षति हुई है। इमरोज के न रहने से न कला की क्षति हुई है और न साहित्य की। जो क्षति हुई है, वह उस भाव की हुई है कि ऐसा समर्पित प्रेमी, ऐसा धैर्य धनी, इतना सहनशील, अपने को पीछे रखकर सामने वाले को बिना किसी आकांक्षा के सर्वोच्च मानकर प्रेम करने वाला, हृदय पर निर्भार रह कर प्रेम करने वाला व्यक्तित्व बहुत विरल है। चूंकि वह विरल है, इसलिए उसकी उपस्थिति को हमेशा देखने की कोशिश हुई। अमृता प्रीतम की मृत्यु के सत्रह-अठारह साल बाद इमरोज का देहांत हुआ है। पर यह जानकार हैरानी होती है कि अमृता के बाद भी इमरोज को लगातार रेखांकित किया जाता रहा, उनकी मौजूदगी को लगातार दर्ज किया जाता रहा। अब जब वे नहीं हैं, तो आप देख सकते हैं कि सोशल मीडिया से लेकर हर जगह कि जो लोग अमृता प्रीतम के प्रशंसक हैं, वे इमरोज के भी उतने ही प्रशंसक हैं, जबकि इमरोज ने वैसा कोई लेखन नहीं किया है। उनके नाम कोई बड़ी किताब नहीं है। उन्होंने कुछ कविताएं लिखी हैं, कुछ और लेखन किया है, पर साहित्यिक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो कमतर लेखन है। लेकिन कमतर लेखन के बावजूद उनका कद ऊंचा होने की सबसे बड़ी वजह उनका व्यक्तित्व है। असल में आप खूब अच्छा साहित्य पढ़कर खूब अच्छा व्यक्ति या प्रेमी बनने की आकांक्षा से भरे रहते हैं, पर बन नहीं पाते। इमरोज वैसा बन सके। इसलिए वे बहुत अलग ढंग से लोगों को याद हैं और याद रहेंगे। इमरोज जिस विधा में काम करते थे, वह चित्रकारी थी। उन्होंने कई किताबों के आवरण के लिए चित्र बनाये। अमृता प्रीतम की किताबों के तो आवरण उन्हीं के रचे हुए हैं। उस ह्यरसीदी टिकटह्न का आवरण भी उन्होंने ही बनाया, जिसमें साहिर का जिक्र करती हैं अमृता और बताती हैं कि स्कूटर पर साथ जाते हुए वे इमरोज की पीठ पर साहिर का नाम लिखती थीं। ऐसे दास्तान हैं उसमें, जो लगभग सभी को याद हैं। यह बात कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि इमरोज का जो भी कलाकार था, कला व्यक्तित्व था, वह अमृता के विशाल नाम के पीछे ढंक गया। इमरोज ने इसकी कभी शिकायत भी नहीं की। वे नहीं चाहते थे कि उन्हें एक बड़े पेंटर के रूप में याद किया जाए। शायद वे उन कुछ लोगों में थे, जिन्होंने अपनी कला की परवाह किये बगैर जीवन जिया। उनकी कला को देखकर फिल्मकार गुरुदत्त ने उन्हें बंबई आने का निमंत्रण दिया। उन दिनों अमृता के साथ रहना शुरू कर दिया था। अमृता ने भी उनसे जाने को कहा कि अपनी कला का भी ध्यान रखो। बंबई में जब उन्हें मालूम हुआ कि अमृता बीमार हैं, तो वे सब छोड़कर अमृता के पास लौट आये। वे उन वाहिद लोगों में से थे, जिनके लिए प्रेम से बड़ा कुछ भी नहीं था। एक बड़े इतालवी चिंतक-साहित्यकार सेजार पावेसी ने कहा है कि प्रेमियों के हिस्से कभी खुशी नहीं होती क्योंकि उनके लिए प्रेम से बड़ा कुछ भी नहीं होता। इमरोज जैसे लोग इस कथन का विरल अपवाद हैं। वे प्रेम में भी थे और अमृता के साथ बहुत खुश थे। वे उस अमृता के साथ खुश थे, जो दो बच्चों के साथ प्रीतम जी से अलग हुई थीं, साहिर के प्रेम में पड़ीं और उनके जीवन में इमरोज आये। अमृता के हवाले से एक किस्सा है। उन्होंने इमरोज से कहा कि तुम पूरी दुनिया घूम आओ और मुझसे कोई बेहतर मिले, तो उसके साथ हो लो। वैसे मैं यहां तुम्हारा इंतजार करूंगी। इमरोज ने अमृता के चक्कर लगाये और कहा कि लो, दुनिया घूम आया, तुमसे बेहतर कोई नहीं। ऐसा प्रेम कई बार फिल्मी लगता है और यह भी लगता है कि क्या ऐसा जी पाना संभव है। उन्होंने इसे जी कर दिखाया। उनके लिए अपनी कला या अपना लेखन बहुत पीछे की बातें थीं।

# दो नुकसान

द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (द्रमुक) के वरिष्ठ पदाधिकारी के. पोनमुडी को भ्रष्टाचार का दोषी ठहराए जाने की वजह से तमिलनाडु मंत्रिमंडल में अपने पद से हाथ धोना पड़ा है। यह इस बात की एक दुर्लभ मिसाल है कि एक कार्यरत मंत्री को ऐसे समय भ्रष्टाचार का दोषी पाया गया है जब उनकी अपनी पार्टी सत्ता में है। दागी लोक सेवकों को दंडित करने और उन्हें उनके पद से हटा देने वाले किसी भी फैसले को हितकारी माना जाना चाहिए। श्री पोनमुडी के मामले में, सुप्रीम कोर्ट में उनकी अपेक्षित अपील के नतीजे का इंतजार करना होगा। इस अपील में सुप्रीम कोर्ट को यह तय करना है कि निचली अदालत द्वारा उन्हें बरी करने या मद्रास हाईकोर्ट द्वारा निचली अदालत के निर्णय को पलट देने के फैसलों में से किसे बरकरार रखा जाए। फिलहाल, श्री पोनमुडी और उनकी पत्नी को 1.72 करोड़ रुपये की बिना लेखा-जोखा वाली संपत्ति रखने के जुर्म में तीन साल की जेल की सजा दी गई है और उनपर 50 लाख रुपये का जुमार्ना लगाया गया है। इस सजा को 30 दिनों के लिए निलंबित रखा गया है। यह मामला 2006-2011 में द्रमुक सरकार में उनके कार्यकाल के दौरान का है और इसकी जांच एवं इस संबंध में मुकदमा अखिल भारतीय अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम के शासनकाल में दायर किया गया था। श्री पोनमुडी प्रवर्तन निदेशालय की जांच के घेरे में भी हैं। प्रवर्तन निदेशालय उनके खिलाफ अपने बेटे और रिश्तेदारों को लाल रेत के खनन के लिए अवैध लाइसेंस देने के आरोप के धन-शोधन वाले पहलू की जांच कर रहा है। वह वी. सेंथिल बालाजी के बाद अपना पद खोने वाले दूसरे मंत्री हैं। वी. सेंथिल बालाजी धन -शोधन के एक अन्य मामले में जेल में हैं।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PVT.LTD, Ratu, Kathitand, Near Tender Bagicha, H.P. Petrol Pump P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, 835222, Jharkhand And Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001. R.N.I Number - JHABIL/2022/85899 Editor- Fahim Akhtar. E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

# जर्मन की हियरिंग एड कंपनी भारतियों की जिंदगी में ला रही है बदलाव

**नई दिल्ली ।**

पीयूष कुमार जैन से जुड़ी हियरिंग एड कंपनी से उनकी जिंदगी बदल देगी। 2017 में हियरिंग एड कंपनी के संस्थापक डॉ मार्को वीटोर ने पीयूष जैन को जर्मन हियरिंग एड तकनीक के बारे में बताया। जर्मन हियरिंग एड के इंजीनियरों ने रिसर्च और डवलपमेंट में सालों साल मेहनत करके एक इतनी आधुनिक और छोटे आकार वाला हियरिंग एड विकसित किया जो आसानी से कान के पीछे छिप जाता है।

डॉ विएटर ने जब पियूष जैन से इस टेक्नोलॉजी को भारतीय बाजार में लाने की बात कही तो शुरू में पियूष हिचकिचाए वह जानते थे कि उनकी माँ की सुनने की शक्ति धीरे-धीरे खो रही थी, लेकिन वह किसी भी कीमत पर हियरिंग एड नहीं लगवाना चाहती थीं क्योंकि उन्हें लगता था कि मशीन बहुत बड़ी होने से अच्छी नहीं लगती है। वह सोचती थीं कि सुनने की मशीन लगाने से वह बहुत बुजुर्ग लगने लगेंगी। नवीनतम जर्मन हियरिंग एड की गुणवत्ता और डॉ विएटर के दावों को परखने के लिए पियूष ने अपनी माताजी से उनका एक हियरिंग एड इस्तेमाल करने को कहा।

यह हियरिंग एड न केवल मेरी माँ की दुनिया में बदलाव लेकर आये बल्कि मेरे पूरे परिवार के जीवन को भी बदल दिया। हर प्रकार के पारिवारिक कार्यक्रम और टीवी देखने के समय बातचीत और गपशप बहुत आसान हो गयी। जिस पल से मेरी माँ ने इस हियरिंग एड को लगाना शुरू किया उसी पल से मेरे परिवार में खुशी की लहर दौड़ गयी हालाँकि शुरूआती कुछ दिनों तक उन्हें थोड़ा असहज महसूस हुआ फिर धीरे-धीरे वह सहज हो गयीं। 2-3 हफ्तों के बाद तो वह हियरिंग एड को निकालना ही नहीं चाहती थीं।

जब मुझे एहसास हुआ कि मेरी माँ को हियरिंग एड के इस्तेमाल के लिए मनाना कितना मुश्किल था जबकि उनके जीवन पर हियरिंग एड का कितना अधिक सकारात्मक असर हुआ तब न केवल मैंने मार्को के ऑफर को स्वीकार कर लिया बल्कि मैंने कंपनी का यह मिशन संभव बनाने का फैसला किया कि भारत की हर माँ हियरिंग एड पहन सके। तभी से कंपनी भारत में तेजी से बढ़ रही है।

# जल्द महिंद्रा एक्सयूवी 300 के फेसलिफ्ट मॉडल लांच होगा

**मुंबई ।**

अधिकांश महिंद्रा एसयूवी जैसे एक्सयूवी 700, स्कॉर्पियो-एन और थार अपने-अपने खंड में पंसद की जा रही हैं। लेकिन, एक्सयूवी 300 को समान स्तर की लोकप्रियता नहीं हासिल हुई है, भले ही यह हर महीने लगातार कंपनी को बिक्री संख्या प्रदान करती रहती है। कंपनी बहुत जल्द महिंद्रा एक्सयूवी 300 के फेसलिफ्ट वैरिएंट को मार्केट में लांच करने की तैयारी कर रही है, जिसके साथ कंपनी बेहतर परिणामों पर नजर रखेगी, जिसे 2024 की पहली छमाही में लांच करने की योजना है। कंपनी एक्सटीरियर और पैनोरमिक सनरूफ जैसे नए फीचर्स के साथ एक्सयूवी 300 फेसलिफ्ट की लॉचिंग के बाद एसयूवी की स्ट्रॉन्ग डिमांड देख सकती है। एक्सयूवी 300 फेसलिफ्ट के टेस्ट म्यूल्स को हाल ही में महिंद्रा के नासिक प्लांट के पास देखा गया था। एक्सयूवी 300 फेसलिफ्ट के एक्सटीरियर में फ्रंट फेसिया और रियर सेक्शन को रिफ्रेश किया गया है। इस्तेमाल की गई डिजाइन लैंग्वेज महिंद्रा की अपकमिंग बीई रेंज की इलेक्ट्रिक एसयूवी के समान है। कुछ प्रमुख विशेषताओं में खास सी-साइज के एलईडी डीआरएल, अपडेटेड हेडलैंप और ताजा फ्रंट ग्रिल और बंपर शामिल हैं। रियर की तरफ सी-साइज के लाइटिंग एलिमेंट भी देख सकते हैं। इसमें बूट लिड और बंपर लुक मिलता है। साइड प्रोफाइल काफी हद तक पहले जैसा ही है। टेस्टिंग म्यूल में अलॉय व्हील्स मौजूदा मॉडल के समान हैं। हालांकि, यह संभव है कि टॉप-स्पेक वैरिएंट में अलॉय व्हील का एक नया सेट मिल सकता है। एक्सयूवी 300 फेसलिफ्ट के लिए कुछ नए कलर ऑप्शन भी हैं। एक्सयूवी 300 फेसलिफ्ट को बड़े पैनोरमिक टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम के साथ देखा जा सकता है। ऐसा लगता है कि यह 10.25 इंच की यूनिट है। फिलहाल, मौजूदा मॉडल 7-इंच टचस्क्रीन से लैस है। एक्सयूवी 300 में एक नई डिजिटल इंस्ट्रूमेंट स्क्रीन भी मिलेगी। इसमें सेंट्रल कंसोल को भी अपडेट किया गया है। टेस्ट म्यूल में बेज अपहोल्स्ट्री है, जो मौजूदा मॉडल के साथ पहले से ही उपलब्ध है। स्टीयरिंग व्हील भी वैसा ही लगता है। एक्सयूवी 300 भारत की सबसे सुरक्षित कारों में से एक है, इस ग्लोबल एनसीएपी क्रैश टेस्ट में 5-स्टार एडल्ट सेफ्टी रेटिंग मिली है। संभव है कि एक्सयूवी 300 को भारत एनसीएपी द्वारा भी प्रमाणित किया जा सकता है। मौजूदा मॉडल में 6-एयरबैग, हिल होल्ड असिस्ट, कॉर्नर ब्रेकिंग कंट्रोल, इलेक्ट्रॉनिक स्टेबिलिटी प्रोग्राम (ईएसपी), फ्रंट पार्किंग सेंसर और सभी 4-डिस्क ब्रेक समेट दो दर्जन से अधिक सुरक्षा फीचर्स मिलते हैं।

# फिटनेस और हेल्थ से जुड़ी कंपनियों की कमाई में हो रहा जोरदार इजाफा

**नई दिल्ली ।**

दौड़ने वाले जूतों और जॉगर्स से लेकर डंबल और योगा मैट तक, लगभग आधा दर्जन प्रमुख खेल ब्रांडों की बिक्री पिछले दो वर्षों में महामारी के दौरान और उसके बाद से बढ़ी है। हेल्थ के बारे में बढ़ती जागरूकता और एथलेटिक्स वियर की बढ़ती मांग के कारण क्षेत्र की कंपनियों ने भारत में अपना कारोबार दोगुना कर लिया है।

रिपोर्ट के अनुसार प्यूमा, डेकाथलॉन, एडिडास, स्केचर्स और एसिक्स जैसे ब्रांडों ने वित्त वर्ष 2011 के बाद से साल-दर-साल 35-60 प्रतिशत की वृद्धि की है और वित्त वर्ष 2023 में 11,617 करोड़ रुपए का संयुक्त राजस्व किया है। दो साल पहले इन ब्रांडों की बिक्री कुल मिलाकर 5,022 रुपए करोड़ थी। क्रिकेट के अलावा अन्य खेलों के लिए फिटनेस परिधान और खेल उपकरण की मांग बढ़ी है क्योंकि लोगों ने कोरोना की शुरुआत के बाद स्वास्थ्य को प्राथमिकता दी है। कंपनी प्रमुख ने कहा, स्वास्थ्य और फिटनेस पर बढ़ते फोकस के परिणामस्वरूप सभी उम्र के लोग तकनीकी और परफार्मेंस जूतों की तलाश में हैं। दौड़ना हमारे लिए सबसे तेजी से बढ़ती श्रेणियों में से एक है, साथ ही 45 वर्ष से अधिक उम्र के वयस्कों द्वारा चलने वाले जूतों की खोज में उल्लेखनीय उछाल आया है। कुल मिलाकर खेल और एथलेटिक्स श्रेणी देश में औसत परिधान और जूतों के बाजार की तुलना में तेजी से बढ़ रही है।

अपनी खुद की फर्म एजिलिटास स्पोर्ट्स शुरू करने वाले ने कहा, कैजुअलाइजेशन और स्नीकराइजेशन का एक स्पष्ट चलन है और यह केवल खेल या अवकाश गतिविधियों के दौरान ही प्रतिबंधित नहीं है। भारत अब केवल क्रिकेट खेलने वाला देश नहीं रह गया है, क्योंकि हम देखते हैं कि उपभोक्ता तेजी से दौड़, फुटबॉल और जिम जैसी अन्य गतिविधियों में शामिल हो रहे हैं।

1.4 अरब की आबादी के साथ भारत फुटवियर कंपनियों के लिए सबसे तेजी से बढ़ते और सबसे बड़े अंतरराष्ट्रीय बाजारों में से एक है। अधिकांश वैश्विक ब्रांड भारत में दो दशकों से अधिक समय से मौजूद हैं और क्रिकेट तथा अन्य खेल गतिविधियों में भागीदारी के माध्यम से अपने उत्पादों को बढ़ावा देने के कारण आगे बढ़े हैं।

# 59 प्रतिशत भारतीय कर्मचारी एआई को अपनाने के लिए तैयार : रिपोर्ट

**नई दिल्ली।**

भारत में लगभग 59 प्रतिशत कर्मचारी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) टूल्स को अपनाने और उपयोग करने की अपनी क्षमता में आश्वस्त हैं,

जो दर्शाता है कि अगले साल काम पर एआई की व्यापक स्वीकृति होने की संभावना है।इस बीच, ग्लोबल हायरिंग प्लेटफॉर्म इनडीड की रिपोर्ट के अनुसार, सर्वे में शामिल केवल 19 प्रतिशत नियोक्ताओं ने 2024 में वर्कप्लेस पर अगली जनरेशन की टेक्नोलॉजी जैसे जेनरेटिव एआई को पहले ही लागू कर दिया है या लागू करने की प्रक्रिया में हैं। 42 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार, एआई को प्रभावी ढंग से अपनाने के लिए नियोक्ताओं की रणनीति का एक अभिन्न अंग यह सुनिश्चित करना होगा कि वे नैतिक एआई सिद्धांतों का पालन करें। नियोक्ताओं का यह भी मानना है कि ह्यूमन-एआई कोलैबोरेशन बढ़ाना (37 प्रतिशत) और स्किल्स की मांग (25 प्रतिशत) को पूरा करने के लिए कार्यबल को रीस्किल/अपस्किल करना प्रमुख रणनीतियां होंगी, जिन्हें वे लागू करना चाहते हैं। इनडीड इंडिया के बिक्री प्रमुख शशि कुमार ने कहा, डेटा एनालिसिस, सॉफ्टवेयर इंजीनियर, सेल्स इंजीनियर, प्रोजेक्ट मैनेजर और डिजाइनर जैसी भूमिकाओं की व्यापकता नियोक्ताओं द्वारा मांगी जाने वाली विशेषज्ञता के विविध परिदृश्य को दर्शाती है।÷

# अडानी समूह ग्रीन एनर्जी में निवेश करेगा

**नई दिल्ली ।**

अडानी समूह की कंपनी ग्रीन एनर्जी में कंपनी के 9350 करोड़ रुपये निवेश करेंगे। अडानी ग्रीन एनर्जी ने कहा कि कंपनी की बोर्ड की हुई बैठक में बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स ने 1480.75 रुपये शेयरों पर 9350 करोड़ रुपये के शेयर जारी करने पर अपनी मंजूरी दे दी है। इसके जरिए कंपनी अपने कर्ज के बोझ को कम करने के साथ पूजीगंत एक्सपेंडिचर पर खर्च करेगी। स्टॉक एक्सचेंज के पास दाखिल रेग्यूलेटरी फाइलिंग में कंपनी ने बोर्ड बैठक में लिए गए इस फैसले की जानकारी दी। कंपनी ने बताया कि अडानी ग्रीन एनर्जी के प्रमोटर्स को 1480.75 रुपये प्रति शेयर के भाव पर 9350 करोड़ रुपये के प्रीफरेंशियल वारंट जारी करने पर बोर्ड ने मुहर लगा दी है। बोर्ड के इस फैसले पर अडानी समूह के चेयरमैन गौतम अडानी ने कहा कि भारत रिन्यूएबल एनर्जी के मामले में ग्लोबल लीडर बनने की कगार पर है और अडानी ग्रीन एनर्जी इस रिवॉल्युशन की अगुवाई कर रहा है। प्रमोटर्स के निवेश की खबरों के बीच आज के कारोबार में अडानी ग्रीन एनर्जी का स्टॉक 4.38 फीसदी के उछाल के साथ 1600 रुपये पर क्लोज हुआ।

**अडानी ग्रीन एनर्जी को फंड के लिये बोर्ड से मंजूरी मिली**

शेयर बाजार बंद होने से पहले अडानी ग्रीन एनर्जी ने फंड जुटाने को बोर्ड से मंजूरी मिलने की जानकारी दी है। अडानी ग्रुप की ग्रीन एनर्जी के बोर्ड ने प्रेफरेंशियल आधार पर वॉरंट जारी कर 9350 करोड़ जारी करेगी। कंपनी ने मंगलवार को एक्सचेंज फाइलिंग में इसकी जानकारी दी है। इस जानकारी तुरंत बाद शेयर में तेजी बढ़ते दिखी। ग्रीन एनर्जी की ओर से दी गई जानकारी के अनुसार प्रोमोटर ग्रुप को प्रेफरेंशियल आधार पर वॉरंट जारी कर 9350 करोड़ जुटाए जाएंगे। ये 1,480.75 रुपये प्रति शेयर के भाव पर जारी होंगे। कंपनी इस फंड का इस्तेमल बैलेंस शीट डिलेवरेज करने के लिए करेगी। साथ ही 2030 तक 45 मेगा वाट की क्षमता विस्तार के लिए ग्रोथ कैपेक्स बढ़ाने के लिए करेगी। ग्रीन एनर्जी के शेयर मंगलवार को 5.48 फीसदी की बढ़त के साथ 1617.05 रुपये प्रति शेयर के भाव पर बंद हुआ। हाल ही में कंपनी ने एसआसीआई के साथ 8000 मेगावाट सोलर पावर के लिए पावर पर्चेज एग्रीमेंट को पूरा किया है। कंपनी ने 22 दिसंबर को डील का एलान करते हुए कहा था कि सोलर पावर सप्लाई के लिए 1799 मेगावॉट का आखिरी चरण पूरा कर लिया गया है।

## सोने और चांदी में तेजी

**नई दिल्ली ।**

अंतरराष्ट्रीय बाजार में आये उछाल से बुधवार को घरेलू बाजार में भी सोने और चांदी की कीमतों में तेजी आई है। इससे ये शीर्ष स्तर पर पहुंच रहा है। अंतरराष्ट्रीय बुलियन वायदा बाजार में सोना ऊपर आकर 2,065 डॉलर प्रति औंस और चांदी ऊपर आकर 24.39 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार करती देखी गई। इससे इंदौर में सोना गत दिवस 63000 रुपये प्रति दस ग्राम पर पहुंच गया। इससे पहले सोना इंदौर सराफा में 63150 नकद और 65050 आरटीजीएस में पहुंचा था। वहीं चांदी भी 150 रुपये बढ़कर 74750 रुपये प्रति किलो पर पहुंच गई। सोने की कीमतों में आया उछाल मध्य पूर्व में हुए संघर्ष के कारण भी आया है। कीमतों में आई तेजी का कारण सोने में निवेश है। मार्च-मई 2023 के समय के अलावा अप्रैल 2022 से निवेश की मांग लगातार कम हुई है। पिछले महीने के लिए जो आंकड़े आए उससे भी यही पता चलता है। माना जा रहा है कि कीमतों में अभी तेजी बनी रहेगी। कामेक्स सोना ऊपर में 2065 तथा नीचे में 2052 डॉलर प्रति औंस और चांदी ऊपर में 24.39 व नीचे में 24.12 डालर प्रति औंस पर कारोबार करती देखी गई।

## अदाणी ग्रीन एनर्जी ने टोटल एनर्जी के साथ जॉइंट वेंचर की प्रक्रिया पूरी की

**मुंबई ।** जॉइंट वेंचर में भारत में विभिन्न क्षमताओं के सोलर और विंड पावर प्रोजेक्ट हैं। यह डेवलपमेंट सितंबर 2023 में एजीईएल और टोटल एनर्जी के बीच घोषित बाध्यकारी समझौते के अनुरूप है। इस अपडेट का अदाणी ग्रीन एनर्जी के शेयर पर असर नहीं दिख रहा है। अदाणी समूह की कंपनी अदाणी ग्रीन एनर्जी ने फ्रांस की कंपनी टोटल एनर्जी के साथ एक जॉइंट वेंचर बनाने की प्रक्रिया पूरी कर ली है। इस जॉइंट वेंचर में दोनों कंपनियों की हिस्सेदारी 50-50 प्रतिशत है। जॉइंट वेंचर में टोटल एनर्जी 30 करोड़ डॉलर का निवेश कर रही है। अदाणी ग्रीन एनर्जी ने इस बारे में शेयर बाजारों को सूचना दी है। कहा गया कि लेनदेन के हिस्से के तौर पर जॉइंट वेंचर में एजीईएल ने 300 मेगावॉट की ऑपरेशनल कैपेसिटी, 500 मेगावॉट के अंडर कंस्ट्रक्शन अन्य प्रोजेक्ट और 250 मेगावॉट के अंडर डेवलपमेंट एसेट्स का योगदान किया है। वहीं टोटल एनर्जी ने 30 करोड़ डॉलर का इक्विटी इनवेस्टमेंट किया है। यह डेवलपमेंट सितंबर 2023 में एजीईएल और टोटल एनर्जी के बीच घोषित बाध्यकारी समझौते के अनुरूप है। 1050 मेगावॉट के इस जॉइंट वेंचर में भारत में विभिन्न क्षमताओं के सोलर और विंड पावर प्रोजेक्ट हैं। अदाणी ग्रीन ने कहा कि इस लेनदेन के साथ, टोटल एनर्जी ने एजीईएल के साथ अपने रणनीतिक गठबंधन को मजबूत किया है और 2030 तक 45 गीगावॉट क्षमता के एजीईएल के लक्ष्य को हासिल करने में सपोर्ट दिया है।

## आरबीआई गवर्नर के तौर पर राजन को मिलते थे प्रतिमाह 4 लाख रुपये

**मुम्बई ।**

भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर रहे रघुराम राजन ने कहा है कि उन्हें इस पद पर रहते हुए 4 लाख रुपये प्रतिमाह वेतन मिलता था। राजन ने कहा, आरबीआई गवर्नर के तौर पर उन्हें मिले वेतन से ज्यादा महत्व सरकारी घर का था। राजन ने कहा, आज आरबीआई गवर्नर की कितनी सैलेरी है इसकी उन्हें जानकारी नहीं है पर उनके दौर में 4 लाख रुपये सैलेरी मिला करते थे। राजन ने कहा, पर सबसे अहम आरबीआई गवर्नर का सरकारी घर है जो सबसे महंगे मालबार हिल्स इलाके में था। साथ ही कहा, उन्होंने एक बार अनुमान लगाया कि अगर इस घर को लीज पर ही दे दें तो आरबीआई के शीर्ष अधिकारियों का वेतन तक निकल सकता है। उन्होंने कहा कि गवर्नर का वेतन कैबिनेट सेक्रेटरी के समान है। उन्होंने कहा कि इस पद पर दूसरे सरकारी अधिकारियों के समान पेंशन नहीं मिलती है पर मेडिकल सुविधाएं मिलती है। राजन ने बताया कि अधिकतर आरबीआई गवर्नर को पेंशन इसलिए मिलती है कि क्योंकि वे सरकारी अधिकारी रहे हैं। राजन ने बताया कि उन्हें भी पेंशन की जरुरत नहीं है क्योंकि उनके पास पूर्णकालिक काम है। राजन ने कहा कि गवर्नर पद पर रहते हुए दूसरी सुविधाओं के तौर पर कार मिलती है साथ ही घर के रखरखाव के लिए भी राशि मिलती है।

# शेयर बाजार भारी तेजी के साथ बंद , सेंसेक्स पहली बार 72 हजार के ऊपर पहुंचा

## निफ्टी 21600 के ऊपर निकला

**मुम्बई।**

घरेलू शेयर बाजार बुधवार को भारी तेजी के साथ बंद हुआ। बाजार में ये उछाल दुनिया भर से मिले अच्छे संकेतों के साथ ही आईटी और धातु शेयरों में जबरदस्त खरीदारी से आया है। आजा कारोबार के दौरान बीएसई सेंसेक्स और एनएसई निफ्टी रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गए। बाजार की तेजी से निवेशकों को आज 2.39 लाख करोड़ रुपये का लाभ हुआ। दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स आज 701.63 अंक तकरीबन 0.98 फीसदी ऊपर आकर 72038.43 और पचास शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 213.40 अंक ऊपर आकर एक फीसदी की बढ़त के साथ ही 21654.75 पर बंद हुआ। सेंसेक्स आज पहली बार 72 हजार और निफ्टी पहली बार 21600 के ऊपर पहुंचा। कारोबार के दौरान आज बाजार में तेल एवं गैस और उर्जा को छोड़कर बाकी सभी इंडेक्स वाहन, बैंक और धातु में एक फीसदी की बढ़त दर्ज की गयी। वहीं बीएसई के मिडकैप और स्मॉलकैप इंडेक्स भी मामूली बढ़त पर बंद हुए। डॉलर के मुकाबले रुपया आज पांच महीने के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गया और 16 पैसे टूटकर बंद हुआ।बाजार को आज हर क्षेत्र के शेयरों से समर्थन मिला। एचडीएफसी बैंक के शेयर 1 फीसदी से अधिक ऊपर आये। हैवीवेट शेयर होने के चलते इंडेक्सों को इससे समर्थन मिला। बाजार की तेजी के चलते आज निवेशकों को जमकर लाभ हुआ। गत दिवस बीएसई पर लिस्टेड सभी शेयरों का कुल बाजार पूंजीकर 358.92 लाख करोड़ रुपये था जो बुधवार को बढ़कर 361.31 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गया।

इससे निवेशकों को 2.39 लाख करोड़ रुपये का लाभ हुआ। वहीं 20 दिसंबर को मार्केट कैप का यह आंकड़ा 350.20 लाख करोड़ रुपये था इस प्रकार चार दिनों में बाजार की तेजी से निवेशकों को 11.11 लाख करोड़ रुपये का लाभ हुआ। सेंसेक्स के 28 शेयर आज लाभ के साथ ही बंद हुए। इसमें सबसे अधिक तेजी आज अल्ट्राटेक सीमेंट, जेएसडब्ल्यू स्टील और टाटा मोटर्स के शेयरों में रही। वहीं दूसरी तरफ आज एनटीपीसी और टेक महिंद्रा में सबसे अधिक गिरावट रही।

इससे पहले आज सुबह बाजार तेजी के साथ खुला। वहीं गत दिवस भी बाजार उछाल के साथ बंद हुआ था। सेंसेक्स 244.44 अंक करीब 0.34 फीसदी बढ़कर 71,581.24 अंक पर खुला। वहीं निफ्टी 83.40 अंक तकरीबन 0.39 फीसदी की तेजी के साथ 21,524.70 अंक पर खुला। आज सुबह के कारोबार में एलटीआईमाइंडट्री, डिविस लैब्स, टाटा मोटर्स, पावर ग्रिड कॉर्प और ओएनजीसी के शेयरों में बढ़त रही। वहीं, हीरो मोटोकॉर्प, सन फार्मा, एचडीएफसी बैंक, अपोलो हॉस्पिटल्स और मारुति सुजुकी के शेयर नीचे आये। बाजार जानकारों के अनुसार व्यापक आर्थिक बुनियादी सिद्धांतों और दुनिया भर के बाजारों से मिले अच्छे संकेतों से ही बाजार में ये उछाल आया है। वहीं दुसरी ओर एशियाई बाजारों में, टोक्यो, शंघाई और हांगकांग में बढ़त रही जबकि सियोल में गिरावट दर्ज की गयी।

## स्टार्टअप और आईटी कंपनियों के लिए अच्छा नहीं रहा साल 2023

### वित्तीय संकट के कारण कई लोगों की नौकरी गयी

**नई दिल्ली ।** देश में ये साल रोजगार के नजरिये से अच्छा नहीं रहा। करोबार में कई के कारण कई दिग्गज आई कंपनियों ने अपने कर्मचारियों को बाहर कर दिया। स्टार्टअप के क्षेत्र में तो और भी खराब हालात रहे। कई 100 स्टार्टअप ने अपे 15,000 से अधिक कर्मचारियों को इस साल नौकरी से बाहर कर दिया। साल का अंत होते-होते पेटीएम ने भी अपने कर्मचारियों में कमी की। स्टार्टअप के लिए यह साल काफी कठिन रहा। प्राप्त जानकारी के अनुसार कई कंपनियों ने अपना खर्च कम करने के लिए कई लोगों को नौकरी से निकला दिया। इसके अलावा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और सेल्फ ऑटोमेशन प्रणाली लागू होने से भी आईटी में कई लोगों को अपनी नौकरी गंवानी पड़ी। काम की कमी और वित्तीय संकट के कारण कई स्टार्टअप तो बंद तक हुए हैं। कोविड-19 के बाद से ही इन कंपनियों की हालत ठीक नहीं हुई थी। लॉकडाउन में बढ़ी हुई मांग के लिए जहां नए लोगों को नौकरियां दी गईं। वहीं इसके बाद मांग घटने के साथ ही इन लोगों को बाहर कर दिया गया। पैसे की कमी के कारण भी कंपनियों को अपना खर्च कम करने लोगों को हटाना पड़ा। अमरीका और यूरोप में आर्थिक कमी के चलते भी इन स्टार्टअप पर बुरा असर पड़ा। आईएमएफ और विश्व बैंक की रिपोर्टों ने भी ग्लोबल मंदी की आशंका जाहिर की। जिसके कारण बड़े पैमाने पर छंटनी शुरु हो गयी।

## रिवाइज्ड आईटीआर फाइल करने की अंतिम तारीख 31 दिसंबर

**नई दिल्ली ।** अगर आपके इनकम टैक्स रिटर्न में कोई गड़बड़ी है, और आपको अपना रिवाइज्ड आईटीआर फाइल करना है, तब आपके लिए 31 दिसंबर की तारीख अहम है। रिवाइज्ड आईटीआर भरने की आखिरी तारीख 31 दिसंबर, 2023 है। जिन्हें अभी अपना रिवाइज्ड आईटीआर फाइल करना है, तब कर लें। इनकम टैक्स डिपार्टमेंट इसतरह के टैक्सपेयर्स को आईटीआर रिवाइज करने के लिए मैसेज भी भेज रहा है। जानकारी है कि जिन लोगों ने 2022-2023 के लिए हाई वैल्यू ट्रांजैक्शन किए हैं, उन ज्यादातर लोगों को रिवाइज्ड आईटीआर भरने का मैसेज आ रहा है। अगर आपसे आईटीआर भरने में गलती हुई है, तब आपको रिवाइज्ड आईटीआर फाइल करना होगा। यह आईटीआर आपको इनकम टैक्स एक्ट के सेक्शन 139(5) के तहत फाइल करना होगा। गड़बड़ी के अलावा, एक कारण ये भी होता है कि मान लीजिए आपने जुलाई से पहले आईटीआर भर दिया था, लेकिन इस असेसमेंट ईयर के लिए आपके कैलकुलेटेड टैक्स में कोई बदलाव आ गया है, या टीडीएस वगैरह एडजस्ट हुआ है, इससे आपके एआईएस यानी एनुअल इन्फॉर्मेशन स्टेटस में बदलाव दिखेगा। इसके चलते भी आपको रिवाइज्ड आईटीआर भरना पड़ सकता है।

# दूसरी तिमाही में व्यापार घाटे में कमी आई

**नई दिल्ली ।**

देश के व्यापार घाटे में कमी आई है। ये कमी वित्त वर्ष 2023-24 की दूसरी तिमाही में आई है। जानकारों के अनुसार मर्केंडाइज ट्रेड डेफसिट में कमी के साथ ही सर्विसेज एक्सपोर्ट में बढ़ोतरी के कारण चालू खाते में ये कमी आई है। रिजर्व बैंक (आरबीआई) के अनुसार वित्त वर्ष 2023-24 की दूसरी तिमाही में ये घाटा कम होकर 8.3 बिलियन डॉलर रहा है जो कि सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का एक फीसदी है। वहीं इससे पहले तिमाही में ये घाटा 9.2 बिलियन डॉलर रहा था जो कि जीडीपी का 1.1 फीसदी है। एक साल पहले वित्त वर्ष 2022-23 की दूसरी तिमाही में चालू वित्तीय घाटा 30.9 बिलियन डॉलर रहा था जो कि डीजीपी का 3.8 फीसदी था। आरबीआई ने कहा कि 2023-24 की दूसरी तिमाही में व्यापार घाटा घटकर 61 बिलियन डॉलर रहा है जबकि ये साल 2022-23 की दूसरी तिमाही में 78.3 बिलियन डॉलर रहा था। वहीं सर्वेसिज एक्सपोर्ट में 4.2 फीसदी की तेजी आई है। विशेष रुप से सॉफ्टवेयर निर्यात, बिजनेस और ट्रैवल सर्विसेज के निर्यात में तेजी से व्यापार घाटे में कमी आई है। चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही के दौरान भुगतान संतुलन की स्थिति पर जारी आंकड़ों के अनुसार, '' चालू खाते का घाटा मौजूदा वित्त वर्ष की जुलाई-सितंबर तिमाही से घटा है। इसका कारण वस्तु व्यापार घाटे (वस्तु निर्यात-आयात का अंतर) भी कम होना है। यह 2023-24 की दूसरी तिमाही में 61 अरब डॉलर रहा जो 2022-23 की दूसरी तिमाही में 78.3 अरब डॉलर था। इससे पहले वित्त वर्ष 2022-23 में चालू खाते का घाटा बढ़कर जीडीपी का 2 फीसदी रहा था जबकि 2021-22 में इसमें 1.2 फीसदी की कमी देखने में आई थी। वहीं साल 2022-23 में 265.3 बिलियन डॉलर व्यापार घाटा देखने को मिला जो 2021-22 में 189.5 बिलियन डॉलर व्यापार घाटा रहा था।

## कई जगहों पर पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बदलाव

**जयपुर ।** घरेलू बाजार में बुधवार को पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बदलाव आया है। इससे राजस्थान के जयपुर में डुंगरपुर में पेट्रोल के दाम 72 पैसे और डीजल के 64 कम हुए हैं। यहां अब डीजल और पेट्रोल की कीमत 94.78 और 109.64 रुपए प्रति लीटर पहुंच गयी है। वहीं जयपुर की बात करें तो यहां कीमतों में बदलाव नहीं आया और पेट्रोल पहले की तरह ही 108.48 और डीजल 93.72 रुपए प्रति लीटर है। इसके अलावा प्रदेश के अलवर, बारां, भरतपुर, बीकानेर, आदि में पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कुछ पैसों की कमी आई। वहीं अजमेर, बांसवाड़ा, बाड़मेर, चित्तौड़गढ़, हनुमानगढ़, जालौर, झालावाड़, झुंझुनूं, करौली, कोटा, नागौर, राजसमंद, सवाईमाधोपुर, टोंक और सीकर में पेट्रोल और डीजल की कीमतों में हल्की बढ़त रही।

# नए साल में बना रहे घूमने का प्लान तो...

## मलेशिया को करें एक्सप्लोर, वीजा पर नहीं खर्च होगा एक भी पैसा

नए साल को आने में कुछ दिनों का समय बचा है। नए साल पर कई लोग घूमने का प्लान बनाते हैं, तो वहीं कुछ लोग विदेश घूमने का प्लान बनाते हैं। ऐसे में अगर आप भी नए साल पर विदेश घूमने का प्लान बना रहे हैं, तो आपको बता दें कि घूमने के शौकीन लोगों के लिए एक बेहद अच्छी खबर सामने आई है।

दरअसल, भारत और चीन के नागरिकों को 1 दिसंबर से मलेशिया में वीजा फ्री एंट्री मिल रही है। ऐसे में आप बिना वीजा पर एक पैसा खर्च किए मलेशिया घूमने का प्लान बना सकते हैं। रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक मलेशिया के पीएम अनवर इब्राहिम ने अपने एक भाषण के दौरान यह घोषणा की।

### इन देशों के नागरिक कर सकेंगे वीजा फ्री यात्रा

मलेशिया के पीएम अनवर इब्राहिम के अनुसार, चीनी और भारतीय नागरिक बिना वीजा के 30 दिनों तक मलेशिया की सैर कर सकते हैं। हांलाकि अभी तक इस बात की पुष्टि नहीं हुई है कि वीजा फ्री एंट्री कब तक लागू रहेगी।

### इन देशों में कर सकेंगे वीजा फ्री एंट्री

आपको बता दें कि इस लिस्ट में अब कई देशों का नाम शामिल हो गया है, जहां पर भारतीय नागरिक वीजा फ्री एंट्री कर सकते हैं। मलेशिया के अलावा भारतीय नागरिक श्रीलंका और थाईलैंड में भी वीजा फ्री एंट्री कर सकते हैं।

भारत और चीन, मलेशिया के चौथे और पांचवें सबसे बड़े सोर्स मार्केट की लिस्ट में शामिल हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, इस साल जनवरी से जून के बीच मलेशिया में 9.16 मिलियन पर्यटक आए। जिनमें से भारत के 2,83,885 पर्यटक और चीन के 4,98,540 पर्यटक शामिल रहे। वहीं कोरोना महामारी से पहले साल 2019 में भारत से 3,54,486 और चीन से 1,5 मिलियन लोग मलेशिया पहुंचे थे।

### वीजा के लिए आवेदन

थाईलैंड ने अपने महत्वपूर्ण पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देने और सुस्त अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित करने के लिए वीजा फ्री एंट्री का ऐलान किया। इस साल चीनी और भारतीय नागरिकों को भी यह छूट मिली है। हांलाकि वर्तमान समय में भारतीय और चीनी पर्यटकों को मलेशिया जाने के लिए वीजा का आवेदन करना पड़ता है।

# मॉरीशसः समुद्र का निराला संसार

दुनिया के बीच डेस्टिनेशन में जिन जगहों को मुख्य रूप से गिना जाता है उनमें मॉरीशस टॉप पर है। हिंद महासागर के नीले गहरे पानी में स्थित मॉरीशस अनूठा है। रंग, संस्कृति और स्वाद में जो विविधता यहां है, वह यहां गुजारे पलों को यादगार बना देती है। इसकी भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि लगभग पूरे साल यहां का मौसम लगभग एक सरीखा रहता है। ना बहुत ज्यादा गर्मी पड़ती है और न ज्यादा ठंड। दिसंबर से मार्च के महीने सबसे ज्यादा बारिश वाले होते हैं, इसलिए उनको छोड़कर बाकी पूरे साल यहां कभी भी जाया जा सकता है। मॉरीशस के सफेद रेतीले तट कोरल रीफ बैरियर से सुरक्षित हैं। यहां का लगभग समूचा तट कोरल रीफ से घिरा है, सिवाय दक्षिणी सिरे के कुछ अपवाद को छोड़कर। इसीलिए बाकी तटों पर समुद्र जहां शांत होता है, वहीं दक्षिणी हिस्से में वह बहुत अशांत है। वहां चत्रनी तट पर समुद्र की पछाड़ें देखकर आप मुग्ध हो सकते हैं।

मॉरीशस के मुख्य द्वीप के चारों ओर कई छोटे-छोटे निर्जन द्वीप भी हैं। हम भारतीयों के लिए मॉरीशस उन जगहों में से है, जहां से हमारा भावनात्मक लगाव है। हमारी संस्कृति साझी है और लोग भी। राजधानी पोर्ट लुई पश्चिमी तट पर स्थित है। उत्तर का इलाका मैदानी है और यहां देश के कई सबसे खूबसूरत बीच हैं। समुद्र तटों की रंगीनियत भी सबसे ज्यादा इसी इलाके में है। वहीं पूर्वी मॉरीशस के समुद्र तट सुकून से कुछ पल बिताने के लिए हैं। यहां के समुद्र तट की खूबसूरती खोह और लैगून में हैं। यहां ब्लू बे और बेले मेरे सबसे लोकप्रिय समुद्री इलाकों में से हैं। उधर पश्चिमी और दक्षिण-पश्चिमी तट रोमांच प्रेमियों के लिए स्वर्ग हैं। यहां आप सर्फिंग, स्नोर्कलिंग, डीप शी फिशिंग, जैसे ज्यादातर समुद्री खेल का आनंद आप ले सकते हैं। यहां टेमेरिन बे के आसपास आप डॉल्फिन भी देख सकते हैं। दक्षिणी इलाके का रंगरूप बाकी देश से पूरी तरह अलग है। ग्रिस-ग्रिस ही मॉरीशस के समुद्री तट का अकेला ऐसा इलाका है जहां कोरल रीफ नहीं हैं। वहां किनारे ऊंची पहाड़ियां और गहरी खाइयां देखने को मिल जाएंगी। मॉरीशस का भीतरी इलाका संस्कृति के विभिन्न रंगों से रंगा है। यहां की शिवरात्रि आपको भारत की शिवरात्रि जैसी ही लगेगी।

### कैसे जाएं

मॉरीशस के लिए दिल्ली व मुंबई आदि शहरों से कई एयरलाइंस की उड़ानें हैं। दिल्ली से मॉरीशस की सीधी उड़ान लगभग साढ़े सात घंटे का समय लेती है। कई उड़ानें दुबई के रास्ते भी हैं। मॉरीशस का वापसी किराया दिल्ली से 26 हजार रुपये से शुरू हो जाता है। मॉरीशस जाना बेशक महंगा है लेकिन वहां रुकने के लिए लग्जरी रिजॉर्ट के अलावा बजट होटल भी बड़ी आसानी से मिल जाएंगे।

# जर्मनी के प्रचलित शहरों में से एक कोलोन

जर्मनी के प्रमुख शहरों में से एक कोलोन में जमीन पर तो अब रोम साम्राज्य के अधिक अवशेष दिखाई नहीं देते हैं परंतु जमीन के तले आज भी रोम साम्राज्य के प्रभुत्व के प्रमाण मौजूद हैं। एक सीढ़ी की मदद से नीचे उतरने पर रहस्यमयी अंधेरे से घिरे दूसरी सदी की एक कब्रगाह तक पहुंचा जा सकता है।

विभिन्न पौराणिक जीवों की आकृतियों से सजा एक विशाल ताबूत यहां दिखाई देता है।इसका ढक्कन हटाया गया है जिसके भीतर झांकने पर सारा डर दूर हो जाता है क्योंकि इसमें कोई भयावह चीज नहीं बल्कि दो कुर्सियां रखी दिखाई देती हैं। पहली नजर में ये कुर्सियां आजकल की आम कुर्सियां जैसी प्रतीत होती हैं परंतु ध्यान से देखने पर इनका महत्व महसूस होने लगता है क्योंकि इन कुर्सियों को बेहद कलात्मक ढंग से चूना पत्थर से करीब 1800 वर्ष पहले तैयार किया गया था।

इन भूमिगत हिस्सों में सब कुछ बेहद प्राचीन है। बेशक कई सौ वर्ष पूर्व कोलोन वासी रोम साम्राज्य से आजाद हो गए थे और जमीन से तो इसके अधिकतर अवशेष हटा दिए गए परंतु जमीन के नीचे आज भी कोलोनिया क्लाऊडिया अरा एग्रीप्पिनेननसियम (वह उपनिवेश जिससे यह नगर विकसित हुआ) के अवशेष बाकी हैं। गवर्नर के महल प्रायटोरियम का पता ही नहीं चलता यदि द्वितीय विश्व युद्ध में कोलोन शहर का मध्य हिस्सा तबाह न हुआ होता।

आज पर्यटक इस महल के अवशेषों की सैर कर सकते हैं जो सोमवार को छोड़ कर सप्ताह के बाकी दिन खुला रहता है।इसके ठीक साथ प्राचीन गटर है।रोमन 100 किलोमीटर दूर एफिल पहाड़ियों से ताजा पानी कोलोन तक लाए थे जबकि गंदे पानी की निकासी वे राइन नदी में करते थे। इसके लिए जिस तकनीक का इस्तेमाल प्राचीन रोमन करते थे उसका पता अन्यों को 19वीं सदी में जाकर लगा था।

इस जर्मन शहर में रोम साम्राज्य के कई नए अवशेषों का भी पता चलता रहा है, विशेषकर भूमिगत रेलवे के लिए की जाने वाली खुदाई के चलते कई अवशेषों का पता चल रहा है।हालांकि शहर के भीतरी हिस्से में रहने वाले किसी भी इंसान को प्राचीन अवशेषों का पता चल सकता है।1965 में एक व्यक्ति को अपने घर के बेसमैंट की खुदाई में कुछ पत्थरों से बने हिस्से मिले थे जो एक प्राचीन स्मारक निकला।आज यह रोमन-जर्मेनिक म्यूजियम की शोभा बढ़ा रहा है।इससे पहले 1941 में भी एक बंकर की खुदाई के दौरान एक खोज हुई थी।

तब भगवान डाइओनीसोस का एक मोजायक मिला था जिसमें 15 लाख टाइल्स लगी थीं। यदि आप जानना चाहें कि प्राचीन रोम वासी किस तरह से स्पा का आनंद लिया करते थे तो आपको कोलोन से निकल कर करीब स्थित जुएलपिच कस्बे तक जाना होगा। वहां म्यूजियम ऑफ बैथ कल्चर में प्राचीन रोम के स्नानागारों के संरक्षित अवशेष सहेज कर रखे गए हैं। संग्रहालय में मॉडल्स बना कर रोम कालीन स्नानागारों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई है।गहरे रंग में रंगे स्नानागारों में कपड़े बदलने के लिए लॉकर रूम बने हैं।

स्वीटिंग या हॉट बैथ में स्नान करने से पहले शरीर पर तेल लगाया जाता था या मालिश करवाई जाती थी। फिर करीब 40 डिग्री तक गर्म पानी में स्नान किया जाता था। बाद में वे ठंडे पानी में नहाते थे।स्नानागारों में केश विन्यासक, चिकित्सक तथा रसोइए भी मेहमानों की सेवा में मुस्तैद रहते थे। स्नानागारों के नीचे गुलाम लगातार आग जला कर रखते थे जिसकी ऊष्मा फर्श तथा दीवारों बने छिद्रों से होकर स्नानागार तक पहुंचती रहती थी।

जब आग के लिए लकड़ी पाने के लिए आस-पास के जंगलों के पेड़ों को काट कर खत्म कर दिया गया तो प्राचीन रोम वासी ब्लैक फॉरैस्ट से लकड़ी काट कर राइन नदी के रास्ते कोलोन तक पहुंचाने लगे थे।उस वक्त अभिजात्य वर्ग के रोम वासियों के लिए विशेष शौचालय भी बनाए गए थे जहां वे एक साथ बैठ कर निवृत्त होते हुए विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श भी किया करते थे। इतिहास पर नजर डालें तो कोलोन की खूबियों ने रोमन साम्राज्य का मन पूरी तरह मोह लिया था।

इतिहास बताता है कि हर किसी ने कोलोन को अपना बनाने की कई कोशिशें कीं।यह रोमन साम्राज्य का एक बड़ा केंद्र रहा। 2 हजार साल पहले राइन नदी के किनारे रोमन साम्राज्य का विस्तार केंद्र कोलोन ही था। रोम शासकों ने यहां अपनी व्यापारिक चैकी स्थापित की थी और नाम दिया था कोलोनिया। रोमन दौर की निशानियां कोलोन में आज भी यहां वहां बिखरी हुई हैं। राइन नदी इलाके में व्यापार का प्रमुख रास्ता रहा है और इसकी बदौलत कोलोन की समृद्धि भी रही। मध्ययुगीन दौर में रोमन शासन के बनाए 12 चर्च और किले सरीखे तीन नगर द्वार कोलोन की विशिष्टता रहे हैं।

# इस एक स्थान पर होती है तीन धर्मों की यात्रा

संसार भर में भारत ही ऐसा देश है जहां विभिन्न धर्मों से जुड़े लोग एकजुट होकर रहते हैं। बहुत से ऐसे स्थान हैं जहां विभिन्न धर्मों के पवित्र स्थल एक ही स्थान पर स्थापित हैं। उन्हीं में से एक तीर्थ है राजगृह। राजगृह हिन्दू, बौद्ध और जैन तीनों धर्मों के अनुयायीयों का तीर्थ है। पुरातन काल में राजगृह मगध की राजधानी हुआ करती थी तत्पश्चात मौर्य साम्राज्य आया। महाभारत में राजगृह को तीर्थ माना गया है। राजगृह के समीप अरण्य में जरासंध की बैठक नाम की एक बारादरी अवस्थित है।

### हिन्दू तीर्थ

यहां प्रवाहित होने वाली सरस्वती नदी को स्थानीय लोग प्राची सरस्वती कहते हैं। सरस्वतीकुण्ड से आधा मील की दूरी पर सरस्वती को वैतरणी कहा जाता है। इस नदी के तट पर पिण्डदान और गोदान का बहुत महत्व है इसलिए यहां प्रत्येक धर्म-समुदाय के लोग पिण्डदान करते हैं। यहां मार्कण्डेयकुण्ड, व्यासकुण्ड, गंगा-यमुनाकुण्ड, अनन्तकुण्ड, सप्तर्षिधारा और काशीधारा हैं। जिनके समीप बहुत से देवी-देवताओं के मंदिर अवस्थित हैं।

### बौद्ध तीर्थ

पुरातन काल में इस स्थान पर बौद्धों के 18 विहार हुआ करते थे। राजगृह मुख्य बौद्ध तीर्थ है क्योंकि महात्मा बुद्ध ने अपने जीवन काल का बहुत बड़ा हिस्सा यहां व्यतित किया था। वर्षा के चार महीने यहीं व्यतीत किया करते थे।

### जैन तीर्थ

जैन तीर्थ पंच पहाड़ों पर स्थित है। इक्कीसवें तीर्थंकर मुनि सुव्रतनाथ का जन्म इसी पहाड़ी पर हुआ था। यही उनकी तपो भूमी थी। मुनिराज धनदत्त और महावीर के बहुत सारे गणधर इसी स्थान से मोक्ष को प्राप्त हुए थे। जैनयात्री यहां विशेष रूप से दर्शनों के लिए आते हैं।

## घने कोहरे में दर्जनों गाड़ियां भिड़ीं, 3 की मौत कई घायल

नई दिल्ली/उन्नाव। दिल्ली-एनसीआर और उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा व मध्य प्रदेश में घना कोहरा छाया हुआ है। इससे सड़कों पर विजिबिलिटी कम हो गई है। रेल व हवाई यातायात प्रभावित हुआ है। सड़क पर वाहन चालकों को ड्राइविंग में परेशानी हो रही है। कोहरे की वजह से उत्तर प्रदेश में कई वाहन टकरा गए, जिनमें तीन की मौत हो गई, वहीं कई यात्री गंभीर रूप से घायल हो गए। जानकारी के अनुसार कोहरे की वजह से उन्नाव में आगरा लखनऊ एक्सप्रेस-वे पर घने कोहरे का कहर दिखा है। यहां आगरा लखनऊ एक्सप्रेस-वे पर भीषण हादसा हो गया। कोहरे के बीच एक के बाद 3 बसें, एक ट्रक, 2 कार सहित 6 वाहन भिड़ गए। एक डबल डेकर बस भी अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई। हादसे के बाद यात्रियों में चीख-पुकार मच गई। इस घटना में एक यात्री की मौत हो गई और लगभग दो दर्जन यात्री गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस व यूपीडा कर्मियों ने घायलों को अस्पताल भेजा। इनमें से 6 यात्रियों की हालत ज्यादा गंभीर थी उन्हें ट्रॉमा सेंटर लखनऊ के लिए रेफर कर दिया गया है। बागपत में ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेस वे पर हादसे में 2 लोगों की मौत हो गई और 13 घायल हो गए। यहां देर रात बस और ट्रक की भिड़ंत हो गई। बस में सवार करीब 13 लोग घायल हुए हैं। यह लोग पंजाब से वृंदावन जा रहे थे। विजिबिलिटी कम होने से बस ट्रक से टकरा गई। इसमें दो महिलाओं की मौत हो गई। घायलों को पुलिस ने जिला अस्पताल में उपचार के लिए भर्ती कराया है। पुलिस ने क्षतिग्रस्त वाहनों को किनारे करवाकर मामले की पड़ताल शुरू कर दी है। घने कोहरे के कारण दिल्ली हवाईअड्डे पर फ्लाइटस देरी से आ रही हैं। इससे घरेलू और अंतरराष्ट्रीय करीब 110 उड़ानें प्रभावित हैं।

## 17 साल की लड़की से दुष्कर्म, मशहूर फिल्म निर्माता और अभिनेता गिरफ्तार

मुंबई। मुंबई में एक नाबालिग लड़की को फिल्म में काम दिलाने का लालच देकर उसके साथ दुष्कर्म करने की घटना हुई है. इस मामले में गुजराती फिल्मों में काम कर चुके अभिनेता और निर्माता के खिलाफ अँधेरी की डीएननगर पुलिस ने मामला दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया है. जानकारी के मुताबिक, 40 वर्षीय गुजराती फिल्म अभिनेता और निर्माता ने 17 वर्षीय लड़की को फिल्म में अभिनय करने का लालच दिया। इसके बाद उसने उसके साथ दुष्कर्म किया। इस मामले में पीड़ित लड़की ने डीएननगर थाने में शिकायत दर्ज कराई. इसके बाद पुलिस ने आरोपी के खिलाफ पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया. पीड़िता भी गुजराती है. वहीं आरोपी फिल्म निर्माता और अभिनेता भी गुजरात के रहने वाले हैं. वह फिलहाल अंधेरी में रहते हैं। आरोपी पीड़ित लड़की के चाचा का परिचित था. लड़की आरोपी से इस उम्मीद में परिचित हुई कि उसे किसी फिल्म में काम करने का मौका मिलेगा. फिर सोमवार को आरोपी ने पीड़िता को अंधेरी के एक होटल के कमरे में बुलाया. वहां उसके साथ छेड़छाड़ की. इस घटना के बाद डरी हुई लड़की भागकर सीधे डीएननगर पुलिस स्टेशन पहुंची. उसने आरोपी के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई. नाबालिग लड़की की शिकायत के बाद, डीएननगर पुलिस ने भारतीय दंड संहिता की धारा 354 (छेड़छाड़ के इरादे से हमला) और पॉक्सो (सुरक्षा), 8 (यौन हमला) के तहत मामला दर्ज किया। इसके बाद पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया. आगे की जाँच डीएननगर पुलिस कर रही है.

## आरबीआई को धमकी भरा ईमेल भेजने वाला गिरफ्तार

मुंबई । भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) को धमकी भरा ईमेल भेजने वाले आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। मुंबई क्राइम ब्रांच ने आरोपी को वडोदरा से गिरफ्तार किया है। आरोपी से अभी पूछताछ की जा रही है। बता दें कि आरोपी ने आरबीआई दफ्तर में धमकी भरा ईमेल किया था। मेल में लिखा था की मुंबई में 11 जगहो पर बम रखे हैं। मुंबई पुलिस ने आरोपी की गिरफ्तारी की पुष्टि की है। पुलिस ने बताया कि मुंबई पुलिस की क्राइम ब्रांच की टीम ने आरोपी को वडोदरा से गिरफ्तार किया है। आरोपी ने आरबीआई को धमकी भरा ईमेल भेजा था। गौरतलब है कि आरोपी ने आरबीआई को मेल पर धमकी दी थी। शख्स ने मेल में लिखा था कि आरबीआई दफ्तर, एचडीएफसी बैंक और आईसीआईसीआई बैंक के अंदर बम रखा है। आरोपी ने आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास और केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण का इस्तीफा भी मांगा था।

## मानव तस्करी के मामले में इस कुख्यात मानव तस्कर का नाम सामने आ रहा

मुंबई । सैकड़ों भारतीयों को लेकर एक चार्टर विमान, इस विमान को पिछले हफ्ते फ्रांस में खड़ा किया गया था, मंगलवार सुबह करीब 4 बजे मुंबई पहुंचा। एयरबस ए340 276 यात्रियों के साथ वापस लौटा। पांच नाबालिगों सहित कम से कम 25 यात्रियों ने फ्रांस में शरण का अनुरोध किया। लीजेंड एयरलाइंस नामक रोमानियाई चार्टर कंपनी द्वारा संचालित उड़ान, 21 दिसंबर की दोपहर को संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के दुबई से फ्रांस के वैट्री हवाई अड्डे पर उतरी थी। फ्रांसीसी अधिकारियों ने गुमनाम सूचना के बाद निकारागुआ जाने वाले विमान को रोक दिया था कि उसके यात्री मानव तस्करी के शिकार हो सकते हैं। फ्रांस में चार दिनों तक रुके चार्टर विमान को लेकर एक कुख्यात मानव तस्कर का नाम सामने आया है। इस पूरे घटनाक्रम में हैदराबाद का एक व्यक्ति मास्टरमाइंड हो सकता है। भारतीय सुरक्षा एजेंसियों ने बताया कि शशि किरण रेड्डी, जो पिछले साल एक अन्य मानव तस्करी मामले का कथित सरगना है, नवीनतम घटना से भी जुड़ा हुआ है। जनवरी 2022 में, गुजरात के डिंगुचा गांव के एक परिवार के चार सदस्य अवैध रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रवेश करने की कोशिश करते समय कनाडा के मैनिटोबा के एक खेत में जमे हुए पाए गए थे। चार पीड़ित-एक दंपति और उनके दो नाबालिग बच्चे गुजरात के 11 लोगों के एक बड़े समूह का हिस्सा थे जो अमेरिका में प्रवेश करने की कोशिश कर रहे थे। सूत्रों के अनुसार, रेड्डी, जो 15 वर्षों से मानव तस्करी नेटवर्क का संचालन कर रहा है, निकारागुआ जाने वाले उड़ान मामले का मास्टरमाइंड हो सकता है। वह कथित तौर पर दुबई से निकारागुआ के लिए चार्टर्ड उड़ानों की व्यवस्था करने में शामिल है, जो अप्रवासियों के लिए अवैध रूप से अमेरिका में प्रवेश करने के लिए एक लोकप्रिय गंतव्य के रूप में उभरा है। बताया जा रहा है कि निकारागुआ की राजधानी मानागुआ की उड़ान में 303 यात्रियों में से 96 गुजरात से थे। रेड्डी पर पिछले दो महीनों में लगभग 800 अवैध भारतीय अप्रवासियों को पर्यटक बताकर निकारागुआ भेजने का आरोप है। सूत्रों का दावा है कि इससे पहले, उन्होंने उन्हें वैट्री हवाई अड्डे पर रुकने वाली 50 सीटों वाली उड़ानों पर भेजा।

## माता वैष्णो देवी मंदिर में अब तक रिकॉर्डतोड़ तीर्थयात्री

### -कुल संख्या 93.50 लाख से अधिक

जम्मू । वैष्णो देवी मंदिर में इस साल रिकॉर्डतोड़ तीर्थयात्री पहुंचे हैं। इस वर्ष अब तक 93.50 लाख से अधिक तीर्थयात्री वैष्णो देवी के गुफा मंदिर के दर्शन कर चुके हैं। ऐसा चमत्कार 10 साल बाद हुआ है। मंदिर समिति के अधिकारियों का कहना है कि प्रतिदिन 37 हजार से 44 हजार श्रद्धालुगण मंदिर की यात्रा कर रहे हैं और उन्हें उम्मीद है कि साल के अंत तक प्रतिदिन का आंकड़ा 50 हजार पार करेगा। वैष्णो देवी मंदिर के अधिकारियों का कहना है कि अभी तक मंदिर में कुल 93.50 लाख लोगों ने मंदिर के दर्शन किए। रियासी जिले में त्रिकुटा पहाड़ियों में स्थित वैष्णो देवी मंदिर में लाखों की संख्या में लोगों ने दर्शन किए। इससे पहले 2013 में रिकॉर्डतोड़ 93.24 लाख लोगों ने दर्शन किए थे। 2023 में यह आंकड़ा भी पार कर गया। श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अंशुल गर्ग ने कहा, 93.24 लाख से अधिक तीर्थयात्रियों के नए रिकॉर्ड के साथ तीर्थयात्रा पिछले दस वर्षों में सबसे अधिक है। तीर्थ यात्रा के इतिहास में सबसे अधिक संख्या 2012 में थी, जिसमें 1,04,09,569 श्रद्धालु पहुंचे थे। इसके बाद 2011 में 1,01,15,647 श्रद्धालु थे। गर्ग ने कहा कि प्रतिदिन 37,000 से 44,000 श्रद्धालु मंदिर की यात्रा कर रहे हैं और उन्हें उम्मीद है कि साल के अंत तक यह आंकड़ा 50,000 श्रद्धालु प्रतिदिन तक पहुंच जाएगा। उन्होंने कहा कि इस साल अनुमान है कि भगवान के दर्शन के लिए आने वाले भक्तों की संख्या 95 लाख से अधिक हो जाएगी। हाल ही में मंदिर में सुविधाओं के मामले में कुछ बढ़ोतरी देखी गई है। जिसमें माता वैष्णो देवी भवन और दुर्गा भवन में स्काईवॉक भी शामिल है। स्काईवॉक और एक पुनर्निर्मित पार्वती भवन का उद्घाटन अक्टूबर में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा किया गया था। इसके अलावा, कटरा में तीर्थस्थल आधार शिविर एक अत्याधुनिक कॉल सेंटर बन चुका है। यहां 24 घंटे तीर्थयात्रियों की मदद की जाती है।

# राहुल गांधी के नेतृत्व में मणिपुर से मुंबई तक कांग्रेस की 'भारत न्याय यात्रा' 14 जनवरी से शुरू होगी

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** कांग्रेस ने बुधवार को घोषणा की है कि पार्टी नेता राहुल गांधी की अगुवाई में 14 जनवरी से 20 मार्च तक मणिपुर से मुंबई( पूरब से पश्चिम) तक 'भारत न्याय यात्रा' निकाली जाएगी। पार्टी ने कहा कि 2024 के लोकसभा चुनावों से पहले आयोजित की जाने वाली यह यात्रा 67 दिन में 14 राज्यों और 85 जिलों से होकर गुजरेगी। 'भारत न्याय यात्रा' के दौरान लगभग 6,200 किलोमीटर की दूरी तय की जायेगी। यात्रा ज्यादातर बस से होगी, लेकिन कहीं-कहीं पदयात्रा भी होगी। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष गांधी ने सात सितंबर 2022 से 30 जनवरी 2023 तक कन्याकुमारी से कश्मीर तक 'भारत जोड़ो यात्रा' निकाली थी। गांधी की 136 दिन की इस यात्रा में 12 राज्यों और दो केंद्रशासित प्रदेशों के 75 जिलों और 76 लोकसभा क्षेत्रों से गुजरते हुए 4,081 किलोमीटर की दूरी तय की गई थी।

कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि जहां गांधी ने 'भारत जोड़ो यात्रा' के दौरान ''आर्थिक असमानताओं, ध्रुवीकरण और तानाशाही'' के मुद्दों को उठाया था, वहीं 'भारत न्याय यात्रा' में देश के लोगों के लिए आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक न्याय पर ध्यान केन्द्रित किया जाएगा। 'भारत न्याय यात्रा' मणिपुर, नगालैंड, असम, मेघालय, पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र से होकर गुजरेगी। पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे 14 जनवरी को इंफाल से यात्रा को झंडी दिखाकर रवाना करेंगे। इस यात्रा को आगामी लोकसभा चुनावों के मद्देनजर राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण माना जा रहा है। लोकसभा चुनाव अगले साल अप्रैल-मई में होने की संभावना है।

रमेश ने कहा, ''कांग्रेस 'भारत जोड़ो यात्रा' के बाद पार्टी नेता राहुल गांधी के नेतृत्व में 'भारत न्याय यात्रा' निकालेगी।'' उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी की स्थापना दिवस के मौके पर नागपुर में 28 दिसंबर को एक व्यापक रैली आयोजित करेगी। उन्होंने कहा कि रैली का नाम होगा 'हैं तैयार हम' और इसके जरिये कांग्रेस2024 के लोकसभा चुनाव का बिगुल फूंकेगी। पार्टी के महासचिव (संगठन) के. सी. वेणुगोपाल ने कहा कि इस यात्रा में देश की महिलाओं, युवाओं और वंचित समुदाय के लोगों से बातचीत की जाएगी। कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया था कि पार्टी नेता राहुल गांधी को पूरब से पश्चिम तक 21 दिसंबर से दूसरे चरण की यात्रा करनी चाहिए, जिसके बाद इस यात्रा की घोषणा की गई है। यात्रा मणिपुर से प्रारंभ करने के कारण के बारे में पूछे जाने पर वेणुगोपाल ने कहा कि यह देश का महत्वपूर्ण हिस्सा है, साथ ही पार्टी उस पूर्वोत्तर राज्य के लोगों के 'जख्मों पर मरहम' लगाने की प्रक्रिया शुरू करना चाहती है।

मणिपुर में तीन मई को हिंसा शुरू होने के बाद से कुकी और मेइती समुदाय के लोगों के बीच जातीय संघर्ष में 200 से अधिक लोगों की जान जा चुकी है और 60,000 से अधिक लोग बेघर हो चुके हैं। रमेश ने कहा, '' भारत जोड़ो यात्रा में एकता, प्रेम और सौहार्द का संदेश फैलाने के बाद गांधी अब देश के लोगों के लिए न्याय मांगेंगे।'' रमेश ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि 'भारत जोड़ो यात्रा' जहां संविधान की प्रस्तावना के मूल ''स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व'' के इर्द-गिर्द केन्द्रित थी, वहीं 'भारत न्याय यात्रा' प्रस्तावना के पहले स्तंभ न्याय- सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पर केन्द्रित है।'' उन्होंने कहा, ''संविधान पर लगातार हमलों को सफल होने नहीं दिया जाएगा।''

यह पूछे जाने पर कि क्या विपक्षी गठबंधन 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस' (इंडिया) के अन्य धड़े इस यात्रा में शामिल होंगे, वेणुगोपाल ने कहा कि कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की जा रही है। रमेश ने बताया कि 'भारत जोड़ो यात्रा' में विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं ने भी हिस्सा लिया था। 'भारत जोड़ो यात्रा' के दौरान गांधी ने 12 बैठकें, 100 से अधिक नुक्कड़ बैठकें की थीं और 13 संवाददाता सम्मेलनों को संबोधित किया था।

## नीतिश से मिलने पहुंचे पूर्व बाहुबली सांसद आनंद मोहन, पत्नी लवली आंनद भी रही मौजूद

पटना। बिहार की सियासत में इनदिनों फिर से हलचल बढ़ गई है। जानकारी के मुताबिक बिहार के पूर्व बाहुबली सांसद आनंद मोहन अपनी पत्नी लवली के साथ मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के आवास पर पहुंचे हैं। आनंद मोहन के इस तरह से सीएम आवास पर पहुंचने से सियासी अटकलें तेज हो गई हैं। सियासी गलियारों में तरह तरह के कयास लग रहे हैं। कहा जा रहा है कि आनंद मोहन परिवार लालू यादव के लालटेन को छोड़कर नीतीश के तीर धनुष को थाम सकते हैं। हालांकि, अभी इस पर किसी भी तरह का आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है।

बता दें कि सीएम आवास पर नीतीश के दो दिग्गज मंत्री विजय चौधरी और विजेंद्र यादव भी मौजूद रहे। बताया जा रहा है कि लोकसभा चुनाव के पहले आनंद मोहन ने जदयू नेताओं के साथ मीटिंग की है। 29 दिसंबर को जदयू की कार्यकारिणी की बैठक होने वाली है। इसलिए बैठक को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। कयास लग रहे हैं कि लवली आनंद 2024 के चुनाव में फिर से एक बार जदयू से मैदान में उतर सकती हैं। हालांकि, उनके बेटे फिलहाल आरजेडी से विधायक के तौर पर बने हुए हैं। आनंद मोहन पहले ही बयान दे चुके हैं कि वह आगामी चुनाव लड़ूंगा। बता दें कि इसके पहले भी नीतीश और आनंद मोहन में कई बार मुलाकात हो चुकी है। नीतीश कुमार इससे पहले सहरसा में उनके गांव भी गए थे। जहां उन्होंने एक मूर्ति का अनावरण किया था। इस दौरान सीएम नीतीश ने उनकी जमकर तारीफ की थी। उन्होंने आनंद मोहन और लवली को अपना पुराना दोस्त बताया था।

# सीएए लागू करना भाजपा की प्रतिबद्धता, सीएम ममता बैनर्जी कर रहीं गुमराह : अमित शाह

### - घुसपैठ, गौ तस्करी खत्म कर धार्मिक रूप से सताए हिन्दुओं को नागरिकता प्रदान करना पार्टी का लक्ष्य

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** नागरिकता (संशोधन) अधिनियम देश का कानून है और कोई भी इसके कार्यान्वयन को रोक नहीं सकता है। यह बात केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कोलकाता के नेशनल लाइब्रेरी में राज्य भाजपा के आईटी विंग सदस्यों की एक बैठक को संबोधित करते हुए कही। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर इस मुद्दे पर लोगों को गुमराह करने का आरोप लगाते हुए शाह ने सीएए लागू करने की पार्टी की प्रतिबद्धता से अवगत कराया। शाह ने विश्वास जताया कि पार्टी राज्य की 42 लोकसभा सीटों में से 35 से अधिक सीटें हासिल करेगी। साल 2019 के चुनावों में, भगवा पार्टी ने 18 सीटें जीतीं।

बंगाल भाजपा मीडिया सेल ने बंद कमरे में आयोजित कार्यक्रम में शाह के भाषण के संकेतों की एक सूची स?हित वीडियो क्लिप भी साझा कीं। अमित शाह ने कहा कि हमें अगले विधानसभा चुनाव के बाद पश्चिम बंगाल में भाजपा की सरकार बनाने के लिए काम करना है। भाजपा सरकार का मतलब घुसपैठ, गौ तस्करी को खत्म करना और सीएए के माध्यम से धार्मिक रूप से सताए गए लोगों को नागरिकता प्रदान करना होगा। केंद्रीय गृह मंत्री ने ममता बनर्जी की आलोचना करते हुए कहा कि वह लोगों को गुमराह कर रही हैं कि देश में सीएए लागू होगा या नहीं। गृह मंत्री ने कहा कि कभी-कभी वह लोगों को, शरणार्थियों को गुमराह करने की कोशिश करती है कि देश में सीएए लागू होगा या नहीं। मैं यह स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूं कि सीएए देश का कानून है और इसे लागू होने से कोई नहीं रोक सकता। यह हमारी पार्टी की प्रतिबद्धता है। ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली टीएमसी सीएए का विरोध कर रही है, जिसे 2019 में संसद द्वारा पारित किया गया था। सीएए पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से हिंदू, सिख, जैन, बौद्ध, पारसी और ईसाइयों जैसे उत्पीड़ित अल्पसंख्यकों को भारतीय नागरिकता प्रदान करना चाहता है, जो 31 दिसंबर 2014 को या उससे पहले भारत में आए थे।

## जवानों को संबोधित कर रक्षामंत्री ने कहा, हमारे लिए हर सैनिक परिवार के सदस्य के समान

**जम्मू (एजेंसी)।** देश के केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह बुधवार को जम्मू दौरे पर पहुंचे हैं। उपराज्यपाल मनोज सिन्हा व सेना के उच्च अधिकारियों ने जम्मू एयरपोर्ट पर उनका स्वागत किया। रक्षा मंत्री सिंह के साथ सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे भी जम्मू आए हैं। रक्षा मंत्री सिंह जमीनी हकीकत की जानकारी लेने के लिए पहुंचे। केंद्रीय रक्षा मंत्री ने राजौरी में सैनिकों को संबोधित कर उनका मनोबल बढ़ाया। उन्होंने पुंछ हमले में बलिदान हुए चार जवानों को श्रद्धांजलि देकर घायलों के शीघ्र ठीक होने की कामना की। केंद्रीय रक्षा मंत्री ने कहा, ... हमारे लिए हर सैनिक बेहद महत्वपूर्ण है, हमारा हर एक सैनिक परिवार के सदस्य के समान है। आपके ऊपर कोई नजर डाले यह हमें कतई बर्दाश्त नहीं है। इस प्रकार की घटनाओं को रोकने में सुरक्षा और इंटेलिजेंस एजेंसी दोनों महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके लिए शासन की तरफ से जिस भी सहयोग की आवश्यकता होगी उसके लिए सरकार का खजाना खुला हुआ है...

रक्षा मंत्री सिंह ने सैनिकों की बहादुरी की सराहना करते हुए कहा कि उन्हें पूरा विश्वास है कि सेना जम्मू-कश्मीर की धरती से आतंकवाद का सफाया कर देगी। उन्होंने कहा, मुझे आपकी बहादुरी और दृढ़ता पर विश्वास है... जम्मू-कश्मीर से आतंकवाद खत्म होना चाहिए और आपको इस प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ने की जरूरत है। मुझे पूरा विश्वास है कि आप जीत हासिल करेंगे। इसके साथ-साथ आपको लोगों का दिल भी जीतना है।

## ममता ने राम मंदिर उद्घाटन कार्यक्रम से किया किनारा... भेजा गया था न्यौता

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** 22 जनवरी 2024 को राम मंदिर का उद्घाटन होने वाला है। अयोध्या में इसकी तैयारी जोर-शोर से चल रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हैं। उन्हीं के हाथों प्रतिमा की स्थापना होनी है। उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार इसकी तैयारी में जुट गई है। सत्ता पक्ष से लेकर विपक्ष के तमाम बड़े नेताओं और देश के विभिन्न जगत के दिग्गजों को न्यौता भेजा गया है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को भी आमंत्रित किया गया है। इस बीच खबर है कि वह और उनकी पार्टी तृणमूल कांग्रेस कार्यक्रम में शिरकत नहीं करेगी। बता दें कि राम मंदिर निर्माण समिति के अध्यक्ष और ट्रस्ट के पदेन सदस्य नृपेंद्र मिश्रा, आरएसएस के अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख राम लाल और वीएचपी के अंतरराष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष आलोक कुमार ने सोनिया गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे से मुलाकात कर उन्हें समारोह में आमंत्रित किया। मिश्रा ने पूर्व पीएम मनमोहन सिंह से भी मिलने का समय मांगा था लेकिन पूर्व प्रधानमंत्री कार्यालय ने उनके नाजुक स्वास्थ्य का हवाला देकर समय देने से इंकार कर दिया। पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवेगौड़ा और पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को भी भव्य समारोह में आमंत्रित किया। पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल को भी निमंत्रण भेजा गया है। प्राण प्रतिष्ठा समारोह के लिए अतिथि सूची सावधानीपूर्वक तैयार की गई है। इसमें उद्योगपति, वैज्ञानिक, अभिनेता, सेना अधिकारी से लेकर पद्म श्री और पद्म भूषण पुरस्कार विजेता तक शामिल हैं। अतिथि सूची में तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा, योग गुरु बाबा रामदेव, उद्योगपति अडानी समूह के गौतम अडानी, रिलायंस के मुकेश अंबानी, अभिनेता अमिताभ बच्चन, रजनीकांत, माधुरी दीक्षित नेने, रामानंद सागर की रामायण टीवी श्रृंखला में राम की भूमिका निभाने वाले अरुण गोविल , फिल्म निर्देशक मधुर भंडारकर, गीतकार प्रसून जोशी सहित अन्य शामिल हैं।

# राजस्थान में कैबिनेट विस्तार की तैयारी

### -नए विधायकों को मिल सकती है जगह

**जयपुर (एजेंसी)।** राजस्थान में भी नई भाजपा सरकार की कैबिनेट विस्तार की तैयारी शुरु हो चुकी है। छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश के बाद राजस्थान में भजन लाल शर्मा सरकार में एक या दो दिन में नए मंत्रियों को शामिल किए जाने की उम्मीद है।

प्राप्त जानकारी के मुताबिक, गुरुवार को कैबिनेट विस्तार हो सकता है और शपथ ग्रहण के लिए राजभवन में तैयारियां की जा रही हैं।माना जा रहा है कि मध्य प्रदेश की तरह ज्यादा नए विधायकों को मौके दिए जाएंगे।इस मुद्दे के बारे में पूछे जाने पर भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सी.पी. जोशी ने कहा, आपको मंत्रिमंडल विस्तार के बारे में जल्द ही सूचित किया जाएगा।

सीएम शर्मा मंगलवार को श्रीकरणपुर विधानसभा के दौरे पर थे और मंगलवार शाम को जयपुर लौट आए। कैबिनेट विस्तार के चलते ज्यादातर विधायक जयपुर में ही रुके हुए हैं।अटकलें हैं कि वरिष्ठ सदस्यों की जगह उन विधायकों को मौका दिया जा सकता है, जो अब तक कभी मंत्री नहीं बने हैं। कुछ वरिष्ठ विधायकों को भी मंत्री बनाया जा सकता है और उनकी संख्या ज्यादा नहीं होगी।वहीं, लोकसभा चुनाव के मद्देनजर नए मंत्रियों के चयन में जातीय और क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखने पर भी नजर रहेगी।इस पृष्ठभूमि में माना जा रहा है कि शेखावाटी क्षेत्र, जहां भाजपा का प्रदर्शन फिसड्डी रहा है, वहां ज्यादातर जीते हुए विधायकों को कैबिनेट में शामिल किया जा सकता है।इस बीच, पूर्व सीएम अशोक गहलोत देरी से हो रहे कैबिनेट विस्तार को लेकर भाजपा सरकार पर हमला बोल रहे हैं। उन्होंने कहा, राजीव गांधी युवा इंटर्नशिप कार्यक्रम को बंद कर जहां युवाओं को रोजगार से वंचित किया जा रहा है, वहीं चिरंजीवी योजना के तहत इलाज नहीं होने की खबरें भी आ रही हैं। ऐसे में जरूरी हो जाता है कि सबसे पहले राजस्थान के हित में सरकार का गठन हो, कैबिनेट बने और हमारी योजनाओं और सुचारु शासन के बारे में स्थिति स्पष्ट की जाए।÷ उन्होंने कहा कि उनकी सरकार की अद्भुत योजनाओं को बंद नहीं करने की गारंटी नहीं मिलने के कारण नई सरकार से जनता की उम्मीद शुरुआत में ही खत्म हो गई है।

## जनवरी के अंत में भाजपा कर सकती है लोस उम्मीदवारों का ऐलान

नई दिल्ली । लोकसभा चुनाव में करीब 4 महीनों का समय बाकी है, लेकिन भारतीय जनता पार्टी ने तैयारियां तेज कर दी हैं। इस बीच खबर है कि पार्टी जनवरी के अंत से ही उम्मीदवारों का ऐलान शुरू कर देगी। हालांकि, इस खबर को लेकर भाजपा ने आधिकारिक तौर पर कुछ नहीं कहा है। इतना ही नहीं कहा जा रहा है कि भाजपा 2024 में राज्यसभा सांसदों को भी मैदान में उतार सकती है। हाल ही में भाजपा ने हिंदी पट्टी के तीन बड़े राज्यों मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में बड़ी जीत दर्ज की थी। रिपोर्ट में सूत्रों के हवाले से कहा गया है कि जल्दी सूची जारी करने का प्रयोग भाजपा के लिए सफल साबित हुआ है। सूत्रों का कहना है कि इससे पार्टी अपने प्रतिद्वंदियों के सामने एक कदम आगे निकल सकती है। सूत्र ने कहा, समय रहते फैसला लेना हमारे पक्ष में है। साथ ही उन लोगों के लिए भी शुरुआत का सही समय है, जो बड़े नाम हैं और उपयोगी होते हुए भी मैदान में नहीं उतारे गए हैं। उन्होंने कहा, इससे राज्यसभा में अन्य लोगों के लिए जगह बनेगी और संबंधित लोगों का कद भी बढ़ेगा।

# आतंकियों ने हमले का बदला पैटर्न, घना जंगल और टर्न वाले रास्ते को बनाया निशाना

**श्रीनगर (एजेंसी)।** जम्मू कश्मीर के पुंछ जिले में हुए दो आतंकी हमलों को देखकर माना जा रहा है कि आतंकियों ने हमले का पैटर्न बदल दिया है। सुरक्षा बलों की जांच में हुए खुलासे के बारे बताया जा रहा है कि बीते 8 माह में पुंछ जिले में दो आतंकी हमले हुए हैं। दोनों ही हमलो में सड़क का टर्न और घने जंगलों को ध्यान में रखकर योजना बनाने की शंका जाहिर की जा रही है। बता दें कि बीते 8 माह में पुंछ जिले में दो आतंकी हमले हुए हैं। पहला हमला 20 अप्रैल को भिंबर गली-सूरनकोट रोड पर आतंकवादियों ने सेना के ट्रक पर घात लगाकर हमला किया, जिसमें 5 जवान शहीद हो गए थे। यह अटैक उस वक्त हुआ जब सांगियोट गांव में होने वाली इफ्तार पार्टी के लिए फल और दूसरे सामान ले जाए जा रहा था। इसके बाद, दूसरा हमला 21 दिसंबर को आतंकवादियों ने देहरा की गली-बफलियाज रोड पर सेना के 2 वाहनों पर घात लगाकर हमला किया। इसमें 4 जवान शहीद हुए और 3 घायल हो गए।

दोनों ही हमले वाली जगहों के बीच जंगल है और जिसकी दूरी 30 किलोमीटर तक है। अगर आप सड़क से यात्रा करना चाहते हैं तो सुरनकोट से 55 किमी और राजौरी-थानामंडी मार्ग से 80 किमी की दूरी तय करनी होगी। रिपोर्ट के मुताबिक, इन दोनों हमलों को 4-5 की संख्या में आतंकियों ने अंजाम दिया। इससे पहले इनकी ओर से टारगेटेड लोकेशन की टोह ली गई। ऐसा मालूम होता है कि जिन जगहों पर अटैक हुआ उन्हें काफी सावधानी से चुना गया था। यहां खासतौर पर इस बात का ध्यान रखा गया कि मोड़ पर जाने से पहले वाहनों को धीमा किया जाएगा। रिपोर्ट में सूत्रों के हवाले से बताया गया कि आतंकवादियों ने दोनों हमलों में स्टील कोर बारूद का इस्तेमाल किया। यह भी पता चला कि घात लगाकर किए गए हमले के बाद उन्होंने मृत सैनिकों के हथियार लूट लिए। ऐसा मालूम होता है कि उन्होंने हमलों की तस्वीरें और वीडियो शूट करने के लिए बॉडीकैम से लैस हेडगियर पहना था। हमले से जुड़े कथित वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर भी किए गए। बता दें कि हमले के जिम्मेदार आतंकवादियों का पता लगाने के लिए दुर्गम इलाकों और घने जंगलों में सुरक्षाबलों का तलाश अभियान जारी है।

अधिकारियों ने बताया कि पिछले कुछ दिनों में 30 से अधिक संदिग्धों से पूछताछ की गई है और उनमें से कई को छोड़ दिया गया है। अधिकारी ने बताया कि अभियान में खोजी कुत्ते, निगरानी उपकरण और हवाई तंत्र शामिल हैं। उन्होंने कहा कि क्षेत्र में दबदबा बनाए रखने के अभियान के बीच घुसपैठ के 7 मार्गों को बंद करने के लिए अतिरिक्त बल तैनात किए गए हैं। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि घने जंगल, गहरी घाटियां और गुफाएं होने के कारण अभियान बेहद सावधानी से चलाया जा रहा है। राजौरी और पुंछ में लगातार चौथे दिन मोबाइल इंटरनेट सेवाएं निलंबित हैं। सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे ने सोमवार को पुंछ में घटनास्थल का दौरा किया था। सेना प्रमुख ने अपने दौरे के दौरान सुरनकोट और पास के राजौरी जिले के थानामंडी वन क्षेत्र में जारी आतंकवाद रोधी अभियान की समीक्षा की। जनरल पांडे ने सुरक्षाकर्मियों से सभी चुनौतियों के प्रति दृढ़ रहने को कहा।

## जेल से रिहा होते ही फिर गिरफ्तार हुए पीटीआई उपाध्यक्ष महमूद कुरैशी

इस्लामाबाद ।पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी के 67 वर्षीय पूर्व विदेश मंत्री और उपाध्यक्ष शाह महमूद कुरैशी को बुधवार को अदियाला जेल के बाहर से दोबारा गिरफ्तार कर लिया गया।उच्चतम न्यायालय ने पिछले सप्ताह उन्हें सिफर मामले में जमानत दी थी। पाकिस्तानी अखबार डॉन के मुताबिक, टीवी चैनलों पर प्रसारित और सोशल मीडिया पर पीटीआई द्वारा साझा की गई वीडियो फुटेज में 67 शाह महमूद कुरैशी पुलिस की कार्रवाई को गैर कानूनी करार देते हुए चिल्ला-चिल्लाकर विरोध कर रहे थे। वीडियो फुटेज में पंजाब पुलिस की वर्दी पहने एक अधिकारी उन्हें बख्तरबंद वाहन में धकियाते हुए नज़र आ रहे हैं।पार्टी ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि सिफर मामले में जमानत पर रिहाई के बाद कुरैशी को अदियाला जेल के बाहर से दोबारा गिरफ्तार कर लिया है। पार्टी ने कहा कि रावलपिंडी के उपायुक्त हसन वकार चीमा द्वारा मंगलवार को कुरैशी की 15 दिन की हिरासत के लिए जारी आदेश वापस ले लिया गया था।फिलहाल पुलिस ने इस मुद्दे पर कोई टिप्पणी नहीं की है।

## अमेरिकी सेना ने हिजबुल्लाह के ठिकानों पर बरसाए बम

वाशिंगटन। क्रिसमस की रात हिजबुल्लाह के ठिकानों पर अमेरिका ने जमकर बमबारी की।रक्षा सचिव लॉयड ऑस्टिन ने कहा कि ये हमले राष्ट्रपति जो बाइडेन के आदेश पर और क्षेत्र में गठबंधन बलों के खिलाफ समूहों द्वारा किए गए हमलों के जवाब में किए गए थे।उन?होंने एक बयान में कहा, उन हमलों में से एक 25 दिसंबर को एरबिल एयर बेस पर हुआ था, जिसके परिणामस्वरूप तीन अमेरिकी कर्मी घायल हो गए थे।एयर बेस पर हमले के चलते एक सेवा सदस्य की हालत गंभीर हो गई।ऑस्टिन ने कहा, मेरी प्रार्थनाएं उन बहादुर अमेरिकियों के साथ हैं जो घायल हुए हैं।उन?होंने कहा,और मैं स्पष्ट कर दूं - राष्ट्रपति और मैं संयुक्त राज्य अमेरिका, हमारे सैनिकों और हमारे हितों की रक्षा के लिए जरूरी कार्रवाई करने में संकोच नहीं करेंगे।ऑस्टिन ने कहा, कोई उच्च प्राथमिकता नहीं है।जबकि हम ऐसा नहीं चाहते, क्षेत्र में संघर्ष को बढ़ाने के लिए हम अपने लोगों और हमारी सुविधाओं की सुरक्षा के लिए और जरूरी उपाय करने के लिए प्रतिबद्ध और पूरी तरह से तैयार हैं।रिपोर्ट के अनुसार,यूएस सेंट्रल कमांड कमांडर जनरल माइकल एरिक कुरिला ने एक बयान में कहा, इन हमलों का उद्देश्य इराक और सीरिया में गठबंधन बलों पर हमलों के लिए सीधे तौर पर जिम्मेदार तत्वों को जवाबदेह ठहराना और हमले जारी रखने की उनकी क्षमता को कम करना है।हम हमेशा अपनी सेनाओं की रक्षा करेंगे।राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के प्रवक्ता एड्रिएन वॉटसन ने कहा कि राष्ट्रपति को आज सुबह हमले के बारे में तुरंत जानकारी दी गई, और उन्होंने रक्षा विभाग को जिम्मेदार लोगों के खिलाफ प्रतिक्रिया विकल्प तैयार करने का आदेश दिया।मीडिया रिपोर्टों में कहा गया है कि बाद में ऑस्टिन के साथ एक कॉल पर बाइडेन ने कातिब हिजबुल्लाह और संबद्ध समूहों द्वारा उपयोग किए जाने वाले तीन स्थानों पर हमले का आदेश दिया, जो विशेष रूप से मानव रहित हवाई ड्रोन गतिविधियों पर केंद्रित थे।वॉटसन के बयान में कहा गया है, राष्ट्रपति नुकसान पहुंचाने वाले अमेरिकी कर्मियों की सुरक्षा से बढ़कर कोई प्राथमिकता नहीं रखते हैं।

## कांगो में बारिश और बाढ़ से 22 लोगों की मौत, कई लापता

कनंगा( कांगो)।मध्य कांगो में भारी बारिश के कारण आई बाढ़ में कम से कम 22 लोगों की मौत हो गई है। जिनमें एक ही परिवार के 10 लोग शामिल हैं, एक स्थानीय अधिकारी ने यह जानकारी दी।प्रांत के गवर्नर जॉन काबेया ने कहा कि कसाई सेंट्रल प्रांत के कनंगा जिले में घंटों तक हुई बारिश ने कई घरों को ध्वस्त कर दिया।उन्होंने कहा कि जीवित बचे लोगों की तलाश में बचाव प्रयास तेज कर दिए गए हैं।उन्होंने बताया कि शुरुआत में बताई गई 17 मौतों के अलावा को पांच और मौतों की पुष्टि की गई है।काबेया ने कहा कि दीवार गिरने से 10 लोगों की मौत हो गई, सभी बिकुकु में एक ही परिवार के सदस्य थे।गैर सरकारी संगठन के कंट्री निदेशक नथाली कंबाला के अनुसार, बाढ़ के कारण भारी क्षति हुई थी. बताया जा रहा है कि भारी बारिश के कारण कांगो के कुछ हिस्सों खासकर दूरदराज के इलाकों में अक्सर बाढ़ आती है।मई में, पूर्वी कांगो के दक्षिण किवु प्रांत में रात भर हुई मूसलाधार बारिश के कारण आई बाढ़ और भूस्खलन में 400 से अधिक लोगों की मौत हो गई थी।काबेया ने कहा कि इस बार आई बाढ़ में क्षतिग्रस्त संरचनाओं में कनंगा का उच्च प्रौद्योगिकी संस्थान, साथ ही एक चर्च और एक प्रमुख सड़क भी कट गई है, उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय सरकार से तत्काल कार्रवाई का अनुरोध किया जाएगा. पूर्वी कांगो में रविवार देर रात भारी बारिश के कारण भूस्खलन हुआ, जिसमें कम से कम चार लोगों की मौत हो गई और 20 लोग लापता हो गए हैं।

## ईरान अत्याधिक संवर्धित यूरेनियम का उत्पादन बढ़ा रहा

वियना ।अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) ने सदस्य देशों को भेजी रिपोर्ट में कहा है कि ईरान ने हाल के हफ्तों में करीब-करीब आयुध श्रेणी के यूरेनियम की उत्पादन दर में वृद्धि कर दी है। आईएईए महानिदेशक राफेल मारियानो ग्रॉसी ने रिपोर्ट में कहा कि ईरान ने हाल के हफ्तों में अत्यधिक समृद्ध यूरेनियम के उत्पादन में वृद्धि की है, जो 2023 के मध्य से उत्पादन में कटौती के विपरीत है।ईरान ने पहले वह दर धीमी कर दी थी जिस पर वह 60 प्रतिशत शुद्धता तक यूरेनियम संवर्धन कर रहा था।60 प्रतिशत शुद्धता के साथ संवर्धित यूरेनियम और 90 प्रतिशत शुद्धता के साथ संवर्धित आयुध श्रेणी के यूरेनियम के बीच बस एक छोटे और तकनीकी कदम की दूरी है। संयुक्त राष्ट्र की परमाणु निगरानी संस्था ने कहा कि उसके निरीक्षकों ने नवंबर के अंत से नटानज और फोर्डो स्थित संयंत्रों में उत्पादन की बढ़ी हुई दर को लगभग नौ किलोग्राम प्रति माह तक सत्यापित किया है, जो जून के बाद की तीन किलोग्राम प्रति माह की दर से अधिक है और यह उत्पादन के पहले के स्तर पर वापसी को दर्शाता है।

## फिलिस्तीनियों के शवों को जब्त कर मेडिकल शोध कर रहा इजराइल

तेल अवीव ।इजराइली डिफेंस फोर्सेस (आईडीएफ) के चीफ लेफ्टिनेंट जनरल हेर्जी हालेवी ने कहा है कि गाजा में हमास के खिलाफ जंग कई महीने चलेगी।इस बीच एक रिपोर्ट के मुताबिक इजराइली सैनिक गाजा में मारे गए फिलिस्तीनियों के शव चुरा रही है।सैनिक इन शवों से किडनी, लिवर, दिल जैसे अंग भी चुरा रहे हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि इजराइली सेना ने 80 फिलिस्तीनियों के शव चुराकर -40 डिग्री सेल्सियस के तापमान में रखा ताकि उनके अंग निकाले जा सकें।ह्यूमन राइट मॉनिटर का कहना है कि 2021 तक इजराइल में एक ऐसा कानून पारित किया गया जो इजराइली सैनिकों को फिलिस्तीनियों के शवों को जब्त करने का अधिकार देता है।जिसके बाद से इन शवों और अंगों पर इजराइली मेडिकल स्कूल में एक्सपेरिमेंट होते हैं। इसके पहले इजराइली सेना पर फिलिस्तीनियों के शवों को बुलडोजर से कुचलने और गाजा के कब्रिस्तानों को टैंकों से तबाह करने के आरोप लगे हैं।

## न्यूयॉर्क में भारतीय वाणिज्य दूतावास में मनाया गया शहीदी दिवस

वॉशिंगटन । 26 दिसंबर को साहिबजादों-जोरावर सिंह और फतेह सिंह के शहीदी दिवस के रूप में मनाया जाता है, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे सरहिंद (पंजाब) में छह और नौ साल की उम्र में शहीद हो गए थे। न्यूयॉर्क में भारतीय वाणिज्य दूतावास ने वीर बाल दिवस के मौके पर गुरु गोबिंद सिंह के बेटों की वीरता को उजागर करने वाली एक प्रदर्शनी का आयोजन किया। जिस स्थान पर अंतिम सिख गुरु के पुत्रों को जिंदा दफनाया गया था वह वर्तमान फतेहगढ़ साहिब है। दूतावास की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया कि न्यूयॉर्क में भारत के महावाणिज्य दूतावास ने मंगलवार को वीर बाल दिवस के अवसर पर गुरु गोविंद सिंह के बेटों द्वारा किए गए असाधारण वीरता और अद्वितीय बलिदान को याद करने के लिए एक प्रदर्शनी आयोजित की। इस दौरान बहादुरों को श्रद्धांजलि दी गई।वीर साहिबजादे को श्रद्धांजलि देने के लिए आयोजित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में भारतीय-अमेरिकी समुदाय के सदस्य शामिल हुए।वाणिज्य दूतावास ने कहा कि एक स्थानीय गुरुद्वारे के पुजारी के अनुरोध पर 28 दिसंबर तक वाणिज्य दूतावास परिसर में कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम न्यूयॉर्क, न्यू जर्सी और कनेक्टिकट के गुरुद्वारों में भी आयोजित किया जाएगा। इससे पहले, न्यूयॉर्क में भारत के कार्यवाहक महावाणिज्य दूत डॉ. वरुण जेफ ने क्वींस में गुरुद्वारा बाबा माखन शाह लुबाना का दौरा किया और वीर साहिबजादे को श्रद्धांजलि अर्पित की।

इंडोनेशिया में आई भीषण बाढ़ के कारण कई घर डूब गये।

## रूस भारत के बीच बिजली उत्पादन पर हुआ समझौता

मॉस्को। भारत और रूस ने तमिलनाडु में कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा संयंत्र की भविष्य की बिजली उत्पादन इकाइयों के निर्माण से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर किए। भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर रूस के पांच दिवसीय दौरे पर हैं। इस दौरान उन्होंने कहा कि द्विपक्षीय आर्थिक सहयोग पर रूस के उप प्रधानमंत्री डेनिस मंतुरोव के साथ व्यापक और रचनात्मक बैठक के बाद यह ऐलान किया। इस बैठक के दौरान परमाणु ऊर्जा और औषधि, फार्मास्युटिकल पदार्थ और चिकित्सीय उपकरणों के समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने यहां भारतीय प्रवासी समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि मेरी और उप प्रधानमंत्री मंतुरोव की मौजूदगी में, हमने कुडनकुलम परमाणु परियोजना की भविष्य की इकाइयों से जुड़े कुछ बहुत महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर किए। रूस की सरकारी मीडिया के अनुसार, कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा संयंत्र रूस की तकनीकी सहायता से तमिलनाडु में बनाया जा रहा है। इसका निर्माण मार्च 2002 में शुरू हुआ था. फरवरी 2016 के बाद से कुडनकुलन परमाणु ऊर्जा संयंत्र की पहली ऊर्जा इकाई लगातार काम कर रही है, इसकी डिजाइन क्षमता 1,000 मेगावाट की है. संयंत्र के 2027 में पूरी क्षमता के साथ काम शुरू करने की उम्मीद है। बैठक के दौरान जयशंकर ने व्यापार, वित्त, कनेक्टिविटी, ऊर्जा, नागरिक उड्डयन और परमाणु क्षेत्रों में प्रगति का उल्लेख किया। भारतीय समुदाय को दिए संबोधन में उन्होंने रक्षा, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष जैसे कुछ क्षेत्रों में रूस को विशेष भागीदार बताया। उन्होंने कहा कि रक्षा, अंतरिक्ष और परमाणु (ऊर्जा) के क्षेत्रों में उन देशों के साथ सहयोग किया जाता है, जिनके साथ आपका उच्च स्तर का भरोसा है।

# अब अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच बढ़ा तनाव, एक दूसरे को दे रहे धमकी

**इस्लामाबाद (एजेंसी)।** अमन शांति इस धरती से गायब होती जा रही है। एक देश दूसरे देश से भिड़ने को उतावला है। यही कारण है कि अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच तनातनी की खबरें आने लगीं है। इसके पीछे का कारण एक आतंकी संगठन बना हुआ है। पाकिस्तान का कहना है कि आतंकी संगठन तहरीके तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) पाक शहरों में लगातार हमले कर रहा है। पाकिस्तान का कहना है कि टीटीपी को अफगानिस्तान में पनाह मिल रही है और अफगान सरकार उसे बैन करे। इसको लेकर पाक सरकार और सेना कई बार अफगानिस्तान की तालिबान सरकार को चेतावनी भी दे चुकी हैं। इस पर अफगानिस्तान ने अपनी प्रतिक्रिया में कहा है कि हम किसी की धमकी के आगे झुकते नहीं हैं। भले ही सोवियत संघ या फिर अमेरिका ही क्यों न हो।

पाकिस्तान की चेतावनियों पर अफगानिस्तान की सरकार में विदेश मंत्री आमिर खान मुत्ताकी ने करारा जवाब दिया है। मुत्ताकी ने कहा है कि सोवियंत संघ और अमेरिका के सामने भी अफगान जनता नहीं झुकी तो किसी और की धमकी से हम क्या डरेंगे। साथ ही उन्होंने कहा कि टीटीपी के साथ समझौते में पाक सरकार ही पीछे हटी थी, वो इसमें किसी और की गलती ना निकालें। रिपोर्ट के मुताबिक, अंतरिम अफगान विदेश मंत्री आमिर खान मुत्ताकी ने ईरान में पाकिस्तान के सीनेटर मुशाहिद हुसैन के साथ बातचीत के दौरान कहा कि पाकिस्तान और टीटीपी के बीच

अधिकांश मुद्दों को सुलझा लिया गया था लेकिन ऐन मौके पर इस्लामाबाद पीछे हट गया। मुत्ताकी ने ये भी कहा कि उनकी सरकार टीटीपी के मुद्दे पर पाकिस्तान के साथ सभी मुद्दों को सुलझाने की इच्छुक है, वो वार्ता से कभी पीछे नहीं हटे हैं।मुत्ताकी का कहना है कि पाकिस्तानी अधिकारियों और टीटीपी नेतृत्व के बीच कई बैठकों के बाद अधिकांश मुद्दों को सुलझा लिया गया। दोनों पक्ष अफगान तालिबान की मध्यस्थता में समझौता करने के करीब थे।

एकमात्र मुद्दा पूर्ववर्ती संघीय प्रशासित जनजातीय क्षेत्रों (फाटा) के विलय का बचा था। टीटीपी फाटा विलय को उलटना चाहता था लेकिन बातचीत से पाकिस्तान पीछे हटा और इसलिए गतिरोध बना हुआ है। पाकिस्तान ने इससे पहले टीटीपी पर बातचीत से हटने का आरोप लगाया था। मुत्ताकी ने पाक से दो टूक कहा कि दबाव डालने पर अफगानिस्तान अलग प्रतिक्रिया करता है। वह किसी की भी धमकी को नहीं मानता है। मुत्ताकी ने ये तक कह दिया कि आप दबाव डालतकर किसी अफगान को स्वर्ग जाने के लिए भी मजबूर नहीं कर सकते। अफगानिस्तान में सोवियत संघ और अमेरिका को मिली असफलता का भी इशारा अफगान मिनिस्टर ने किया। साथ ही उन्होंने पाक से कहा है कि घटनाओं पर बहुत अतिरंजित प्रतिक्रिया न करें, ये सीमा को बंद करने का बहाना बन जाती हैं। सीमा पार व्यापार और घटना-दुर्घटनाओं को अलग रखा जाना चाहिए। पाकिस्तान संयमित प्रतिक्रिया दे और हमारे सामने अपनी बात रखे तो हम उस पर सभी जरूरी कदम उठाएंगे।

## महादेव ऐप घोटाले के आरोपी सौरभ चंद्राकर को दुबई से लिया हिरासत में

**दुबई (एजेंसी)।** महादेव ऐप घोटाला मामले के मुख्य आरोपी सौरभ चंद्राकर को दुबई में हिरासत में लिया गया है। सूत्रों के मुताबिक, दुबई पुलिस ने सौरभ चंद्राकर को नजर बंद कर दिया है। दुबई में एक घर में उसे नजरबंद करके रखा गया है। सौरभ चंद्राकर के प्रत्यर्पण की प्रक्रिया जल्द शुरू की जाएगी। मुख्य आरोपी सौरभ के खिलाफ इंटरपोल ने एजेंसी (ईडी) की गुजारिश पर रेड कॉर्नर नोटिस जारी किया हुआ है। ईडी के मुताबिक, सौरभ चंद्राकर और एक अन्य प्रमोटर रवि उप्पल यूएई में एक सेंट्रलाइज्ड ऑफिस से महादेव सट्टेबाजी ऐप को ऑपरेट कर रहे थे। इसके साथ ही मनी लॉन्ड्रिंग और हवाला लेनदेन का काम भी किया जा रहा था।

जांच एजेंसी के मुताबित करीब 6000 करोड़ का यह घोटाला है। बता दें कि ईडी के अनुरोध पर इंटरपोल ने आरोपियों के खिलाफ रेड कॉर्नर नोटिस जारी किया था। ईडी ने महादेव ऐप को लेकर चौंकाने वाला खुलासा किया है। ईडी के मुताबिक, महादेव ऐप को ऑपरेट करने वाले सौरभ चंद्राकर और रवि उप्पल पाकिस्तान में डी-कंपनी का सहयोग कर रहे थे। जांच में ये भी खुलासा हुआ है कि डी कंपनी के इशारे पर सौरभ चंद्राकर ने ऐप को संचालित करने के लिए दाऊद इब्राहिम के भाई मुस्तकीम इब्राहिम कासकर के साथ साझेदारी की और इस ऐप को बनाया था। भारत सरकार ने महादेव बुक सहित 22 अवैध सट्टेबाजी ऐप्स और वेबसाइटों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की थी। सरकार ने इन सभी ऐप्स और वेबसाइटों को ब्लॉक कर दिया था। ईडी की तरफ से किए गए रिक्वेस्ट के बाद केंद्र सरकार की तरफ से यह कार्रवाई की गई थी। ईडी ने अपनी जांच में इन ऐप के संचालन को गैरकानूनी बताया था। बता दें कि महादेव ऐप से कुछ ही महीनों में देशभर से 12 लाख से ज्यादा लोग जुड़ गए थे। इसके जरिए क्रिकेट से लेकर चुनाव तक में सट्टा लगाने के लिए लोग इस ऐप का इस्तेमाल करने लगे थे। इस घोटाले में बॉलीवुड की बड़ी हस्तियों का नाम भी सामने आया था। कई लोगों को इसको लेकर समन भेजा गया था।

## किम जोंग उन ने साल के अंत में देश की उपलब्धियों की प्रशंसा की

**मास्को (एजेंसी)।** उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन ने वर्ष 2024 के लिए नीति लक्ष्य निर्धारित करने के वास्ते एक महत्वपूर्ण राजनीतिक बैठक की। इस दौरान उन्होंने वर्ष 2023 में राष्ट्रीय शक्ति को मजबूत करने और देश की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाली उपलब्धियों और सफलताओं की प्रशंसा की।

सरकारी मीडिया ने बुधवार को यह जानकारी दी। विशेषज्ञों ने कहा कि सत्तारूढ़ 'वर्कर्स पार्टी' की साल के अंत में होने वाली पूर्ण बैठक के दौरान उत्तर कोरिया संभवत: हथियारों के विकास में अपनी प्रगति का प्रचार करेगा, क्योंकि देश में लगातार अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों और महामारी से संबंधित आर्थिक कठिनाईयों के बीच आर्थिक उपलब्धियों का अभाव है।

कोरियाई सेंट्रल न्यूज एजेंसी (केसीएनए) के अनुसार, मंगलवार को बैठक की शुरुआत में किम ने वर्ष 2023 को ÷नाम और वास्तविकता दोनों में शानदार परिवर्तन और बदलाव का वर्ष बताया। केसीएनए ने कहा कि नवंबर में अपने पहले सैन्य जासूसी उपग्रह के प्रक्षेपण और अन्य परिष्कृत हथियारों की शुरूआत की बदौलत उत्तर कोरिया ने इस साल अपनी रक्षा क्षमताओं में तेजी से प्रगति की है।

केसीएनए ने कहा कि उत्तर कोरिया ने भी इस साल फसल के अच्छे उत्पादन की सूचना दी, क्योंकि देश ने समय से पहले नई सिंचाई सुविधाओं का निर्माण पूरा कर लिया। वर्कर्स पार्टी की बैठक कई दिनों तक चलने की उम्मीद है, जिसमें इस वर्ष की राज्य परियोजनाओं की समीक्षा की जाएगी और अगले वर्ष के लिए नए उद्देश्य स्थापित किए जाएंगे।

# आतंकी हाफिज सईद ने पाकिस्तान को दिखाया इस्लामिक स्टेट का सपना

### -चुनावी वादों का दौर शुरु, नई पार्टी से उतारा बेटे को मैदान में

**करांची (एजेंसी)।** पाकिस्तान में फरवरी 2024 के आम चुनाव में आतंकी हाफिज सईद ने भी अपनी पार्टी पाकिस्तान मरकजी मुस्लिम लीग (पीएमएमएल) के साथ अपने प्रत्याशी मैदान में उतार दिए हैं। उसने देशभर में प्रत्येक राष्ट्रीय और प्रांतीय विधानसभा क्षेत्रों में अपने उम्मीदवार खड़े किए हैं। बता दें कि हाफिज ने अपने बेटे तल्हा सईद को भी उम्मीदवार बनाया है। वो लाहौर से चुनाव लड़ रहा है।

इतना ही नहीं, हाफिज से जुड़ा संगठन पाकिस्तान की जनता को बरगलाने के लिए सियासी एजेंडा लेकर भी आया है। उसकी पार्टी चुनाव में इस्लामिक स्टेट का सपना दिखा रही है। हालांकि उसकी बातों और दावों पर भरोसा करने वाले कितने लोग हैं, ये चुनावी नतीजे के बाद साफ हो सकेगा। लेकिन, पाकिस्तान में बड़ी संख्या में पढ़े-लिखे युवा रोजगार चाहते हैं। बता दें कि हाफिज मोहम्मद सईद मुंबई में 26/11 आतंकी हमले का मास्टरमाइंड है। इस हमले में छह अमेरिकियों समेत 166 लोग मारे गए थे। उसे अमेरिका ने भी उसके संगठन को आतंकी घोषित कर रखा है। यूएस पर उस पर 1 करोड़ डॉलर का इनाम रखा है।

बता दें कि फिलहाल लश्कर-ए-तैयबा का संस्थापक हाफिज मोहम्मद सईद प्रतिबंधित जमात-उद-दावा के कुछ अन्य नेताओं के साथ 2019 से जेल में है। उसे आतंकी फंडिंग मामलों में दोषी ठहराया गया है। सईद के नेतृत्व वाला लश्कर-ए-तैयबा का फ्रंटल संगठन है, ये 2008 के मुंबई हमले को अंजाम देने के लिए जिम्मेदार है। बताया जा रहा है ?कि हाफिज का बेटा तल्हा सईद भी पाकिस्तान की राजनीति में उतरा है। वो लाहौर की एनए-127 सीट से चुनाव लड़ रहा है। पीएमएमएल का चुनाव चिह्न कुर्सी है। पार्टी द्वारा चुनावी सभाओं में कहा जा रहा है कि वो देश को एक इस्लामी कल्याणकारी राज्य बनाना चाहते हैं।

एक वीडियो संदेश में पीएमएमएल के अध्यक्ष खालिद मसूद सिंधु ने कहा, उनकी पार्टी अधिकांश राष्ट्रीय और प्रांतीय विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ रही है। उन्होंने कहा, हम भ्रष्टाचार के लिए नहीं, बल्कि लोगों की सेवा करने और पाकिस्तान को एक इस्लामिक कल्याणकारी राज्य बनाने के लिए सत्ता में आना चाहते हैं। बता दें कि सिंधु भी चुनावी मैदान में हैं। वो लाहौर की एनए-130 से कैंडिडेट हैं। वहां से पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज सुप्रीमो और पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ भी चुनाव लड़ रहे हैं।

# यूरो-मेडिटेरेनियन ह्यूमन राइट मॉनिटर के हवाले से अल मयादीन की रिपोर्ट में दावा

### -फिलिस्तीनियों के शवों से लिवर-किडनी चुरा रहा इजराइल

**तेल अवीव (एजेंसी)।** इजराइली सैनिक गाजा में मारे गए फिलिस्तीनियों के शव चुरा रहे हैं। सैनिक इन शवों से किडनी, लिवर, दिल जैसे अंग भी चुरा रहे हैं। यूरो-मेडिटेरेनियन ह्यूमन राइट मॉनिटर के हवाले से अल मयादीन की रिपोर्ट में यह दावा किया गया है। वहीं अरब मीडिया अल हदथ ने फुटेज शेयर किया है जिसमें इजराइली सैनिक गाजा के अल-शिफा अस्पताल से फिलिस्तीनियों के शव ले जाते हुए दिख रहे हैं। इजराइली डिफेंस फोर्सेस के चीफ लेफ्टिनेंट जनरल हेर्जी हालेवी ने कहा है कि गाजा में हमास के खिलाफ जंग कई महीने चलेगी।

इस बीच अल मयादीन की रिपोर्ट में कहा गया है कि इजराइली सेना ने 80 फिलिस्तीनियों के शव चुराकर -40 डिग्री सेलसियस के तापमान में रखा ताकि उनके अंग निकाले जा सकें। ह्यूमन राइट मॉनिटर ने दावा किया है कि इजराइल में फिलिस्तीनियों के शवों को जब्त करना लीगल है। ह्यूमन राइट मॉनिटर का कहना है कि 2021 तक इजराइल में एक ऐसा कानून पारित किया गया जो इजराइली सैनिकों को फिलिस्तीनियों के शवों को जब्त करने का अधिकार देता है। जिसके बाद से इन शवों और अंगों पर इजराइली मेडिकल स्कूल में एक्सपेरिमेंट होते हैं। इसके पहले इजराइली सेना पर फिलिस्तीनियों के शवों को बुलडोजर से कुचलने और गाजा के कब्रिस्तानों को टैंकों से तबाह करने के आरोप लगे हैं।

हमास से जंग कई महीने चलेगी

इजराइली डिफेंस फोर्सेस के चीफ लेफ्टिनेंट जनरल हेर्जी हालेवी के मुताबिक, सेंट्रल और साउथ गाजा में इजराइली डिफेंस फोर्सेस हमास के खात्मे के काफी करीब है और उत्तरी गाजा में अब ऑपरेशन तेज किया गया है। एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में इजराइली डिफेंस फोर्सेस चीफ ने कहा- मैं फिर साफ कर देना चाहता हूं कि यह जंग कई महीने चलेगी। मैं अभी गाजा से लौटा हूं। वहां मैंने हमारे सैनिकों से मुलाकात की। जिस तरह से हमारै सैनिक जंग लड़ रहे हैं, उसकी मुझे बहुत खुशी है। उनके लिए जो टारगेट सेट किए गए हैं, वो उन्हें हासिल कर रहे हैं। इजराइली डिफेंस फोर्सेस नॉर्थ गाजा में भी हमास का खात्मा करेगी। हालेवी ने आगे कहा- हमने हमास के कई आतंकी और कमांडर मार गिराए हैं। कुछ ऐसे भी जिन्होंने सरेंडर कर दिया है। इसके अलावा सैकड़ों लोगों को हिरासत में भी लिया गया है। हमारी स्पेशल यूनिट ने गाजा में

अंडरग्राउंड इंफ्रास्ट्रक्चर और हथियार तबाह कर दिए हैं।

भारत-दक्षिण अफ्रीका पहला टेस्ट

# साउथ अफ्रीका के खिलाफ भारतीय टीम 245 रनों पर सिमटी, केएल राहुल ने खेली शतकीय पारी

**सेंचुरियन (एजेंसी)।** भारत ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले क्रिकेट टेस्ट के दूसरे दिन बुधवार को सेंचुरियन में पहली पारी में 245 रन बनाए। भारत की ओर से लोकेश राहुल ने सर्वाधिक 101 रन बनाए जबकि विराट कोहली ने 38 रन की पारी खेली। दक्षिण अफ्रीका की तरफ से कागिसो रबादा ने पांच जबकि नांद्रे बर्गर ने तीन विकेट चटकाए।

दरअसल, बारिश के कारण मैच देर से शुरु हुआ। इसके साथ ही दूसरे दिन भारत ने आठ विकेट पर 208 रनों से आगे खेला शुरू किया। केएल राहुल और मोहम्मद सिराज ने स्कोर 238 रनों तक पहुंचाया। सिराज पांच रन बनाकर आउट हुए और फिर केएल राहुल ने छक्के के साथ अपना शतक पूरा किया। केएल राहुल की ये पारी इतिहास के पन्नों में सुनहरे अक्षरों में दर्ज होगी, क्योंकि उन्होंने जिस तरह से दबाव में ये पारी खेली है वो वाकई काबिले तारीफ है। केएल राहुल 101 रन बनाकर नांद्रे बर्गर का शिकार बने और भारतीय टीम इस तरह से 245 रनों पर ऑलआउट हो गई। बता दें कि, टीम इंडिया की शुरुआत अच्छी नहीं रही थी। पहले ही घंटे में उसके टॉप 3 बल्लेबाज पवेलियन लौट गए थे। रोहित शर्मा 5, यशस्वी जायसवाल 17 और शुबमन गिल 2 रन बनाकर आउट हो गए। जिसके बाद भारत ने महज 24 रन पर 11.1 ओवर में 3 विकेट गंवा दिए थे। नांद्रे बर्गर ने 5 ओवर में 23 रन देकर 2 विकेट झटके। मार्को यानसेन और गेराल्ड कोएत्जी को विकेट नहीं मिला। साउथ अफ्रीका ने पहले सत्र में 4 गेंदबाजों का इस्तेमाल किया। प्रसिद्ध कृष्णा ने भारत के लिए टेस्ट क्रिकेट में अपना डेब्यू किया।

## इस कारण दक्षिण अफ्रीका में अब तक सीरीज नहीं जीत पायी है भारतीय टीम: बांगर

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व बल्लेबाजी कोच संजय बांगर ने भारतीय टीम के अभी तक दक्षिण अफ्रीका में टेस्ट सीरीज नहीं जीत पाने का कारण बताया है। बांगर के अनुसार भारतीय टीम ने अब तक यहां कई बड़ी क्रिकेट सीरीज नहीं खेली है। ऐसे में टीम को हालाते के अनुसार ढ़लने का अवसर नहीं मिला है। इसके साथ ही वह दक्षिण अफ्रीका में हालातों के अनुसार अपने खेल को बेहतर तरीके से नहीं ढाल पायी है। इस पूर्व बल्लेबाज ने कहा, 'भारत ने दक्षिण अफ्रीका में टेस्ट सीरीज नहीं जीती है क्योंकि वे 2 या 3 मैचों की टेस्ट सीरीज खेलते हैं। वहीं अगर उन्हें चार या पांच मैचों की टेस्ट सीरीज मिलती है तो परिणाम कुछ ओर रहा होता।

इस खिलाड़ी के अनुसार जब तक भारतीय खिलाड़ी दक्षिण अफ्रीकी विकेट और वहां के माहौल के अनुरूप खेल को ढालते हैं तब तक छोटी सीरीज समाप्त हो जाती थी। ऐसी स्थिति में भारतीय टीम का प्रदर्शन पूरी तरह से उभरकर सामने नहीं आ पाता था।

इस बार भी भारतीय टीम दो टेस्ट मैचों की सीरीज ही खेल रही है। हालांकि इस बार भारतीय टीम का तेज गेंदबाजी आक्रमण अच्छा है। जिसका उसे लाभ मिलेगा। वैसे भी दक्षिण अफ्रीका में तेज गेंदबाज ही अधिक चलते हैं। दक्षिण अफ्रीकी धरती पर टीम इंडिया ने अब तक 23 टेस्ट मैच खेले हैं जिसमें से सिर्फ चार में उसे जीत मिली है जबकि 12 मैच मेजबान दक्षिण अफ्रीका ने जीते हैं जबकि सात ड्रॉ रहे हैं। भारतीय टीम के अब तक दक्षिण अफ्रीका से उसके मैदान पर टेस्ट सीरीज न जीतने का कारण बल्लेबाजी और गेंदबाजी दोनों का एक साथ बेहतर प्रदर्शन न कर पाना भी एक कारण है।

## राहुल ने शानदार पारी खेली: गावस्कर

### -कठिन हालातों में दिखाया कौशल : इरफान पठान

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान ,सुनील गावस्कर और ऑलराउंडर इरफान पठान ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ शानदार बल्लेबाजी के लिए भारतीय क्रिकेट टीम के विकेटकीपर बल्लेबाज के एल राहुल की जमकर प्रशंसा की है। राहुल ने यहां खेले जा रहे पहले क्रिकेट टेस्ट मैच में विकेट के पतझड़ के बीच ही एक छोर संभाले रखा। उन्होंने बारिश की बाधा के बीच ही पहले क्रिकेट टेस्ट मैच के पहले दिन नाबाद 70 रन बनाए। गावस्कर ने कहा कि पारी किसी शतक से कम नहीं कही जा सकती। गावस्कर ने कहा, राहुल की पारी की पारी किसी अर्धशतक से कम नहीं कही जा सकती है। दूसरे दिन उसको उसको एक भी रन बनाने को मिलेगा या नहीं, यह इस पर निर्भर करता है कि निचले क्रम के बल्लेबाज उनके साथ कैसी बल्लेबाजी करते हैं। भले ही उसे आगे रन नहीं मिलें पर मेरे लिए यही रन एक शतक जितने अच्छे हैं। राहुल की पारी से ही भारतीय टीम ने पहले दिन 200 रनों से अधिक बनाये।

वहीं पठान ने कहा, शानदार लॉफ्टेड ड्राइव, मैदान पर शानदार शॉट, जबरदस्त पुल, बेहतरीन लीव्स, मजबूत डिफेंस। राहुल की इस पारी में यह सब कुछ है। कठिन हालातों में कौशल का अभूतपूर्व प्रदर्शन। गौरतलब है कि राहुल करियर में पहली बार टेस्ट क्रिकेट में बतौर विकेटकीपर बल्लेबाज मध्य क्रम में खेल रहे हैं। उन्होंने काफी समय तक टेस्ट में पारी की शुरुआत की है, लेकिन अब नई जिम्मेदारी उनको मिली है। इस मैच में मजबान टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया था जो सही साबित हुआ और भारतीय बल्लेबाज अफ्रीकी गेंदबाजों के सामने टिक नहीं पाये। राहुल की पारी से ही भारतीय टीम पहले दिन 200 रनों तक पहुंच पायी।

## बांग्लादेश ने रचा इतिहास, पहले टी20 मुकाबले में न्यूजीलैंड को हराया

**नेपियर (एजेंसी)।** सलामी बल्लेबाज लिटन दास की नाबाद 42 रन की धैर्य पूर्ण पारी की मदद से बांग्लादेश ने पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में बुधवार को यहां न्यूजीलैंड को पांच विकेट से हराया।

बांग्लादेश में शनिवार को तीसरे वनडे मैच में न्यूजीलैंड को 98 रन पर आउट करके इस देश में सीमित ओवरों की क्रिकेट में अपनी पहली जीत दर्ज की थी। इसके चार दिन बाद बांग्लादेश ने पहली नौ गेंद के अंदर तीन विकेट हासिल किये और न्यूजीलैंड को 9 विकेट पर 134 रन पर रोक दिया। न्यूजीलैंड की तरफ से जिमी नीशाम ने सर्वाधिक 48 रन बनाए जबकि कप्तान मिशेल सेंटनर ने 23 रन का योगदान दिया। बांग्लादेश की तरफ से शोरिफुल इस्लाम ने तीन जबकि मुस्तफिजुर रहमान और मेहदी हसन ने दो-दो विकेट लिए। इसके जवाब में बांग्लादेश ने 18.4 ओवर में पांच विकेट पर 137 रन बनाकर जीत दर्ज की और तीन मैच की श्रृंखला में 1-0 से बढ़त बनाई। लिटन दास ने 36 गेंद की अपनी पारी में दो चौके और एक छक्का लगाया। अंतिम ओवरों में मेहदी हसन ने नाबाद 19 रन बनाकर उनका अच्छा साथ दिया।

### रबाडा 500 विकेट लेने वाले गेंदबाज बने

सेंचुरियन। दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेट टीम के तेज़ गेंदबाज़ कगीसो रबाडा ने भारतीय क्रिकेट टीम के खिलाफ पहले क्रिकेट टेस्ट मैच के पहले दिन अपने 500 विकेट पूरे किये। रबाडा ने पहले दिन भारतीय टीम के खिलाफ पांच विकेट लेकर अपने 500 विकेट का आंकड़ा पूरा किया। रबाडा ने मुकाबले के पहले ही दिन विराट कोहली और रोहित शर्मा जैसे प्रमुख बल्लेबाज़ों के विकेट लिए। रबाडा अपनी तेजी और सटीक लाइन लेंथ के लिए जाने जाते हैं। 2014 में अतर्राष्ट्रीय डेब्यू करने वाले रबाडा ने अब तीनों प्रारुपों में प्रभावित किया है। इस तेज गेंदबाज ने अब तक अपने करियर में 60 टेस्ट, 101 एकदिवसीय और 56 टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले खेले हैं। टेस्ट की 108 पारियों में गेंदबजी करते हुए उन्होंने 22.34 की औसत से 280 विकेट लिए हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन सात विकेट पर 112 रन रहा है। इसके अलावा एकदिवसीय की 99 पारियों में उन्होंने 27.77 की औसत से 157 विकेट लिए हैं। उनका एकदिवसीय में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 16 रन देकर छह विकेट रहा है। टी20 अंतरराष्ट्रीय की 56 पारियों में इस अफ्रीकी तेज़ गेंदबाज़ ने 29.87 की औसत से 58 विकेट लिए हैं, जिसमें 20 रन देकर तीन विकेट उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा है। इसके अलावा बल्लेबाजी करते हुए उन्होंने टेस्ट की 93 पारियों में 897, एकदिवसीय की 42 पारियों में 360 और टी20 की 21 पारियों में 147 रन बनाए हैं।

## ब्रिस्बेन इंटरनेशनल से प्रतिस्पर्धी टेनिस में वापसी करेंगे नडाल और ओसाका

ब्रिस्बेन। विश्व के पूर्व नंबर एक खिलाड़ी राफेल नडाल और नाओमी ओसाका रविवार से यहां शुरू होने वाले ब्रिस्बेन इंटरनेशनल टूर्नामेंट से प्रतिस्पर्धी टेनिस में वापसी करेंगे। ऑस्ट्रेलिया और अमेरिकी ओपन की पूर्व चैंपियन ओसाका मां बनने के बाद खेल में वापसी करेंगी और उन्होंने बुधवार को यहां अभ्यास सत्र में भाग लेकर तैयारी भी शुरू कर दी। ओसाका पिछले साल ऑस्ट्रेलियाई ओपन से हट गई थी और बाद में उन्होंने खुलासा किया था कि वह गर्भवती थी। नडाल भी चोट से उबरने के बाद वापसी करने के लिए तैयार हैं। उन्हें ब्रिस्बेन में विंबलडन फाइनलिस्ट माटेओ बेरेटिनी और 2020 के अमेरिकी ओपन चैंपियन डोमिनिक थिएम की कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ेगा। विश्व में आठवें नंबर के खिलाड़ी होल्गर रून इस टूर्नामेंट में भाग लेने वाले सर्वाधिक रैंकिंग के खिलाड़ी हैं। अमेरिका के बेन शेल्टन और तीन बार के ग्रैंड स्लैम एकल चैंपियन एंडी मर्रे भी इस टूर्नामेंट में भाग लेंगे। महिला वर्ग के एकल में ओसाका के अलावा मौजूदा ऑस्ट्रेलियाईओपन चैंपियन आर्यना सबालेंका, एलेना रयबाकिना, येलेना ओस्टापेंको, विक्टोरिया अजारेंका, सोफिया केनिन और सलोन स्टीफंस इस प्रतियोगिता में अपना भाग्य आजमाएंगे।

## पांड्या अफगानिस्तान के खिलाफ शायद ही खेल पायें, आईपीएल खेलना तय

मुम्बई। भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या अफगानिस्तान के खिलाफ सीरीज में शायद ही खेल पायें। पांड्या अभी तक अपने टखने की चोट से नहीं उबर पाये है। ऐसे में अफगानिस्तान के खिलाफ टी20 सीरीज तक उनका फिट होना संभव नजर नहीं आता है हालांकि उनके इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) तक फिट होने की पूरी संभावनएं हैं। ऐसे में पांड्या आईपीएल में मुम्बई इंडियंस की कप्तानी करते हुए दिखेंगे। पांड्या को विश्वकप में बांग्लादेश के खिलाफ लीग चरण के मैच में चोट के कारण बाहर होना पड़ा था। इसी कारण वह ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच मैचों की टी20आई श्रृंखला से भी बाहर रहे। इसके अलावा वह दक्षिण अफ्रीका दौरे के दौरान तीन मैचों की टी20आई और एकदिवसीय सीरीज से भी बाहर है। दक्षिण अफ्रीका में सूर्यकुमार यादव ने सभी टी20आई मैचों में भारत का नेतृत्व किया जबकि केएल राहुल ने एकदिवसीय टीम की कप्तानी की थी। अफगानिस्तान के खिलाफ तीन मैचों की टी-20 सीरीज भारत का अंतिम अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट होगा। इस साल मुंबई इंडियंस ने ट्रेड करार के जरिये गुजरात टाइटंस से लिया था। साल 2022 में इस ऑलराउंडर की कप्तानी में गुजरात ने खिताब जीता था। पांड्या के पास अब एमआई के नए कप्तान के रूप में बड़ी जिम्मेदारी है क्योंकि टीम का प्रदर्शन पिछली बार अच्छा नहीं रहा था। उन्हें रोहित शर्मा की जगह कप्तानी दी गयी है।पांड्या ने 2015-2021 तक मुम्बई की ओर से 92 मैच भी खेले थे।

## ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे रिकॉर्ड में सुधार करने उतरेगी भारतीय महिला टीम

**मुम्बई (एजेंसी)।** लगातार दो टेस्ट मैच में जीत से उत्साहित भारतीय महिला टीम ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ गुरुवार से शुरू होने वाली तीन एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैचों की सीरीज में अपने इस प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ रिकॉर्ड में सुधार करने की कोशिश करेगी। भारतीय टीम इस समय शानदार फॉर्म में चल रही है। उसने इंग्लैंड को रिकॉर्ड 347 रन से हराने के बाद वानखेड़े स्टेडियम में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेले गए टेस्ट मैच में 8 विकेट से जीत दर्ज की थी।

वनडे सीरीज के सभी मैच वानखेड़े स्टेडियम में खेले जाएंगे। भारत आगामी मैचों में अपना विजय अभियान जारी रखने को लेकर प्रतिबद्ध है लेकिन हरमनप्रीत कौर की अगुवाई वाली टीम इस बात से अच्छी तरह वाकिफ होगी कि ऑस्ट्रेलिया को हराना आसान नहीं होगा, जिसका 50 ओवर के प्रारूप में शुरू से दबदबा रहा है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेले गए 50 वनडे मैचों में भारत केवल 10 मैच में जीत दर्ज कर पाया है जबकि 40 मैच में उसे हार का सामना करना पड़ा। घरेलू मैदानों पर भारत का रिकॉर्ड अधिक खराब है। भारत ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अपनी धरती पर जो 21 वनडे मैच खेले हैं उनमें से उसने केवल चार मैच जीते हैं, जबकि 17 मैच में उसे हार का सामना करना पड़ा। भारत ने फरवरी 2007 से लेकर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अपनी धरती पर जो सात मैच खेले हैं उन सभी में उसे हार झेलनी पड़ी। भारत ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वानखेड़े स्टेडियम में पिछले दो वनडे मैच मार्च 2012 में खेले थे, जिनमें उसे 221 रन और 5 विकेट से करारी हार का सामना करना पड़ा था।

इस सीरीज का पहला मैच अहमदाबाद में खेला गया था जिसमें आस्ट्रेलिया ने 30 रन से जीत दर्ज की थी। लेकिन अब भारत के पास हरमनप्रीत के रूप में नई कप्तान और अमोल मजूमदार के रूप में नया कोच है। भारतीय टीम के पास यह 2025 में होने वाले वनडे विश्व कप की तैयारियों की शुरुआत करने और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अपने रिकॉर्ड में सुधार करने का मौका है। भारत ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होने वाली इस श्रृंखला के लिए अपनी टीम में श्रेयंका पाटिल, सैका इसाक, मन्नत कश्यप और टिटास साधु के रूप में नए चेहरे शामिल किए हैं। भारत की तरफ से इस साल तीन वनडे मैच में जेमिमा रोड्रिग्स ने सर्वाधिक 129 रन बनाए हैं वहीं ऑस्ट्रेलिया की तरफ से बाएं हाथ की सलामी बल्लेबाज बेथ मूनी ने 11 मैचों में एक शतक और दो अर्द्धशतक के साथ 387 रन बनाए हैं।

## तीन भारतीय स्पिन ऑलराउंडरों को महान गेंदबाज मानते हैं ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी

मेलबर्न । ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम भी भारतीय टीम के तीन स्पिन गेंदबाजी ऑलराउंडरों रविचंद्रन अश्विन, रवींद्र जड़ेजा और अक्षर पटेल को महान मानते हैं। ये तीनों की खिलाड़ी गेंदबाजी के साथ ही बल्लेबाजी में भी पीछे नहीं हैं। इससे इन तीनों ने ही स्पिन-गेंदबाजी ऑलराउंडरों की एक विशेष सूची में जगह बनायी है। इसी बीच ऑस्ट्रेलिया के ड्रेसिंग रूम की एक तस्वीर वायरल हुई है जिससे पता चलता है कि ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी भी इन भारतीय स्पिन ऑलराउंडरों को महत्व देते हैं। सोशल मीडिया पर आई एक तस्वीर में ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज स्टीव स्मिथ एक व्हाइटबोर्ड के सामने खड़े दिख रहे हैं जिसपर कुछ नाम लिखे हुए हैं। इसमें हैडलाइन थी। इतिहास के महानतम स्पिन ऑलराउंडर। इस सूची में डेनियल विटोरी, सर गारफील्ड सोबर्स, रवींद्र जडेजा, शाकिब अल हसन, रविचंद्रन अश्विन, ट्रैविस हेड, रिची बेनॉड, समित पटेल और अक्षर पटेल का नाम था। गौरतलब है कि कि टेस्ट ऑलराउंडरों की आईसीसी रैंकिंग में भारत के जडेजा और अश्विन पहले और दूसरे नंबर पर हैं। वहीं बांग्लादेश के शाकिब अल हसन तीसरे जबकि इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स चौथे स्थान पर हैं। 5वें स्थान पर भारत के अक्षर हैं। अक्षर स्पिन गेंदबाज होने के साथ ही एक आक्रामक बल्लेबाज भी हैं। इसके अलावा वह किसी भी क्रम पर खेल सकते हैं।

## भारतीय ओलंपिक संघ ने डब्ल्यूएफआई के लिए 3 सदस्यीय समिति गठित की, भूपेंद्र सिंह बाजवा होंगे अध्यक्ष

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** पेरिस में अगले साल होने वाले ओलंपिक के मद्देनजर भारतीय ओलंपिक संघ ने भारतीय कुश्ती महासंघ को चलाने के लिए तीन सदस्य समिति का गठन किया है। पेरिस ओलंपिक 26 जुलाई 2024 से 11 अगस्त 2024 तक होंगे। भूपेंद्र सिंह बाजवा को समिति का अध्यक्ष बनाया गया है जबकि एमएम सोमाया और मंजूषा कंवर को सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया है। इनका काम डब्ल्यूएफआई के विभिन्न कार्यों और गतिविधियों की देखरेख करना रहेगा जिसमें खिलाड़ियों का चयन, अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों के लिए खिलाड़ियों के नाम भेजना, खेल आयोजनों का आयोजन, पर्यवेक्षण और बैंक खातों का प्रबंधन शामिल है। इससे पहले खेल मंत्रालय ने गत रविवार को भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) को अगले आदेश तक निलंबित कर दिया क्योंकि नवनिर्वाचित संस्था ने पहलवानों को तैयारी के लिए पर्याप्त समय दिए बिना अंडर-15 और अंडर-20 राष्ट्रीय चैंपियनशिप के आयोजन की 'जल्दबाजी में घोषणा' की थी।

गौर हो कि डब्ल्यूएफआई के चुनाव 21 दिसंबर को हुए थे जिसमें पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह के विश्वासपात्र संजय सिंह और उनके पैनल ने बड़े अंतर से जीत दर्ज की थी। इसके बाद पहलवानों ने आपत्ति जताई थी। साक्षी मलिक ने संन्यास ले लिया जबकि बजरंग पूनिया और विनेश फोगाट ने क्रमश पद्मश्री तथा खेल रत्न, अर्जुन अवॉर्ड लौटाने की घोषणा की। खेल मंत्रालय के एक अधिकारी ने बताया, 'नए निकाय ने डब्ल्यूएफआई संविधान का पालन नहीं किया। हमने महासंघ को बर्खास्त नहीं किया है बल्कि अगले आदेश तक निलंबित किया है। उन्हें बस उचित प्रक्रिया और नियमों का पालन करने की जरूरत है।' सूत्र ने निलंबन के कारणों के बारे में बताते हुए कहा, 'डब्ल्यूएफआई के नवनिर्वाचित अध्यक्ष संजय कुमार सिंह ने 21 दिसंबर 2023 को अध्यक्ष चुने जाने के दिन ही घोषणा की कि कुश्ती के लिए अंडर-15 और अंडर-20 राष्ट्रीय चैंपियनशिप साल खत्म होने से पहले ही उत्तर प्रदेश के गोंडा के नंदिनी नगर में होगी।' उन्होंने कहा, 'यह घोषणा जल्दबाजी में की गई है। उन पहलवानों को पर्याप्त सूचना दिए बिना जिन्हें उक्त राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेना है। डब्ल्यूएफआई के संविधान के प्रावधानों का पालन भी नहीं किया गया।'

## लियोन आने वाले समय में भी खेलेंगे : टेलर

मेलबर्न । ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान मार्क टेलर का मानना है कि अनुभवी ऑफ स्पिनर नाथन लियोन की फिटनेस काफी अच्छी है और वह 40 साल की उम्र में भी टेस्ट क्रिकेट खेल सकते हैं। उन्होंने कहा कि अगर आने वाले समय में भी वह खेलते नजर आते हैं तो किसी को भी हैरानी नहीं होनी चाहिये। लियोन ने अब तक 500 से अधिक टेस्ट विकेट लिए हैं और वह ये उपलब्धि हासिल करने वाले तीसरे ऑस्ट्रेलियाई और कुल मिलाकर आठवें गेंदबाज हैं। लियोन ने इससे पहले कहा थ कि वह इंग्लैंड में साल 2027 एशेज सीरीज तक टीम में बने रहना चाहते हैं हालांकि तब तक वह 39 वर्ष के हो जाएंगे। टेलर ने कहा, मुझे आगे भी उनके खेलने पर कोई हैरत नहीं होगी क्योंकि वह अभी भी खेलने को लेकर बहुत उत्साहित है और मैंने हाल ही में उससे बात की थी। अगर वह अभी भी खेल का आनंद ले रहा है और विकेट ले रहा है तो अगर वह 40 के करीब पहुंच जाता है तो उसके खेलने में कुछ गलत नहीं है। मुझे नहीं लगता कि उसे जल्दबाजी में इसे छोड़ देना चाहिये। 123 मैचों में 501 विकेट के साथ लियोन अभी सबसे अधिक टेस्ट विकेट लेने की सूची में मुथैया मुरलीधरन 800, शेन वार्न 708, जेम्स एंडरसन 690, अनिल कुंबले 619, स्टुअर्ट ब्रॉड 604, ग्लेन मैकग्राथ 563, और कर्टनी वॉल्श 519 के बाद आठवें स्थान पर है। टेस्ट क्रिकेट में एक गेंदबाज के रूप में लियोन के स्थान को लेकर उन्होंने कहा, मुझे इतिहास के बारे में बातें कहना पसंद नहीं है क्योंकि यह अब बहुत अलग है। आज के लोग और यहां तक कि मेरे युग के लोग, हमने बहुत सारे खेल खेले हैं। यदि आप इतिहास में नंबर दो कहते हैं, तो इसका मतलब है कि आप ऐसे लोगों के बारे में भूल रहे हैं।

# टेस्ट क्रिकेट में अबतक प्रभावित नहीं कर पाये हैं शुभमन

**सेंचुरियन (एजेंसी)।** भारतीय टीम के युवा बल्लेबाज शुभमन गिल एक बार फिर टेस्ट प्रारुप में संघर्ष करते दिखे हैं। एकदिवसीय में जहां शुभमन ने इस साल शानदार प्रदर्शन कर कई रिकार्ड बनाये हैं। वहीं वह टेस्ट प्रारुप में प्रभावित नहीं कर पाये हैं। यहां दक्षिण अफ्रीक के खिलाफ पहले टेस्ट मैच की पहली पारी में शुभमन केवल 2 रन ही बना पाये। उन्होंने 12 गेंदों पर 2 रन रन बनाए। अपनी पारी के दौरान वह सहज नहीं दिखे। वह तेज गेंदबाजों की उछल वाली गेंदों को खेल नहीं पा रहे थे। इस साल वेस्टइंडीज दौरे पर शुभमन ने अपना बल्लेबाजी क्रम भी सलामी बल्लेबाज से बदलवाकर तीसरे नंबर पर किया था। इसके बाद भी उनकी बल्लेबाजी बेहतर नहीं हो पायी।

इस युवा बल्लेबाज के टेस्ट क्रिकेट के प्रदर्शन पर नजर डाली जाए तो वह कहीं से भी बेहतर नहीं कजा जा सकता। इस युवा ने टेस्ट क्रिकेट में अंतिम बार शतक ऑस्ट्रेलिया के खि?लाफ अहमदाबाद में लगाया था। उसके बाद से ही वह 13, 18, 6, 10, 29 और अब 2 रन बनाकर पेवेलियन लौटे हैं।

वहीं टीम प्रबंधन को उनसे बड़ी पारीयों की उम्मीद थी। इस युवा बल्लेबाज ने अब तक 18 मैचों में 32.20 के औसत और 2 शतक 4 अर्धशतक से अबतक कुल 966 रन बनाए हैं।

शुभमन के बल्लेबाजी आंकड़ों पर नजर डाले तो वह एकदिवसीय के ही बल्लेबाज बनकर रह गये हैं। उन्होंने अब तक 44 एकदिवसीय में 6 शतक और 61.37 के औसत और 103.46 के स्ट्राइक रेट से 2271 रन बनाए हैं। शुभमन ने एकदिवसीय विश्वकप 2023 में 9 मैचों में 44.25 के औसत और 106.94 के स्ट्राइक रेट से 354 रन बनाए हैं। वहीं इस युवा ने अब तक अब तक 13 टी20 अंतरराष्ट्रीय में 26.00 के औसत और 145.11 के स्ट्राइक रेट से 312 रन बनाए हैं, इसमें एक शतक शामिल है। इससे साफ है कि वह टेस्ट के अलावा टी20 में भी अपने प्रदर्शन से प्रभावित नहीं कर पाये हैं।

# ओटीटी प्रोजेक्ट शो टाइम को लेकर उत्साहित हैं इमरान हाशमी

करण जौहर की नई सीरीज 'शो टाइम' हिंदी फिल्म जगत का काला चिट्ठा खोलने जा रही है। इस सीरीज में वंशवाद से लेकर भाई भतीजावाद के चलते निशाने पर रहने वाली हिंदी फिल्म इंडस्ट्री की कुछ रोचक व दिलचस्प कहानियां दिखाई जाएंगी। वेब सीरीज बार्ड ऑफ ब्लड के बाद अभिनेता इमरान हाशमी का ओटीटी प्लेटफार्म पर यह दूसरा प्रोजेक्ट होगा। इस शो को लेकर इमरान हाशमी काफी उत्साहित हैं। डिज्नी प्लस हॉटस्टार की नई सीरीज शो टाइम में अभिनेता इमरान हाशमी एक प्रभावशाली फिल्म निर्माता की भूमिका निभा रहे हैं। यह एक ऐसा शो है जिसमे बॉलीवुड के मूवर्स और शेकर्स की कहानियों और उनके गेम के टॉप पर बने रहने के उनके स्ट्रगल को दिखाया गया है। इमरान हाशमी नेपोटिज्म पर कटाक्ष करते हुए कहते हैं, एवरी आउटसाइडर वॉन्ट्स टू बी एन इनसाइडर। अभिनेता इमरान हाशमी ने इंडस्ट्री में बहुत लंबा वक्त बिताया है। वह कहते हैं, मैंने इंडस्ट्री में अच्छे और बुरे दोनों पहलू देखे हैं, इसलिए जब यह शो मेरे पास आया, तो मैंने इसे स्वीकार कर लिया। इसका हिस्सा बनने का अवसर और विभिन्न स्तरों पर इसके पहलुओं के साथ खुद को जोड़ सकता है, इसलिए शो के लिए हामी भरी। हमने हमेशा दर्शकों को बॉलीवुड के बंद दरवाजों के पीछे क्या चल रहा है, इसके बारे में अधिक जानने के लिए उत्सुक देखा है। बॉलीवुड के बंद दरवाजों के पीछे क्या चल रहा है, इसे जानने के लिए सभी लोग उत्सुक रहे हैं। इस शो के माध्यम से बॉलीवुड के पीछे की रंग बिरंगी दुनिया के अलावा बॉलीवुड के पर्दे के पीछे की उन कहानियों पर भी प्रकाश डाला जाएगा। बॉलीवुड में अक्सर नेपोटिज्म की चर्चा होती रहती हैं, जिसके बारे में आम जनता जानती हैं, लेकिन इसके अलावा बॉलीवुड की रंग बिरंगी दुनिया में और क्या क्या होता हैं, इस सीरीज के माध्यम से दर्शक जान सकेंगे। मिहिर देसाई और अर्चित कुमार के निर्देशन में बन रही इस सीरीज में इमरान के अलावा महिमा मकवाना, मौनी रॉय, राजीव खंडेलवाल, श्रिया सरन और विजय राज की मुख्य भूमिकाएं हैं।

## स्कैम 1992 के प्रतीक गांधी को ऑडिशन के बाद कहा- तुम्हें हम अमीर नहीं दिखा सकते, क्योंकि तुम ऐसे दिखते नहीं

ओटीटी पर स्कैम 1992 के जरिए अपनी अदाकारी का सिक्का जामने वाले प्रतीक गांधी आज ओटीटी के अच्छे कलाकारों में गिने जाते हैं। वह इन दिनों चर्चा में हैं अपनी नई वेब सीरीज की होस्टिंग को लेकर। उन्होंने अपने इसी शो को लेकर हमसे कुछ खास बातचीत की है, आइए जानें क्या कुछ कहा है –

**प्रतीक आप एंटरटेनमेंट जगत में हैंडसम हीरो के बजाय अनकन्वेंशनल लुक के साथ आए तो इंडस्ट्री में रोल्स पाने के लिए आपको मशक्कत करनी पड़ी?**

ये हीरो वाला टर्म है, ना, ये बहुत विचित्र टर्म है। हीरो हर किसी की नजर में अलग-अलग हो सकता है। हीरो की कोई परिभाषा है ही नहीं। बचपन में जब मैं थिएटर किया करता था तो मेरे लिए ये मायने नहीं रखता था कि मैं कैसा दिखता हूं? मैं कैसा लगता हूं? मेरे लिए इस बात की अहमियत होती थी कि मैं कैसा किरदार बनाता हूं। लोग मेरे जरिए उस किरदार तक पहुंच पाते हैं या नहीं? हालांकि ऐसा भी हुआ है कि बहुत पहले जब मैंने एक ऑडिशन दिया तो वे बोले, तुम्हें हम अमीर नहीं दिखा सकते, क्योंकि तुम्हारे लुक के कारण तुम अमीर नहीं लगते। मैं सोच में पड़ गया कि इस पर कैसे काम किया जाए। अगर कोई कहे कि मुझे अपने डायलॉग डिलीवरी पर या क्राफ्ट पर काम करना है तो मैं करूंगा, मगर अमीर लगने पर कैसे काम करूं। मगर हां, हुआ है, मेरे साथ ऐसा।

**आज आपके पास अच्छा-खासा काम है, मगर आपके करियर का सबसे कठिन दौर कौन-सा था?**

सबसे मुश्किल दौर तो वही था, जब मैं कॉर्पोरेट जॉब के साथ-साथ थिएटर भी किया करता था। उस समय मेरे ऑफिस का वो प्रोजेक्ट और प्लांट बहुत बड़ा था, वहां भी मेरी जरूरत थी। तभी मुझे अपनी पहली फिल्म मिली और मेरा प्ले भी ओपन होने वाला था। मुंबई में हमारे पास घर था ही नहीं और हम घर ढूंढ रहे थे। उन हालात में मैं सुबह साढ़े पांच बजे प्ले की रिहर्सल भी कर रहा था और जॉब में भी लगा हुआ था। उस वक्त सभी ने मुझसे यही कहा कि ये सब एक्टिंग-वेक्टिंग बंद करके चुपचाप जॉब करो और घर का मामला सेटल करो। मगर तब मुझ पर जाने कौन-सी धुन सवार थी कि मैंने अभिनय नहीं छोड़ा। डेढ़-दो साल का वो जो दौर था, उसी के कारण आज यहां पहुंच पाया।

**आपके करियर में सबसे बड़ा प्राउड मोमेंट क्या था?**

प्राउड मोमेंट भी आए हैं कुछ। स्कैम के बाद जब मुझे पहला फिल्मफेयर अवॉर्ड मिला, तो मेरा अवॉर्ड मम्मी लेने गई थीं। शूटिंग के कारण मैं अवॉर्ड लेने जा नहीं पाया था। उस वक्त उनकी आंखों की खुशी मेरे लिए सबसे बड़ा पुरस्कार था। वैसे मैंने मुंबई में अपना घर ले लिया है, तो वो भी मेरे लिए गर्व की बात है।

**आप हंसल मेहता की सीरीज में महात्मा गांधी की भूमिका भी निभाने जा रहे हैं?**

ये मेरे जीवन का अब तक का सबसे बड़ा किरदार होगा। मेरे लिए ये बहुत बड़ी बात है। मैं इस चरित्र को लेकर बहुत उत्साहित हूं। मैं थिएटर में उनकी भूमिका को अदा कर चुका हूं और मेरा मानना है कि वे भी पहले एक आम आदमी थे, मगर आजादी को लेकर लड़ी गई उनकी लड़ाई और विचारों ने उन्हें महान बना दिया।

**आप अपने शो क्राइम्स आज कल सीजन 2 के जरिए लोगों को अपराध के खिलाफ जागरूक करने का प्रयास कर रहे हैं, क्या कभी आप असल जिंदगी में किसी अपराध का शिकार हुए हैं?**

हां, कई बार मैं जुर्म का शिकार हुआ हूं। हम लोग मुंबई में घर ढूंढ रहे थे। उस दिन मेरे साथ मम्मी, पापा, भाई और पत्नी भी थी। हम लोग रास्ते में थे, तभी हमारी गाड़ी के बीच में नशे में धुत एक आदमी आ गया। पहले तो मैं घबरा गया कि कहीं वो शख्स मेरी गाड़ी से टकरा तो नहीं गया। जैसे ही मैंने कार का विंडो ग्लास नीचे किया, उसने मेरा गला पकड़ लिया और चिल्लाने लगा। उसकी देखादेखी में भीड़ इकट्ठा हो गई और वो भी चिल्लाने लगी। वो लोग बात सुनने को ही राजी नहीं थे। फिर उसका भाई आया और उसने कहा, जाने दीजिए, ये नशे में है। ये घटना ऐसी थी कि पल में कुछ भी हो सकता था। एक दूसरी घटना में मैं लोकल ट्रेन से ऑफिस जा रहा था। भीड़ काफी थी, सीट को लेकर हुई कहासुनी में एक आदमी उठा और उसने मुझे कस के थप्पड़ जड़ दिया। मैं तो स्तब्ध होकर बर्फ की तरह जम गया था। उसके साथ रोजाना सफर करने वाले 10-12 लोग थे। उस वक्त मैं भी गुस्से में आ जाता तो बात बढ़ सकती थी। मुझे लगता है छोटे स्वरूप में हो या बड़े, अपराध का शिकार कभी न कभी हम सभी होते हैं।

**इस तरह के शोज पर ये आरोप लगते रहे हैं कि असुरक्षा फैलाने के साथ-साथ ये अपराधियों को जुर्म करने का रास्ता देते हैं, इस पर आपका मत?**

मैं तो यही कहूंगा कि इस तरह के शोज से आपको पता चल जाता है कि कौन, कहां किस तरह से बिहेव कर रहा है? उसकी मंशा क्या है? वो अपराधी कहां तक पहुंच सकता है। मेरे हिसाब से ऐसे शोज लोगों को चौकन्ना करने का काम करते हैं। इनके जरिए आप आस-पास के समाज की सच्चाई से वाकिफ हो पाते हैं। कई विडियोज ये भी दर्शाते हैं कि फलां चीजें खाने से ये नुकसान है, तो लोग खाना तो बंद नहीं करते ना? वो तो एहतियात बरतते हैं। मैं मानता हूं कि इस तरह की सीरीज को देखने के बाद लोग क्राइम से डरने लगते हैं, मगर लोगों को इसकी भयावहता से वाकिफ कराना भी जरूरी है।

## सारा अली खान लंदन में मां-पापा के साथ इंजॉय कर रहीं छुट्टियां

**सारा अली खान लंदन में हॉलीडे इंजॉय करती नजर आई हैं। सारा किसी और के साथ नहीं बल्कि अपने पापा और मां के साथ अपना ये वकेशन इंजॉय कर रही हैं। सारा ने सैफ और अली खान और मां अमृता के साथ अपनी तस्वीरें शेयर की हैं और बताया है कि इस मौके पर वह किन्हें सबसे ज्यादा मिस कर रही हैं।**

### मां और पापा संग लंदन में दिखीं सारा अली खान

सारा अली खान इस वक्त लंदन में अपना हॉलीडे मना रही हैं। सारा अपनी मां अमृता सिंह और पापा सैफ अली खान के साथ क्रिसमस का लुत्फ उठाती दिखी हैं। हालांकि, इन तस्वीरों में उनके भाई इब्राहिम अली खान उनके साथ नजर नहीं आ रहे हैं और ऐसा लग रहा है कि वह उन्हें मिस कर रही हैं। सारा ने अपने लंदन वकेशन वाली तस्वीरें सोशल मीडिया पर शेयर की हैं। मां अमृता सिंह और पापा सैफ अली खान के साथ सारा ने तस्वीरें शेयर की हैं। इसी के साथ सारा ने अपने भाई को मिस करने की भी बात कही है। मां और पापा के साथ अपनी तस्वीरें शेयर कर सारा ने लिखा है- इस मैरी क्रिसमस के लिए धन्यवाद सांता। इब्राहिम, काश तुम पेकन पाई खाने के लिए, जश्न मनाने और क्रिसमस सेलिब्रेट करने के लिए यहां होते। सारा अली खान ने तस्वीरें शेयर कर बताया है कि वो अपनी मां और पापा दोनों के साथ लंदन में हैं। हालांकि, किसी भी तस्वीर में सैफ और अमृता एकसाथ नजर नहीं आ रहे हैं। सैफ और अमृता की शादी साल 1991 में हुई थी। अमृता और सैफ की शादी के करीब 4 साल बाद 1995 में सारा अली खान का और 2001 में इब्राहिम अली खान का जन्म हुआ। धीरे-धीरे सैफ और अमृता के बीच झगड़े बढ़ने लगे और वे फाइनली 2004 में अलग हो गए। इसके बाद उन्होंने करीना से शादी रचा ली।

### सारा की आने वाली फिल्में

सारा की अपकमिंग फिल्मों में कन्नन अय्यर निर्देशित बायोपिक ऐ वतन मेरे वतन है जिसमें वह स्वतंत्रता सेनानी उषा मेहता के किरदार में होंगी। इसके अलावा उनके पास अनुराग बसु की फिल्म और होमी अदजानिया की मर्डर मुबारक भी हैं। इन सबके अलावा जगन शक्ति की अनटाइटल्ड एक्शन फिल्म में वह टाइगर श्रॉफ के साथ नजर आएंगी।

## एनिमल की एडिटिंग में हुई थी गलती, ओटीटी वर्जन में कर रहा हूँ सुधार

संदीप रेड्डी वांगा की एनिमल के खूब चर्चे हैं। फिल्म को लेकर जितना बवाल हुआ, उतने ही बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड भी टूटे। रिलीज के 20 दिन बाद निर्देशक ने चुप्पी तोड़ी और सभी विवादों का जवाब दिया। अब फिल्म ओटीटी प्लेटफॉर्म पर धमाकेदार एंट्री मारने के लिए तैयार है। इस ग्रैंड रिलीज से पहले संदीप ने फिल्म की कुछ डिटेलिंग को लेकर बात की। निर्देशक ने एडमिट किया कि फिल्म में उनसे कुछ चूक हुई थी, जिसे वो ओटीटी पर रिलीज करने से सुधार लेंगे। फिल्म में थी गलती संदीप ने कोमल नाहटा से बातचीत में बताया कि थियेट्रीकल वर्जन में साउंड, कॉस्ट्यूम, मेकअप को लेकर कुछ गलतियां थीं। संदीप ने कहा- मुझे नहीं पता ये कैसे हुआ। दरअसल, फिल्म पांच भाषाओं में रिलीज हुई है, तो शायद मैं ट्रैक से भटक गया कि किस भाषा का मैंने चेन्नई में बैठकर चेक कर रहा था। पिछले 20 दिन बहुत भयानक थे। हम 3-4 दिन तक मिक्सिंग रूम में ही सोए थे। मुझे एक हफ्ता और रुकना चाहिए था। ओटीटी पर रिलीज करने से पहले इस मिस्टेक्स को करेक्ट करने को लेकर संदीप ने कहा- मैं उन वर्जन को एडिट कर रहा था, क्योंकि 1-2 शॉट्स में कुछ समस्याएं थीं। मैं अब एक ही टेक से अलग और कुछ और शॉट्स का यूज कर रहा हूं। एक बात जो मुझे लगी कि मुझे 3 घंटे 21 मिनट के बजाय 3 घंटे 30 मिनट छोड़ देना चाहिए था। मुझे नहीं पता कि मैंने उन 8-9 मिनटों को क्यों एडिट किया। अब, मैं उन 5-6 मिनट का इस ओटीटी वर्जन में यूज करूंगा। इससे पहले बॉबी देओल भी रिवील कर चुके हैं कि फिल्म में उनका और रणबीर का एक किसिंग सीन था। लेकिन फाइनल एडिट से पहले संदीप ने उन्हें कट कर दिया था।

## रोनित रॉय ने शादी की 20वीं सालगिरह पर दुबारा लिए सात फेरे

दिग्गज एक्टर रोनित रॉय ने शादी की 20वीं सालगिरह पर पत्नी नीलम के साथ दोबारा शादी की है। उन्होंने गोवा के मंदिर में फिर से सात फेरे लिए और शादी की सभी रस्मों को निभाया। एक्टर ने इस दोबारा शादी के वीडियोज भी शेयर किए हैं, जिसमें वो पत्नी को होंठों पर किस करते हुए नजर आ रहे हैं। टीवी और फिल्मों के मशहूर एक्टर रोनित रॉय ने अपनी शादी के सात वचनों को दोबारा स्वीकार किया है। पत्नी नीलम सिंह के साथ शादी की 20वीं सालगिरह पर एक्टर ने दोबारा सात फेरे लिए हैं। कपल ने इस खास मौके पर गोवा के एक मंदिर में फिर से एक-दूसरे को वरमाला डाली, अग्नि के सात फेरे लिए और एक-दूसरे का साथ निभाने की कसमें खाईं। इस मौके पर एक्टर का 16 साल का बेटा अगस्त्य भी मौजूद था। रोनित रॉय और नीलम दोनों ने इंस्टाग्राम पर इस बेहद खास पल के वीडियोज शेयर किए हैं, जिसमें दोनों एक-दूजे को होंठों पर किस करते हुए भी नजर आ रहे हैं। टीवी के मिस्टर बजाज रोनित रॉय हिंदी के साथ ही बंगाली फिल्मों के भी मशहूर एक्टर हैं। उन्होंने ने तमिल और तेलुगू फिल्मों में भी काम किया है। रोनित ने जो वीडियोज शेयर किए हैं, उनमें वह और नीलम शादी की रस्मों में हिस्सा लेते नजर आ रहे हैं। इसमें बंगाली शादी की रीति शुभो दृष्टि भी शामिल है। रोनित ने ऐसे तीन वीडियोज शेयर किए हैं। इनमें से एक में उन्होंने कैप्शन लिखा है, मुझसे शादी करोगी फिर से दूसरे वीडियो के साथ एक्टर ने कैप्शन लिखा है, हमारी प्रतिज्ञाओं को फिर से नया करना- भाग 2, जबकि तीसरे वीडियो को शेयर करते हुए उन्होंने लिखा है, दूसरी बार तो क्या, हजारों बार ब्याह तुझी से करूंगा! मेरी प्यार, तुम्हें शादी की 20वीं सालगिरह बहुत मुबारक हो।

## मेगास्टार चिरंजीवी ने बांधे प्रभास की तारीफों के पुल

साउथ सुपरस्टार प्रभास इन दिनों अपनी एक्शन थ्रिलर फिल्म सलार को लेकर हर तरफ सुर्खियां बटोर रहे हैं। बॉक्स ऑफिस पर सलार की भिड़ंत शाहरुख खान की फिल्म डंकी से हुई है। प्रभास अभिनीत फिल्म की दर्शकों से लेकर फिल्मी सितारों तक तारीफ कर रहे हैं। वहीं, अब मेगास्टार चिरंजीवी ने प्रभास और सलार की टीम को बधाई देने के लिए सोशल मीडिया का सहारा लिया है। चिरंजीवी ने एक्स पर नोट लिख सलार के कलाकारों और निर्देशक की तारीफ की।

### मेगास्टार ने की प्रभास की तारीफ

चिरंजीवी ने की प्रभास की तारीफ करते हुए लिखा, हार्दिक बधाई मेरे प्रिय देवा स्टार प्रभास। सलार-पार्ट वन- सीजफायर ने बॉक्स ऑफिस पर आग लगा दी है। मेगास्टार ने सलार के निर्देशक प्रशांत नील को बधाई देते हुए कहा कि आप फिल्म निर्माण में महान हैं। चिरंजीवी ने वरदराजा मन्नार, श्रुति हासन और कार्था के अभिनय की भी तारीफ की और सलार की सफलता के लिए पूरी टीम को शुभकामनाएं दी। सलार की बात करें, तो इस फिल्म में प्रभास और पृथ्वीराज सुकुमारन के अलावा श्रुति हसन, जगपति बाबू, ईश्वरी राव, श्रिया रेड्डी, रामचंद्रन राजू और ब्रह्मा भी मुख्य भूमिकाओं में हैं। फिल्म की कहानी प्रशांत नील के साथ संदीप रेड्डी बांदला, हनुमान चौधरी और डॉ. सूरी ने मिलकर लिखी है। इसके निर्माता विजय किरगंदूर हैं। बता दें कि प्रशांत नील निर्देशित सलार-पार्ट वन - सीजफायर ने बॉक्स ऑफिस पर ऐतिहासिक शुरुआत की। सलार ने शाहरुख की डंकी, जवान और पठान के पहले दिन के कलेक्शन को पछाड़ नया रिकॉर्ड बनाया है। सलार की सफलता के बाद निर्माताओं ने इसके दूसरे पार्ट की भी घोषणा कर दी गई है। फिल्म के दूसरे भाग का एक पोस्ट-क्रेडिट सीन वायरल हो रहा है। बता दें कि वायरल वीडियो के आखिर में स्क्रीन पर 'सलार-पार्ट 2 शौर्यांग पर्वम' लिखा आता है।